SRI PRATAP COLLEGE,
SRINAGAR.
LIBRARY
Class No. 891.433
Book No. B22D
Accession No. 19463

धरती के देवता

(Dharti Kae Devta)

Novel

लेखक

ओले रोल्वॉंग

अनुवादक

आर० एस० भारद्वाज

— [redacted] Rolwang.

T. by

R. S. Bardaj.

Pages 136.

एस० चन्द एण्ड कम्पनी

दिल्ली — जालन्धर — लखनऊ

Price Rs. 1.50 NP.

एस० चन्द एण्ड कम्पनी

आसफ़ अली रोड — नई दिल्ली
फव्वारा — दिल्ली
लाल बाग — लखनऊ
माई हीरां गेट — जालन्धर

19463

B 22

"Copyright 1927 by Harper & Brothers Copyright renewed 1945 by Jennie Marle Berdahl Rolvaag."

मूल्य १·५०

श्यामलाल गुप्ता, एस० चन्द एण्ड कम्पनी, फव्वारा दिल्ली द्वारा प्रकाशित एवं सुपर प्रेस, पहाड़गंज, नई दिल्ली में मुद्रित

भाग एक

: १ :

दिन ढल चुका था। मैदान में उगी घास में से कुछ गाड़ियाँ एक छोटी सी पंक्ति में, धीमी गति से चली जा रही थीं। गाड़ियों के आगे-आगे चौड़े कंधों वाला एक हृष्ट-पुष्ट व्यक्ति चला जा रहा था। उससे कुछ कदम पीछे उसका नौ वर्ष का बालक चल रहा था।

उन दोनों के पीछे बैलों की जोड़ी एक बहुत पुरानी और टूटी-फूटी सी गाड़ी को खींचते हुए धीरे-धीरे बढ़ रही थी। गाड़ी का लकड़ी का ढाँचा ऊपर से कम्बलों से ढका हुआ था और उसमें घर की बहुत-सी वस्तुएं, औजार और कपड़े भरे पड़े थे। उसके पीछे एक छोटी सी गाड़ी और भी थी जिसमें भोजन-सामग्री तथा अन्य घरेलू वस्तुएं भरी हुई थीं। चलती गाड़ियों के लकड़ी के पहियों से बहुत शोर हो रहा था। पीछे-पीछे एक गाय जा रही थी, जो कभी-कभी थोड़ा घास खाने के लिए रुक जाती थी। थोड़ी ही देर बाद वे सांझ के भोजन के लिए इस गाय को दुहने वाले थे।

पहली गाड़ी के अगले भाग में लकड़ी का एक टुकड़ा लगा हुआ था। इसके एक ओर एक स्त्री बैठी बैलों को हाँक रही थी और एक नन्ही लड़की उस पर झुकी हुई सो रही थी। उसके दूसरी ओर लगभग सात वर्ष का एक नन्हा बालक बैठा जिज्ञासा-भरी दृष्टि से सामने की ओर देख रहा था।

यह परहंसा का परिवार था। उसके बड़े लड़के का नाम ओल था। बैरेट उसकी पत्नी थी। नन्ही लड़की एना मेरी थी और छोटे लड़के का नाम था हंस। वे अपना सभी कुछ साथ लिये मिनी

सोटा से डकोटा प्रदेश की ग्रोर जा रहे थे जहाँ परहंसा एक नया फार्म ग्रौर घर बनाना चाहता था। उसका विचार था कि उस नये प्रदेश में उसे ग्राश्चर्यजनक काम के बहुत सुग्रवसर प्राप्त होंगे।

उस विस्तृत मैदान में निरन्तर एक सीध में ग्रौर धीमी गति से बढ़ी चली जा रही वे गाड़ियाँ बहुत छोटी प्रतीत होती थीं। उन्हें चलते हुए लगभग चार सप्ताह हो गये थे। कुछ दिन हुए, परहंसा रास्ता भूल गया था ग्रौर ग्रभी तक उसे मार्ग का पता न लगा था। वे फिर भी बढ़े जा रहे थे किन्तु उन्हें पता न था कि वे कहाँ जा रहे हैं। उसे रास्ता पाने के लिए 'स्प्लिट राक क्रीक' नामक खाई पर पहुँचना था, किन्तु ग्रभी तक उसे वह खाई न मिली थी। उसे तो वहाँ दो-तीन दिन पहले पहुँच जाना चाहिए था। यह सोच कर उसे चिन्ता हो रही थी।

परहंसा बहुत देर तक चुपचाप चलता रहा ग्रौर फिर ग्रोल से बोला, "तुम पीछे जाग्रो ग्रौर ग्रब कुछ देर गाड़ी हाँको। ग्रपनी माँ से कुछ बातचीत भी करते रहना, ताकि वह ग्रकेलापन ग्रनुभव न करे।"

ग्रोल नहीं चाहता था कि उसे पिता के साथ-साथ चलने से रोका जाय, किन्तु उसे विवश लौटना पड़ा। "क्या तुम समझते हो कि ग्राज रात हम उनसे जा मिलेंगे ?" उसने पिता से पूछा।

"नहीं, वे हम से बहुत पहले चले थे। किन्तु यदि तुम्हें कुछ विशेष बात दिखाई दे तो मुझे बताना।" वह ग्रकेला चलता रहा।

ग्रोल गाड़ी में चढ़कर बैठ गया। "क्या तुम्हें कुछ दिखाई दिया है ?" उसकी माँ ने घबराये हुए पूछा।

"ग्रभी नहीं।" ग्रोल ने नम्र भाव से कहा।

"मुझे तो डर है कि हम उन्हें दोबारा मिल ही न सकेंगे।"—उसने मन ही मन कहा।

नन्हें हंस की समझ में न ग्राया कि उसकी माँ इतनी भयभीत

क्यों है। उसे अपने पिता पर विश्वास था और उसके पिता ने कहा था कि वह ठीक रास्ते पर जा रहे हैं। वह भागता हुआ अपने पिता के पास चला गया और उसका हाथ पकड़कर चलने लगा।

माँ बहुत थक गई थी और वह एना को गोद में लिये पीछे की ओर झुककर बैठ गई। ओल बैलों को अपनी माँ की अपेक्षा अधिक तेज हाँक रहा था और घास के समतल मैदान को ध्यानपूर्वक देख रहा था। उन्होंने देखा कि सामने कुछ-कुछ चढ़ाई आरम्भ हो गई है और परहंसा उस ऊँची भूमि की ओर मुड़ा, यद्यपि वह बिलकुल सामने नहीं थी। सूर्य डूब रहा था। अकस्मात् संध्या का धुंधलापन छा गया। आकाश में अन्धकार गहन होता चला गया, जिससे वह निर्जन भूमि सुनसान और दुःखभरी प्रतीत होने लगी। ओल के लिए यह दृश्य बहुत सुन्दर था। वह बहुत देर तक उन बादलों की टुकड़ी की ओर देखता रहा जो उस मैदान पर झुकी हुई थी।

माँ चुपके-चुपके रो रही थी। एना अब भी उसकी गोद में थी। उसे थकावट अनुभव हो रही थी। उसने पति को पुकारा, "सुनो, क्या अब शीघ्र ही हमें रुकना है ?"

"हाँ, शीघ्र ही !" उसने बिना रुके ही उत्तर दिया।

ओल ने देखा कि उसकी माँ रो रही है किन्तु उसने माँ को पता न लगने दिया कि उसने उसे देख लिया है। उसने अपनी दृष्टि सामने रखी। "पिता जी !" उसने पुकारा, "मुझे उधर एक जंगल दिखाई दे रहा है।"

"आखिर आ ही गया, हंस और मैं इसे बहुत देर से देखते आये हैं। अब हम उसी ओर जा रहे हैं। निश्चय ही यह सही रास्ता है।"

"क्या अन्य लोग इसी मार्ग से आये हैं ?" हंस ने पूछा।

"निस्संदेह वे इसी मार्ग से आये होंगे।" पिता ने उत्तर दिया।

"क्या यहाँ कुछ और लोग भी रहते हैं ?"

"नहीं", उसका पिता बोला, "यहाँ और कोई नहीं रहता।"

आखिर परहंसा रुक गया। वे स्वयं और उनके पशु भी थक चुके थे। यहाँ पहुँचने से पहले वृक्षों का जो झुंड मार्ग में आया था, वहाँ से उन्होंने लकड़ियाँ चुन ली थीं। नन्हा हंस उन लकड़ियों को ले आया। ओल ने लोहे की तीन सलाखें जमीन में गाड़कर अँगीठी बनाई और यह पता कर लिया कि उनके पास पानी काफी है। उसके पिता ने बैलों को खोला और उनकी देखभाल की। उसने गाय को दुहा और उसे भी खोल दिया। फिर उसने परिवार के सोने के लिए गाड़ी के नीचे बिस्तर लगाया। बैरेट भी नन्ही लड़की की देखभाल कर रही थी, जो घास में चलने का प्रयत्न करती हुई बार-बार गिर पड़ती थी। वह प्रसन्न स्वभाव की नन्ही बालिका गिर पड़ने पर भी निरन्तर हँसती रहती थी।

आखिर संध्या का भोजन तैयार हो गया और पिता तथा दो लड़कों के लिए एक बड़े प्याले और माँ तथा नन्ही लड़की के लिए एक छोटे प्याले में उसे परोस दिया गया। उनके पास भोजन के साथ पीने के लिए पर्याप्त दूध नहीं था, क्योंकि गाय रास्ता चलने के कारण थक गई थी और उसे पेट भर घास चरने के लिए समय भी नहीं मिला था। परहंसा ने स्वयं पानी पिया, ताकि बच्चों को अधिक दूध मिल जाए। वह बोला, मुझे दूध का स्वाद अच्छा नहीं लग रहा। उसने खाना भी सबसे कम खाया।

वे सब बिलकुल चुप थे। उन बड़े-बड़े मैदानों के मध्य में वे इतने छोटे प्रतीत होते थे कि खाना खा चुकने के पश्चात् भी उन्हें कोई बात न सूझी। तत्पश्चात् नन्ही लड़की बोली—"हमारे स्रष्टा, भगवान् का धन्यवाद······" इतना कह कर वह माँ की गोद में सो गई। अन्य सभी मौन थे और उदित हुए चाँद की ओर देख रहे थे। चन्द्रमा उन्हें बहुत बड़ा और चमकदार प्रतीत हुआ और उनका

हृदय उल्लास से भर गया। वे सब गाड़ी के नीचे की ओर सरक गये जहाँ रात भर सोने के लिए उनका विस्तर लगा हुआ था। जब माँ ने सोचा कि बच्चे सो गए हैं, तो उसने अपने पति से पूछा, "क्या तुम समझते हो कि हम अन्य लोगों से जा मिलेंगे ?"

"अवश्य ! मुझे तो पूर्ण विश्वास है," परहंसा ने कहा। फिर उसने पत्नी की ओर पीठ मोड़ ली और आँखें बन्द कर लीं। तब उसकी पत्नी भी शान्त हो गई।

: २ :

किन्तु परहंसा वास्तव में थका हुआ नहीं था। उसकी आँखों में नींद नहीं थी और वह लेटे-लेटे सोच रहा था कि उसकी पत्नी की इच्छा थी कि अब वे किसी और जगह न जाएं। निश्चय ही वह समझदार स्त्री है। उसे चिन्ता हुई कि कहीं उसकी बात सच न निकले। उनके प्रस्थान के शीघ्र ही बाद जब उसकी बड़ी गाड़ी टूट गई थी, तभी से वह चिन्तित था। गाड़ी की मरम्मत कराने के लिए उसे पीछे रुकना पड़ा था, किन्तु उसने उन लोगों को आगे जाने दिया था और कह दिया था कि मैं तुमसे आ मिलूंगा। उन सब के पास नई गाड़ियाँ थीं और वे बहुत तेजी से जा रहे थे।

अब वह रास्ता भूल गया था। यदि वह ठीक मार्ग पर जा रहा होता तो उसे अन्य लोगों के चिह्न तो दिखाई देते। आगे जाने वाले लोगों में थे, उसका पुराना मित्र हंस ओलसा तथा उसकी पत्नी, टानसेटन तथा उसकी पत्नी केर्स्टी और सोलम-परिवार के लड़के जो अमरीका में ही पैदा हुए थे और अमरीका के बारे में उससे अधिक जानते थे। वह क्यों उनके बिना चला आया ? उसे मिनीसोटा में ठहरना चाहिए था। यह सोचते हुए उसे बहुत दुःख हुआ और अभी तक उसे नींद नहीं आई थी। वह सो न सका था।

रात अधिक हो गई। बच्चे तथा माँ भी चुपचाप सो रहे थे। धीरे-धीरे परहंसा उन से परे हटा तथा उसने कपड़े पहने। फिर

वह रात्रि के निर्जन अन्धकार में चला गया। उसने ध्रुव नक्षत्र को देखकर अपना मार्ग निश्चित किया और शीघ्रता से बढ़ता हुआ उस ऊँची भूमि की चोटी पर चढ़ गया जहाँ उन्हें एक जंगल दिखाई दिया था। वह घास खाते हुए बैलों और गाय के पास से गुजरा और निरन्तर चलता हुआ आखिर जंगल में पहुँच गया। जब वह वहाँ पहुँचा तो उसे अपनी गाड़ियाँ दिखाई नहीं दे रही थीं। अतः उसने पुनः ध्रुव नक्षत्र की ओर देखा ताकि उसे लौटने के लिए मार्ग का पता लग जाए। वह लगभग चार मील का मार्ग तय कर चुका था।

वह चारों ओर ध्यानपूर्वक देखता हुआ तथा हर आवाज़ को ध्यान से सुनने का प्रयत्न करता हुआ जंगल में एक सिरे से दूसरे सिरे तक चला गया। किन्तु बहुत देर तक उसे कुछ भी न मिला। आखिर वह एक खुली जगह पर पहुँच गया जहाँ भूमि को समतल तथा साफ किया हुआ था। तभी उसने देखा कि वहां कुछ ही दिन पूर्व की बनी हुई अँगीठी थी। राख की गंध अभी तक ताजी थी। यह देखकर उसे इतनी प्रसन्नता हुई कि प्रायः चिल्ला उठा। उसे पता लग गया कि उसके मित्र इसी मार्ग से गए हैं।

अब उसने प्रातः का समय बचाने के लिए स्प्लिट राक क्रीक की तलाश शुरू की और वह खाई उसे शीघ्र ही मिल गई। जिस जगह से उन्होंने नाला पार किया था और जिसके बारे में उन्होंने परहंसा को बता रखा था, वह जगह भी उसे मिल गई। फिर उसे नाले के किनारे पर एक ऐसी चीज मिली जिससे वह और भी अधिक चकित हो गया। उसने झुककर उसे उठा लिया और मन ही मन कहा, "निश्चय ही यह टुकड़ा मांस के उन सूखे टुकड़ों में से है जो हंस ओसला के पास थे। उस भले आदमी ने यह टुकड़ा हमारे लिए ही छोड़ दिया होगा ताकि उसके पीछे आने पर हमें यह मिल जाये।"

अपनी गाड़ियों की ओर लौटते हुए परहंसा को कुछ समय

लग गया। इन सब बातों से वह बहुत ही प्रसन्न था। उसे आशा बँध गई कि अब यह गाड़ी उसे अवश्य लक्ष्य-स्थल पर पहुँचा देगी, क्योंकि अब दूरी बहुत अधिक नहीं होगी। किन्तु जब वह शिविर के पास पहुँचा तो किसी को बैठा हुआ देखकर पुनः चिंताग्रस्त हो गया।

"बैरेट, तुम आधी रात के समय यहाँ बाहर बैठी क्या कर रही हो?" उसे जागते हुए देख कर वह घबरा गया था।

"तुम्हारे चले जाने के बाद मैं वहाँ लेटी नहीं रह सकी"—वह बहुत धीमी आवाज में बोली और परहंसा जान गया कि वह बहुत देर से रो रही है। उसका दिल भर आया। किन्तु, उसने अपने आपको संयत रखा। अपने मन पर काबू रखते हुए उसने पूछा—"प्रिये, क्या तुम जाग रही थीं? तुम्हें नींद अवश्य लेनी चाहिए।"

"यह जानते हुए कि तुम चिंतित हो और मुझे कुछ नहीं बताते, मैं कैसे सो सकती हूँ? मैं तो समझती हूँ कि हम रास्ता भूल गये हैं।" इतना कह वह पुनः रोने लग गयी और परहंसा का सहारा लेकर झुक गई। उसकी सिसकियों का तांता बँध गया।

परहंसा कुछ कहना चाहता था, किन्तु थोड़ी देर तो वह बोल ही न सका। आखिर वह बोला, "शान्त हो जाओ बैरेट! देखो न, मुझे मांस के उन सूखे टुकड़ों में से एक मिला है जो हंस ओसला के पास थे।"

भाग दो

: १ :

हंस ग्रोसला उस विस्तृत मैदान में एक छोटी सी नदी के निकट पहाड़ी की एक ग्रोर घास-फूंस मिली मिट्टी का घर बना रहा था। मकान ग्राधा बन चुका था ग्रौर शेष मकान के लिए उसने मिट्टी खोद कर ढेर बना रखे थे। यद्यपि वह भारी-भरकम ग्रादमी था, किन्तु स्वभाव से ही वह काम बहुत शीघ्र करता था। किन्तु ग्राज वह बहुत धीरे काम कर रहा था ग्रौर कभी-कभी काम सर्वथा बन्द करके दृष्टि उठा कर निर्जन मैदान में दूर-दूर तक देखता हुग्रा कुछ ढूंढ़ता था किन्तु उसे कुछ दिखाई न दिया। उसने इस ग्रोर कई बार देखा। फिर इस प्रकार व्यर्थ बिताये समय की हानि को पूरा करने के लिए उसने तेजी से काम करना ग्रारम्भ कर दिया।

घर की दूसरी ग्रोर एक तम्बू लगा हुग्रा था ग्रौर उसके पास एक बैलगाड़ी खड़ी थी। जमीन पर एक स्टोव, कुछ कुर्सियां तथा फर्नीचर की ग्रन्य साधारण वस्तुएँ पड़ी थीं। एक दयालु तथा प्रसन्न स्वभाव वाली स्त्री खाना पका रही थी ग्रौर कोई गीत गुनगुना रही थी। उसकी लड़की सोफी, जो दस वर्ष की थी, काम-काज में उसका हाथ बंटा रही थी।

इस परिवार के घर से थोड़ी ही दूर दूसरी पहाड़ी की ढलान पर एक ग्रौर झोंपड़ा तैयार हो चुका था ग्रौर उसकी चिमनी में से धुग्राँ निकल रहा था। वह मकान सेवर्ट टानसेटन का था। उत्तर में बड़ी पहाड़ी के पीछे दो ग्रौर झोंपड़े थे जो ग्रभी पूरे नहीं बने थे। दोनों 'सोलम' लड़के उन मकानों को बना रहे थे। इन्हीं कुछ घरों से 'स्प्रिग क्रीक' की बस्ती बसनी ग्रारम्भ हुई थी।

उस स्त्री ने पति को पुकार कर कहा कि खाना तैयार हो गया है। वह उसकी ओर चल पड़ा, किन्तु पुनः एक क्षण के लिए रुक गया; निर्जन मैदान में दूर तक दृष्टि दौड़ाने लगा। अब भी उसे कुछ दिखाई न दिया। तम्बू के अन्दर प्रकाश था, किन्तु गर्मी बहुत थी। सारा दिन उस पर सख्त धूप पड़ी थी। ओसला परिवार का सारा फर्नीचर तम्बू में सफाई से रखा हुआ था और वह अच्छा-खासा घर प्रतीत होता था। हंस ओसला की पत्नी ने उसके लिए एक बड़े प्याले में पानी भर रखा था जिससे उसने अपना हाथ-मुंह धोया और खाना खाने के लिए बाहर ज़मीन पर बैठ गया। बाहर कुछ ठंड थी।

"क्या तुम्हें अभी उनके आने के कोई चिह्न दिखाई दिये हैं?" उसकी पत्नी ने पूछा।

"नहीं, कुछ नहीं।"

"तुम्हारा क्या विचार है, उनका क्या बना होगा?"

"मुझे तो कुछ पता नहीं।" उस का पति इतना चिंतित दिखाई देता था कि उसने फिर और कोई बात न की। किन्तु वह प्रसन्न थी और उसका हृदय कह रहा था कि परहंसा शीघ्र ही बस्ती में पहुँच जायगा। किन्तु हंस ओसला का मन चिन्ताग्रस्त था। वह चुपचाप खाना खाता रहा। खाना समाप्त करते ही वह मकान की ओर चला गया जिसे वह बना रहा था और वहाँ बैठ कर पूर्व की ओर देखने लगा। "परहंसा के साथ क्या घटना घटी है?" वह मन ही मन सोचने लगा।

उसकी पत्नी ने उसे इस प्रकार बैठे देखा, तो वह उसके पास आई। "हंस" उसने कहा, 'मेरा विचार है कि तुम जाओ और उन्हें कहीं ढूंढ़ो।"

"इतनी बड़ी जगह में उन्हें कहाँ-कहाँ ढूंढ़ूं? ऐसा प्रयत्न तो निराशाजनक होगा।"

"हाँ, यह तो सच है, किन्तु प्रयत्न करते हुए हमारे हृदय को अधिक शान्ति मिलेगी।"

हंस ओसला अब भी पूर्व दिशा की ओर देख रहा था, "परहंसा तो अच्छा चुस्त व्यक्ति है; और हमें यहाँ पहुँचे हुए आज पाँच दिन हो गये हैं, अब तक तो उसे भी पहुँच जाना चाहिए था। मुझे तो यह डर है कि वह हम से आगे पश्चिम की ओर निकल गया है।" दुःख से निढाल वह पुनः बैठ गया। उसकी पत्नी भी उसी की तरह चुप बैठ गई।

"मुझे बैरेट की बहुत चिन्ता है," वह आखिर बोली, "और बच्चों की भी। परहंसा को बैरेट के कारण धीरे चलना पड़ेगा। मेरा विचार है कि उसके बच्चा होने वाला है।"

तभी उसने देखा कि दक्षिण की ओर के मकान से लाल दाढ़ी वाला छोटे कद का एक भारी-भरकम आदमी पहाड़ी पर चढ़ रहा है। यह उनका पड़ोसी टानसेटन था जो अपने वाक्‌चातुर्य के लिए विख्यात था। शीघ्र ही हंस ओसला ने भी उसे देख लिया।

टानसेटन उनके पास आया और बिना किसी अभिवादन के ही उसने पूछा—"क्या तुम्हें वे दिखाई दिये हैं?"

"क्यों, तुम उन्हें देख चुके हो क्या?"

"मैं! यही तो तुम्हें बताने आया हूँ। मैं तो एक घंटे से अधिक समय से उन्हें इधर आते देख रहा हूँ। वे शीघ्र ही यहाँ पहुँच जायेंगे।"

उन सब के हृदय औत्सुक्यपूर्ण उत्तेजना से भर गये, "वे कहाँ हैं?" पति और पत्नी दोनों ने एक साथ पूछा।

"पश्चिम की ओर देखो; वे तुम्हें दिखाई दे जाएंगे। परहंसा अवश्य मार्ग से कुछ भटक गया होगा।"

हंस ओसला और उसकी पत्नी ने जब पश्चिम की ओर देखा और उन्हें मैदान को पार करती हुई बैलगाड़ियाँ दिखाई दीं तो उन्हें

अपनी आंखों पर विश्वास न हुआ। वे इतने अधिक प्रसन्न थे कि बोल भी न सके। ओसला की पत्नी तुरन्त आगन्तुकों के लिये काफी तैयार करने और अपने तम्बू में उपलब्ध अच्छे से अच्छा भोजन कराने के लिए चली गई। हंस ओसला इतना प्रसन्न था कि वह पुनः मकान बनाने के काम में लग गया और उनके आगमन की प्रतीक्षा करने लगा। टानसेटन उसकी सहायता करने लगा।

शीघ्र ही गाड़ियां बहुत निकट आ गईं। परहंसा आगे-आगे चल रहा था और नन्हा हंस उसके पीछे-पीछे था। ओल बैलों को हांक रहा था और बैरेट तथा एना मेरी गाड़ी में बैठी थीं। वहां सभी उनका स्वागत करने के लिए उत्सुक खड़े थे, और ज्यों-ज्यों वे निकट आ रहे थे उन्हें प्रसन्नता भरी दृष्टि से देख रहे थे।

"तुमने आखिर हमें ढूंढ़ लिया।" हंस ओसला ने हँसते हुए कहा।

उसने इतने प्रेम से परहंसा का हाथ पकड़ा हुआ था कि उसे छोड़ना ही न चाहता था।

"क्यों, यह तो बहुत सुगम था और तुम जानते हो, तुम हमारे लिए चिह्न भी तो छोड़ आये थे। मैं बहुत दूर पश्चिम में इस स्थान तथा सियोएवस प्रपात के बीच के मार्ग पर चला गया था किन्तु फिर मार्ग ढूंढ लिया।"—इतना कह कर उसने चारों ओर देखा और फिर मुसकराते हुए बोला—"तो यह है वह भूमि! बहुत अच्छी, सच बहुत ही अच्छी है।"

बैरेट तथा नन्ही लड़की गाड़ी से उतरीं। बैरेट अन्य लोगों के पास न गई किन्तु कुछ पीछे खड़ी रही। उसे विश्वास नहीं होता था कि यही वह स्थान है जहाँ वे रहेंगे। अकस्मात् उसके मन में एक तीव्र भाव उठा कि यहाँ अवश्य कुछ न कुछ अमंगल होगा। उसे प्रसन्नता अनुभव न हुई किन्तु उसने अपने आँसुओं को रोके रखा क्योंकि वहाँ सभी बहुत प्रसन्न थे। आखिर वह ओसला की पत्नी के साथ तम्बू में चली गई। उन्होंने बैरेट से कहा कि वह कुछ देर

आराम कर ले और फिर कपड़े बदल ले तथा उसे अकेला छोड़ दिया ताकि स्नानादि से निवृत्त हो जाय।

बैरेट ने सोचा, "यहाँ कैसे रहा जा सकता है! मैं कैसे रह सकूंगी! यहाँ सिर छिपाने तक को तो जगह नहीं।" उसकी समझ में न आया कि वे सब क्या सोच रहे हैं।

बाहर पुरुष ज़मीन केबारे में बातचीत कर रहे थे। हंस ओसला ने परहंसा को बताया, "मैंने अपनी भूमि के पास की भूमि पर तुम्हारे लिए अधिकार किया हुआ है। यदि तुम्हें इससे अधिक अच्छी ज़मीन का टुकड़ा मिल जाय तो तुम भले ही इसे मत लेना। किन्तु इसे लेने से हम निकट के पड़ोसी हो जाएंगे।" यह देख कर कि उसका मित्र हंस ओसला उसके बारे में कितना सोचता है, परहंसा का हृदय भावोद्वेग से भर गया।

शीघ्र ही वे एक सफेद चादर के गिर्द बैठ कर खाना खाने लग गये। भोजन में सुखाये हुए मांस का टुकड़ा, रोटी, पनीर, मक्खन तथा मीठे दूध का प्याला था। स्टोव पर रखे कहवे की सुगन्धि आ रही थी। खाना खाते हुए वे सब खूब हंस रहे थे और बढ़िया भोजन का आनन्द ले रहे थे। फिर हंस ओसला की पत्नी सोरीना पुरुषों के पीने के लिए एक बोतल व्हिस्की तथा एक छोटा गिलास ले आई।

खाना खाते समय हंस ओसला जितना मौन था, अब उतना मौन नहीं रहा। अब वह औरों की अपेक्षा अधिक हँस रहा था और प्रसन्न भाव से परहंसा की ओर देख रहा था। परहंसा ने मांस का एक और टुकड़ा काटा और मुसकराते हुए हंस ओसला से कहा – "क्या तुम अपना सारा भोजन अपने साथ ले आये थे?"

हंस ओसला कुछ क्षण सोच कर बोला—"हाँ, निस्सन्देह! किन्तु मैदान में कहीं हमारा सुखाये हुए मांस का टुकड़ा गुम हो गया था।"

परहंसा ने उन्हें बताया कि वे उसके लिए जो टुकड़ा छोड़ आये थे, उसे मिल गया था। वह हंस ओसला के बहकावे में न आया और उसने पुनः उसको धन्यवाद करते हुए कहा, "तुम मेरा कितना ध्यान रखते हो ! हम सब मित्र हैं और सदा एक दूसरे की सहायता करते रहेंगे।"

: २ :

वे अंधेरा होने तक बैठे बातें करते रहे। अब वे महत्त्वपूर्ण विषयों पर बातचीत कर रहे थे कि यहाँ किस प्रकार रहेंगे, कौन-कौन सी फसलें बोयेंगे, और किस तरह यह छोटी सी बस्ती अधिकाधिक बड़ी होती जायगी। जब अंधेरा अधिक बढ़ने लगा तो उन्होंने बातचीत बन्द कर दी और डूबते हुए सूर्य का दृश्य देखने लगे। एक बार फिर उस विस्तृत मैदान में तथा उससे भी व्यापक शून्य आकाश के तले वे अपने आपको बहुत ही छोटा समझने लगे। चारों ओर मौन का वातावरण था। वे भयभीत नहीं थे, किन्तु उन्हें यह विश्वास नहीं था कि हालात सदा ठीक रहेंगे। किसी भी समय कोई घटना घट सकती थी, क्योंकि वे अपने साथियों से बहुत दूर थे। किन्तु कोई भी यह नहीं चाहता था कि दूसरों को यह पता लग जाये कि वह अकस्मात् उदास हो गया है।

तभी अकस्मात् परहंसा खड़ा हो गया। बैरेट भाँप गई कि उसके पति के हृदय में भी वैसे ही विचार उठ रहे हैं जैसे उस निर्जन प्रदेश के बारे में उसके मन में उठे थे। किन्तु अब परहंसा सब को प्रसन्न करना चाहता था, अतः वह बोला—"आओ, हम अपना घर देखें।"

पुरुष उस जमीन को देखने के लिए चले गए जिसके बारे में हंस ओसला ने सोचा था कि परहंसा उसे पसन्द करेगा। "तुम इसे न पसन्द करो तो न लेना"—हंस ओसला ने पुनः परहंसा से कहा, "किन्तु यदि तुम्हें पसन्द हो तो तुम्हें तुरन्त स्यूएक्स फाल्स जाकर

इसके लिए हस्ताक्षर करने होंगे ताकि और कोई आकर इस पर कब्ज़ा न कर ले।"

परहंसा को विश्वास न हुआ कि यह सब कार्य इतनी सुगमता से हो जायेगा। उपजाऊ भूमि के इतने बड़े भाग पर उसका कब्जा हो जायेगा और उसके सर्वश्रेष्ठ मित्र उसके पड़ोसी होंगे और उसे अपने जीवन में कोई बड़ा कार्य करने का अवसर मिलेगा। वह भूमि ऊँची थी और पास ही पानी बहता था। खेती के लिए वह बहुत बढ़िया भूमि प्रतीत होती थी।

उसने सोचा कि वह हंस ओसला के मकान के बहुत निकट अपना मकान बनायेगा, क्योंकि फिर उनकी स्त्रियाँ परस्पर अधिक मिल-जुल सकेंगी।

जब एक बार उसने निश्चय कर लिया तो उसमें नवचेतना का संचार हो गया। इस सारी भूमि का वह स्वामी होगा। वह इसमें खेती करेगा। इस भावना ने उसे एक प्रेरणा दी। भला इस पर किसे विश्वास हो सकता था!

: ३ :

अगले दिन परहंसा भूमि पर अधिकार प्राप्त करने के लिए स्यूएवस फाल्स गया। उसके पीछे बैरेट अपने नये घर के लिए सब कुछ तैयार करने में लग गई। अब भी उसकी यह सोचने की इच्छा नहीं होती थी कि वे यहीं रहेंगे। अब भी उसका हृदय कह रहा था कि संभवतः ग्रीष्मकाल यहाँ बिताकर वे पुनः पूर्व दिशा को लौट जायँगे। यही उसकी आशा थी। यह प्रदेश तो बहुत ही निर्जन था। बार-बार यह विचार उसके मन को कचोट रहा था कि वहाँ सिर छिपाने को भी कहीं जगह नहीं।

लड़कों को काम पसन्द आया और उन्हें यहाँ पहुँच कर प्रसन्नता हुई। सब कुछ तैयार करने के लिए उन्होंने खूब परिश्रम किया। उन्होंने गाड़ी से सब वस्तुएँ निकालीं और मकान बनाने तक के लिए

गाड़ी में ही सोने की व्यवस्था कर ली। यह प्रवन्ध वहुत अच्छा था किन्तु, बैरेट अब भी प्रसन्न न थी। वह एक दिन संध्या के समय आस-पास का प्रदेश देखने के लिए अपनी भूमि पर की एक छोटी पहाड़ी की चोटी पर गई। वह प्रदेश उसे बहुत सुन्दर लगा और उसे उस सागर की याद आ गई जो उसे बहुत प्रिय था।

किन्तु यह प्रदेश सागर से भिन्न था। यहाँ तो इतना गहन मौन था कि सारा वातावरण अवास्तविक प्रतीत होता था। न कहीं पक्षियों का गान था, न कीड़े-पतंगे ही थे। उसे ऐसा लगा कि यहाँ कोई जीव नहीं रह सकता। उसने पास ही अपने बच्चों को प्रसन्नता से खेलते हुए देखा। फिर उसे ध्यान आया कि वापस पूर्व में फिर अपने साथियों के पास चले जाने के लिए उन्हें कितनी लम्बी यात्रा करनी होगी। पर यदि वे इस स्थान को छोड़ने के लिए तैयार हो जायें तो वह यात्रा के कष्ट सहने की भी परवाह न करेगी।

जब अँधेरा अधिक हो गया तो उस निर्जन प्रदेश की ओर देखने का उसमें साहस न रहा। वह लेट गई और आकाश की ओर देखने लगी। किन्तु आकाश भी तो शून्य और अंधकारपूर्ण था। उसने अनुभव किया कि वह विश्व में नितान्त एकाकी थी। उसका हृदय एक अभूतपूर्व उदासी के सागर में डूब गया।

उसे पुरानी बातों का स्मरण हो आया कि बहुत समय पहले जब वे नार्वे का घर छोड़ कर आये थे तो उसके पश्चात् उन्होंने कितनी लम्बी यात्राएँ की थीं। महीनों ही उन्हें समुद्र की यात्रा में लग गये थे, यहाँ तक कि वह समय की गणना भी न कर सकी थी। फिर वे एक बड़े नगर में तट पर उतरे जहाँ उसे सब कुछ विचित्र लगा था, किन्तु उनकी यात्रा का यहीं अन्त नहीं हुआ। वे पश्चिम की ओर बढ़ते चले गये। ऐसा लगता था कि वे बिना रुके निरन्तर चलते रहते हैं। वह चाहती थी कि यह कह दे कि, "मैं और आगे नहीं जाऊँगी" किन्तु वे फिर भी आगे बढ़ते रहे। आखिर वे मिनी-

सोटा पहुँच गये। किन्तु उनकी यात्रा का यह अन्त भी अल्पकालीन था। और अब वे यहाँ पहुँच गये थे। वह कभी भी अपने घर नहीं लौट सकेगी। उसे लगा वह बहुत बूढ़ी हो गई है।

उसने धीमे से बच्चों को लौट चलने के लिए पुकारा और उनसे कहा—"देखो, तुम कल फिर यहाँ खेलने के लिए आ जाना।" फिर वे अंधेरी रात में इकट्ठे गाड़ी के पास लौट आये। चारों ओर सन्नाटा छाया हुआ था।

जब अगले दिन परहंसा घर वापस आया तो वह बैरेट तथा लड़कों द्वारा किया हुआ कार्य देख कर बहुत प्रसन्न हुआ। उसके मन में अपूर्व उल्लास था क्योंकि सब बातें सुगम तथा सुलभ प्रतीत हो रही थीं और वह बिना रुके बात करता रहा। वह बोला, "अब मेरे मार्ग में कोई रुकावट नहीं आ सकती।" फिर उसने बैरेट को ज़मीन-सम्बन्धी कागज़ देते हुए कहा—"इसे सँभाल कर रख दो। देखो, कितनी विचित्र बात है कि जो भी व्यक्ति भूमि लेकर खेती करना चाहे उसे केवल इच्छामात्र से ही इस सारी भूमि पर अधिकार मिल सकता है। कितना अद्भुत देश है यह !"

बैरेट जानती थी कि अब वह उससे कुछ नहीं कह सकती, क्योंकि वह अपनी योजनाओं के विचार से ही बहुत प्रसन्न था और वह उसकी बात नहीं सुनेगा। किन्तु उसके लिए अपनी उदासी छिपाना बस की बात न थी। परहंसा ने उसे प्रसन्न करने का प्रयत्न किया।

"कल जब मुझे इस भूमि के पत्र मिल गये तो मेरे मन में एक विचित्र विचार आया और मैंने दस बोरी आलू खरीद लिये। हम तो अन्य लोगों की तरह पहले मकान नहीं बनाएंगे। प्रत्युत हम कल प्रातः ही आलू बोना आरम्भ कर देंगे। इससे हिमपात के समय हमारी फसल तैयार हो जायेगी। मैं मकान बाद में ग्रीष्मकाल के समय बनाऊँगा, जब मेरे पास अधिक अवकाश होगा।

परहंसा को उस रात ठीक प्रकार से नींद न आई। उसके मन में भविष्य के लिए अनेक योजनाएँ थीं। वह सोच रहा था कि पहले पहल तो जीवन कठिन होगा किन्तु उसे यह विश्वास था कि अन्त में सब ठीक हो जायगा। उसने निश्चय किया कि हम एक बड़ा मकान बनायेंगे और उस पर सफेद तथा हरा रंग करेंगे तथा एक पशुशाला बनायेंगे जिस पर लाल तथा सफेद रंग करेंगे। कितना अच्छा होगा यह !

अगले दिन प्रातः वह हल लाने के लिए हंस ओलसा के पास गया। फिर उसने बैल जोते और खेत में हल चलाने लगा। और सभी सोये हुए थे और परहंसा के पास अभी प्रातः का काफी समय शेष था। पहले उसने उपजाऊ भूमि के कुछ भाग में हल चलाए और फिर कुदाल लेकर उसे समतल किया। इसके साथ ही उसने मकान के लिये घास वाली मिट्टी काट ली। वह एक साथ दो कार्य कर रहा था। केवल नाश्ते के लिये वह रुका और फिर दोनों लड़कों के साथ वापस खेत में चला गया। काम बहुत कठिन था, क्योंकि इस ज़मीन में इससे पहले कभी हल नहीं चलाया गया था, किन्तु तीनों मध्याह्न-भोजन के समय तक निरन्तर काम करते रहे। उस समय तक उन्होंने एक गाड़ी भर घास वाली मिट्टी एकत्र कर ली थी और काफी ज़मीन भी जोत ली थी। उन्होंने कहवा पीने के समय मिट्टी की एक और गाड़ी तथा फिर रात्रि के भोजन के समय तक एक गाड़ी मिट्टी और एकत्र कर ली थी। काम के पहले दिन का परिणाम इतना अच्छा था कि परहंसा को इतनी आशा न थी।

उसी शाम को उसने मकान बनाना आरम्भ कर दिया। बैरेट ने उसे आराम करने के लिये कहा तो उसने उत्तर दिया कि हल चलाने के पश्चात् मकान बनाना आराम ही है और उसने सबको सहायता देने के लिये कहा। वे अन्धकार होने तक कार्य करते रहे और फिर सभी एक साथ सो गये।

परहंसा हर प्रातः नाश्ते से पूर्व तथा शाम के भोजन के पश्चात् मकान बनाया करता था। परिवार के अन्य लोगों के पास जब और कार्य न होता था तो वे सब सहायता करते थे। दूसरे लोगों को तो अपनी आँखों पर विश्वास न हुआ। सारा परिवार तो खेत के काम में लगा हुआ था किन्तु फिर भी मकान बड़ी तेजी से खड़ा हो रहा था।

परहंसा प्रतिदिन, दिनभर व्यस्त रहता था। उसे नींद से भी घृणा हो गई थी। यह सब काम होते देख कर उसे प्रसन्नता होती थी। बैरेट भी अपने हिस्से से अधिक काम कर रही थी। उसे कितनी अद्भुत पत्नी मिली थी। आखिर परहंसा ने हल का सारा काम समाप्त कर लिया और केवल मकान पर छत डालनी शेष रह गई। अन्य लोगों ने अभी मकानों पर छत डाल कर हल चलाना आरम्भ ही किया था। एक दिन शाम को उन्होंने अपने उस बड़े खेत में आलू के बीज डाल दिये और परहंसा ने अनुभव किया कि महत्त्वपूर्ण कार्य का अधिक भाग हमने समाप्त कर लिया है।

बैरेट बहुत थक गई थी और काम करते-करते उसकी कमर भी दुखने लगी थी। किन्तु परिवार में सभी लोग इतने प्रसन्न थे कि उसने अपनी तकलीफ की बात किसी से न कही। बल्कि उस रात उसने उनके कठिन परिश्रम के उपलक्ष में सबको खाने के साथ मक्खन और चीनी दी। परहंसा और लड़कों को प्रसन्न मुद्रा में देखना उसे बहुत अच्छा लगा।

अन्य लोगों को परहंसा का मकान देखकर आश्चर्य हुआ। यह उनके घरों की अपेक्षा कहीं अधिक बड़ा था और इसमें दो कमरे थे जिनके बीच दीवार बनाकर उन्हें अलग-अलग किया गया था। मकान के दरवाजे भी दो बनाये गए थे। टानसेटन को विश्वास था कि छत डालने के लिए लकड़ी काफी नहीं थी। वह तुरन्त हंस ओलसा से यह कहने के लिए गया कि वह परहंसा को समझा दे कि उसका मकान

बहुत अधिक बड़ा है। किन्तु हंस ओलसा ने उसे उत्तर दिया कि परहंसा का परिवार बड़ा है और उसे बड़े मकान की आवश्यकता है। सोलम परिवार ने भी उसे यही उत्तर दिया। वे लोग जानते थे कि परहंसा समझदार व्यक्ति है।

वस्तुतः परहंसा का मकान इसलिए बड़ा था कि उसने एक ही छत के नीचे मकान और पशुशाला दोनों बना दिये थे। उसे पता था कि दूसरे देशों में धनाढ्य लोगों ने भी ऐसे मकान बनाये हैं। इससे घर तथा पशुशाला दोनों गर्म रहेंगे और रोज़ी गाय को भी अकेले नहीं रहना पड़ेगा। इसके अतिरिक्त वह अपने मित्रों से भी आगे निकल गया था जिन्होंने अभी तक पशुशालाएँ नहीं बनाई थीं।

पहले तो बैरेट को यह विचार पसंद न आया। उसके लिए यह बात कल्पनातीत थी कि पुरुष और पशु एक घर में रह सकते हैं। किन्तु आखिर उसने सोचा कि रोज़ी मेरे पास रहा करेगी, यह तो बहुत अच्छा रहेगा। अतः उसने स्वीकृति दे दी। परहंसा ने फिर अनुभव किया कि उसकी पत्नी भी एक अद्भुत नारी है।

: ४ :

मकान की छत बनाने के लिए लकड़ी लाने का समय आ गया था। वहाँ निकट पर्याप्त मात्रा में लकड़ी उपलब्ध नहीं थी और जो थी वह भी पतली। परहंसा ने लगभग तीस मील दूर स्यूएक्स नदी पर जाने का निश्चय कर लिया, क्योंकि उसने सुना था, कि वहाँ काफी मात्रा में भारी लकड़ी है। वहाँ नार्वे के एक अन्य प्रदेश के कुछ लोग भी बसे हुए थे। उसने हंस ओलसा को बताया कि वह कहाँ जा रहा है किन्तु और किसी को यह बात नहीं बताई। वहाँ पहुँचने में उसे दो दिन लगते।

उसने नन्हे हंस को भी साथ ले जाने का निश्चय किया। ओल को खेत की देखरेख करने के लिये कहा गया। ओल को यह बात पसन्द न आई, क्योंकि वह साथ जाना चाहता था। ओल

सोचता था कि नन्हा हंस आयु में उससे छोटा है, इसलिए उसे घर ठहरने के लिये कहना उचित नहीं है। किन्तु वह कुछ नहीं कर सकता था। नन्हा हंस ऐसा अनुभव कर रहा था कि वह बहुत बड़ा हो गया है और उसने पिता की यथासम्भव सहायता की।

बैरेट को भी अकेले रहना पसन्द न आया, यद्यपि वह जानती थी कि परहंसा को तो जाना ही है। परहंसा ने उसे कहा था कि वह हंस ओलसा और उसके परिवार से ही मिल आये। परन्तु वह जानती थी कि वह नहीं जायेगी और अकेली बैठी प्रतीक्षा करती रहेगी।

उसे बहुत देर प्रतीक्षा करनी पड़ी। वह पहली रात भी प्रतीक्षा करती रही, यद्यपि उसे पता था कि वे नहीं लौटेंगे और फिर दूसरी रात भी उसने प्रतीक्षा में गुजारी। अब तीसरा दिन था और परहंसा अभी तक नहीं लौटा था। बैरेट हंस ओलसा के पास गई। हंस ओलसा ने उसे कहा कि वह चिन्ता न करे, क्योंकि सम्भवतः परहंसा सर्दियों के लिए लकड़ी काटने के हेतु रुक गया है। बैरेट को तो इस बात का कभी खयाल भी न हुआ था। निस्संदेह उन्हें सर्दियों के लिए लकड़ी की आवश्यकता थी।

मध्याह्नोपरांत परहंसा गाड़ी में इतनी अधिक लकड़ी लादे हुए आया कि बैल उसे बड़ी कठिनता से खींच रहे थे। वह इतनी लकड़ी थी कि उनकी सभी आवश्यकताएँ पूरी हो सकती थीं। वह घर के चारों ओर लगाने के लिये फलों के छः पौधे भी लाया था। गाड़ी के पिछले भाग में दो बड़े-बड़े थैले भी थे जिनमें विचित्र प्रकार की वस्तुएँ भरी हुई थीं। एक मछलियों से भरा हुआ था और दूसरे में एक बड़ा सा जानवर था। नन्हा हंस झट बोल पड़ा—"इस जंगली पशु को पिता जी ने मारा है।"

उन्होंने शाम के भोजन के लिए ताजी मछली तैयार की। परहंसा के मित्र बहुत प्रसन्न हुए और उन्होंने कहा कि हम भी

स्यूएक्स नदी पर जायँगे। परन्तु ऐसा लगता था कि उनके पास कभी भी इसके लिए समय नहीं होगा। अतः परहंसा के घर के चारों ओर तो कई वृक्ष खड़े हो गये जबकि सारी बस्ती में और कहीं भी नहीं थे।

सबसे अधिक अच्छी बात तो यह हुई कि नार्वे के एक अन्य प्रदेश के जो किसान स्यूएक्स नदी के पास रहते थे उनके साथ परहंसा की मित्रता हो गई और उन्होंने एक दूसरे को वचन दिया कि इस अनजाने देश में वे एक-दूसरे की सहायता करेंगे।

: ५ :

धीरे-धीरे भोजन समाप्त होने लगा और हंस ओलसा को भी जिसके पास सबसे अधिक भोजन था, चिन्ता होने लगी। उन्हें नगर में जाकर और भोजन खरीदना होगा। सब पुरुष इस बारे में बात-चीत करने के लिए एकत्र हुए कि वस्तुएँ लाने के लिए किसे जाना चाहिए और उन्हें क्या कुछ खरीदना चाहिए। उन्हें भोजन, कुछ खेती-सम्बन्धी वस्तुओं और कुछ कपड़े की आवश्यकता थी।

नगर बहुत दूर था और वहाँ आने-जाने में चार दिन लगते थे। उन्होंने निश्चय किया कि पुरुषों में से एक बस्ती में रहे और स्त्रियों तथा बच्चों की देखभाल करे। यद्यपि कोई भी इसे मानने को तैयार न था किन्तु सभी को कभी-कभी डर लगा करता था। यह नया प्रदेश बहुत विचित्र था। गत सप्ताह ऐसा अंधड़ आया था कि हंस ओलसा का तम्बू उसकी पत्नी समेत उड़ गया था। वह तो अब ठीक-ठाक थी किन्तु वह आँधियों से भयभीत थी। अन्य लोगों को इंडियनों का डर था। परहंसा नार्वे के जिन अन्य लोगों से मिला था उनसे उसे पता लगा था कि पास ही इंडियनों की बस्ती है और वे प्रतिवर्ष इसी मार्ग से पश्चिम की ओर जाते हैं। परहंसा ने अनुभव किया कि इंडियन उन्हीं की भूमि में से गुजरेंगे, किन्तु उसे चिन्ता न थी।

आखिर लोगों ने निश्चय किया कि परहंसा और सैम सोलम घर पर रहें। अन्य तीनों के पास घोड़े थे। तीन घोड़ों और तीन गाड़ियों से वे सब वस्तुएँ, जो उन्हें खरीदनी थीं, ला सकते थे। परहंसा को बहुत बुरा लगा। वह भी जाना चाहता था किन्तु वह कह न सका। उसने अनुभव किया कि अन्य लोगों का उसके प्रति यह व्यवहार उचित नहीं था। जिस दिन अन्य लोग गए, वह प्रातः शीघ्र उठा और उसने डेढ़ एकड़ भूमि जोत डाली जितनी कि पहले कभी किसी ने न जोती थी। इससे उसका मन कुछ स्वस्थ हुआ।

परहंसा निरन्तर कठिन परिश्रम करता रहा। यह सोचकर उसका हृदय प्रसन्न हो गया कि वह भूमि जोतने में अन्य लोगों से आगे निकल जायगा। अगले दिन वह बहुत प्रसन्न खेत से लौटा। रास्ते में उसने नन्हे हंस को अपनी ओर भागते हुए देखा। नन्हे हंस ने पुकार कर कहा—"पापा, वे लोग आ गए हैं।" परहंसा को पहले तो उस पर विश्वास न आया किन्तु फिर उसने देखा कि बहुत से लोग धीरे-धीरे उधर चले आ रहे हैं। "माँ कहती है कि वे इंडियन हैं," हंस ने कहा।

अब परहंसा ने घर पहुँचने के लिए तेजी से कदम बढ़ाये। उसने देखा बैरेट नन्ही लड़की को गोद में लिये, उन निकट आते हुए लोगों को देख रही है। वह बहुत दुखी थी। वह सोच रही थी कि इंडियन उसे मार देंगे।

परहंसा ने उसे कहा कि जाकर खाना बनावे और हंस को सैम सोलम के पास समाचार देने के लिए भेजा। उसने ओल से बंदूक लाने के लिए कह दिया ताकि आवश्यकता पड़ने पर काम आ सके। फिर वह मकान की छत बनाने में लग गया तथा उधर आते हुए लोगों को ध्यानपूर्वक देखने लगा। उसने देखा कि वे कुछ परिवार थे जो मैदान में घूम रहे थे और वे लोग उन्हें मारने के लिए नहीं आयेथे। उसने हँसते हुए ओल से कहा—"बंदूक को रख दो।

सोरीना से कह दो कि इंडियन आ रहे हैं और यदि वह चाहे तो यहाँ आ जाए। किन्तु उसे डरा न देना।" ओल भागता हुआ घर चला गया।

सैम सोलम ने जब यह समाचार सुना तो हाथ में बन्दूक लिये भागता हुआ आया। भय से उसका मुख विवर्ण हो गया था। परहंसा ने उससे हँसते हुए कहा—"बन्दूक रख दो और आओ छत बनाने में मेरी सहायता करो। तभी कजेरसती ने भी इंडियनों को देख लिया था और वह अपनी गाय को हाँकता हुआ वहाँ चला आया। सोरीना को अपनी गाय का ध्यान नहीं रहा था जो अभी तक घर के पास के मैदान में चर रही थी।

भयाक्रान्त स्त्रियाँ एक ओर चुपचाप खड़ी थीं। वे एक दूसरी को प्रसन्न करने का प्रयत्न करने लगीं किन्तु बैरेट चुपचाप खड़ी रही। अब भी उसे ऐसा लग रहा था कि कोई उसकी हत्या करने वाला है। इस निर्जन प्रदेश में कोई भी दुर्घटना उसके लिए अप्रत्याशित न थी। परहंसा ने उनसे कहा कि सब जाकर काम करें, क्योंकि उसे शाम का भोजन चाहिए।

वे सब आते हुए इंडियनों को ध्यानपूर्वक देखते रहे। इंडियन परहंसा के मकान से परे पहाड़ी के उस पार रुक गये और वहाँ एक वृत्ताकार बनाने के पश्चात् उन्होंने घोड़ों को घास चरने के लिए खोल दिया। उन लोगों से किसी हानि की आशंका नहीं थी।

किन्तु तभी सोरीना की गाय, जो पास ही चुपचाप चर रही थी, अकस्मात् ऊँची आवाज करती हुई भाग गई और फिर अन्य गायें भी उसके पीछे-पीछे सीधे इंडियनों के शिविर की ओर भाग गईं। ये गायें पश्चिम की ओर की यात्रा के लिए इतनी अभ्यस्त हो गई थीं कि वे जब भी किसी गाड़ी को देखतीं उस ओर भाग खड़ी होती थीं। स्त्रियाँ चिल्लाने लगीं कि उन्हें दूध नहीं मिलेगा। किन्तु बैरेट इंडियन शिविर की ओर चल पड़ी और कहने लगी कि यदि

पुरुष गायों को लाने नहीं जायेंगे तो मैं जाऊंगी।

परहंसा ने उसे कहा—"तुम प्रतीक्षा करो। भोजनोपरांत हम जाकर गायों को ले श्रायेंगे।" भोजन करते समय परहंसा इंडियनों के बारे में बहुत सी बातें बताता रहा श्रौर बैरेट को बीच में ही कहना पड़ा कि वह इन बातों से सब को भयभीत कर रहा है। श्राज पहली बार उसने सब लोगों के सामने उसे लज्जित किया था। परहंसा को इससे बहुत दुःख हुश्रा, किन्तु उसने इसे प्रकट नहीं होने दिया।

श्राखिर वह जाने के लिए तैयार हो गया। नन्हे हंस ने उसके साथ जाने के लिये बहुत हठ किया जिस पर उसकी मां चिल्ला पड़ी, "नहीं तुम मत जाश्रो। तुम यहीं ठहरो।" किन्तु परहंसा ने नन्हे का हाथ श्रपने हाथ में लिया श्रौर चला गया।

नन्हा हंस यह जानना चाहता था कि उसका पिता इंडियनों के पास क्या करने जा रहा है। किन्तु परहंसा इस बारे में सोच रहा था कि बैरेट ने सब के सामने उसे क्या कहा था श्रौर उसने कोई उत्तर नहीं दिया था। वे इंडियनों के शिविर के श्रधिकाधिक निकट पहुँच रहे थे। उस शिविर में बच्चे इधर-उधर खेल रहे थे श्रौर स्त्रियाँ काम में व्यस्त थीं। सब श्रोर शान्ति थी। कुछ पुरुष श्राग के गिर्द बैठे चुपचाप तम्बाकू पी रहे थे।

परहंसा कुछ श्रंग्रेजी जानता था श्रौर वह इस भाषा में इंडियनों से बोला। इंडियनों में से एक ने उसका उत्तर दिया श्रौर वह परहंसा से श्रंग्रेजी में बातचीत करने लगा। किन्तु परहंसा यह भाषा बहुत कम समझता था श्रतः इस बातचीत में नन्हे हंस ने उसकी सहायता की। इस प्रकार इंडियनों को पता लग गया कि परहंसा कहाँ रहता है। इसके श्रतिरिक्त उन्हें श्रौर कुछ नहीं कहना था। चारों गायें वापस घर जाने की प्रतीक्षा कर रही थीं। किन्तु परहंसा इतना शीघ्र नहीं लौटना चाहता था। उसे यहाँ श्रच्छा लग

रहा था और वह तम्बाकू भी पीना चाहता था। कई सप्ताह से उसे तम्बाकू पीने को न मिला था। आखिर उसने एक इंडियन को बताया कि उसे कुछ तम्बाकू चाहिये और फिर अपने पाइप में तम्बाकू भर वह भी प्रसन्न भाव से उनके पास बैठकर पीने लगा।

कुछ देर बाद वह चलने के लिये तैयार हुआ किन्तु जब वह मुड़ा तो उसने एक इंडियन को कम्बल में लिपटे हुए आग के बिलकुल पास खड़े देखा। वह बीमार दिखाई देता था और दर्द से कराह रहा था। "नन्हे हंस, इधर आओ और पता करो कि इस व्यक्ति को क्या कष्ट है।"

नन्हे हंस ने बीमार इंडियन से पूछा और कहा—"वह कहता है कि उसका हाथ ज़ख्मी है।"

परहंसा हाथ को देखना चाहता था। तुरन्त पट्टी उतार दी गई और हाथ दिखाया गया। हाथ, कलाई और आधी बाँह लाल हुई थी। उसके हाथ में एक बड़ा घाव भी था। परहंसा को लगा कि रक्त में विष पैदा हो गया है। उसने अपने पुत्र से कहा,—"इन्हें कहो कि हमें गर्म पानी और साफ तथा सफेद कपड़ा चाहिये।" किन्तु इंडियन कपड़े के सम्बन्ध में नहीं समझे। "अच्छा तो हमें बैरेट को बुलाना चाहिये। वह जानती है कि क्या करने की आवश्यकता है। उससे कहो कि सफेद कपड़ा, नमक और काली मिर्च तथा हंस ओलसा की बोतल से कुछ बूंद व्हिस्की ले आओ। जल्दी चले जाओ।"

शीघ्र ही बैरेट हंस के साथ वहाँ आ गई, किन्तु वह प्रसन्न न थी। वह अब भी परहंसा से क्रुद्ध थी और उसने उसे घर लौट चलने के लिये कहा, किन्तु परहंसा ने उसकी बात न सुनी। उसने बैरेट के लाये हुए पानी के बर्तन को आग पर रख दिया और उसमें थोड़ा सा नमक डाल दिया। फिर उसने एक प्याले में थोड़ी सी मिर्च डाली तथा उसमें व्हिस्की डाल कर इंडियन को पीने के लिये दी। इंडियन ने कुछ मुंह बनाया किन्तु फिर सारी पी गया। फिर

बैरेट ने व्हिस्की की कुछ बूंदें घाव पर डालीं और परहंसा ने उन्हें मसल दिया। बैरेट बहुत डरी हुई थी किन्तु उसने कुछ नहीं कहा। परहंसा ने फिर कपड़े पर गर्म पानी डाल उसे हाथ पर बांध दिया। इंडियन को बहुत अधिक कष्ट हो रहा था। "अब तुम दोनों घर चले जाओ!" उसने पत्नी और पुत्र को कहा, "मुझे सारी रात यहीं रहना चाहिये। तुम तो देख ही रही हो कि यहां कोई भय की बात नहीं है। मैं जब आऊंगा तो गायों को लेता आऊंगा।"

रात अधिक हो गई और सारे शिविर में सन्नाटा छा गया। परहंसा ध्यानपूर्वक बीमार को देखता रहा और आखिर उसकी सूजन कम हो गई। उसे बहुत थकावट अनुभव हो रही थी। अकस्मात् उसे घास में चलते हुए किसी व्यक्ति की आहट सुनाई दी। यह कौन हो सकता है ? इंडियन तो सभी निद्रामग्न थे। उस ने दृष्टि उठाई तो बैरेट सामने खड़ी थी। ऐसा प्रतीत होता था कि वह बहुत देर से रो रही है और वह बहुत अधिक भयभीत थी। परहंसा को उसे इस स्थिति में देख कर बहुत दुःख हुआ और उसने उसे आलिंगन में ले लिया। वह इतना रो चुकी थी कि कुछ भी बोल न सकी। किन्तु आखिर वे दोनों मिल गये थे। परहंसा ने उसे बताया कि वह इंडियन स्वस्थ हो रहा है।

एक इंडियन उनके लिये दो भारी कम्बल ले आया ताकि वे लपेट कर सो जाएं और वे दोनों इतना अधिक थके हुए थे कि लौटने की बजाय वे दोनों शेष रात वहीं सो रहे।

एक दिन और एक रात और वहां रहने के पश्चात् इंडियन चले गये। परहंसा और उसके लड़के भी उनके शिविर में बहुत बार गये थे। किन्तु सैम सोलम तथा अन्य स्त्रियां घर पर ही रहीं। इंडियन घरों के निकट नहीं गये। अब वे जाने के लिये तैयार थे और परहंसा ने देखा कि उनकी गाड़ियां पंक्ति में खड़ी हैं। फिर परहंसा ने बीमार इंडियन को एक सुसज्जित घोड़ा लिये हुए अपनी

ओर आते हुए देखा। वह हम से विदा लेने के लिये आ रहा है। परहंसा उससे मिलने के लिये आगे बढ़ा। इंडियन ने परहंसा के निकट आ कर घोड़े की लगाम उसके हाथ में दे दी और कुछ कहा जिसे परहंसा नहीं समझ सका।

नन्हा हंसा उल्लास भरे स्वर में बोला—"यह घोड़ा तुम्हारे लिये है।" परहंसा को विश्वास नहीं आया और उसने घोड़ा लौटाना चाहा। किन्तु इंडियन और कुछ कहे बिना अपनी गाड़ी की ओर लौट गया। परहंसा और उसका परिवार चकित रह गया। नन्हा हंस प्रसन्नता से उछल रहा था।

: ६ :

अगले दिन उनके पड़ोसी नगर से लौट आये। उनके पास भी सुनाने के लिये बहुत सी बातें थीं। हंस ओलसा बहुत से थैले और साथ ही एक हल तथा एक हैंगी, जो वह परहंसा के लिये लाया था, लिये हुए उसके पास आया। हर एक अनेक प्रकार की विचित्र वस्तुएँ लाया था।

उस रात हंस ओलसा के घर सभी भोज पर आमंत्रित किये गये। परहंसा ने नगर और वहाँ के लोगों के बारे में बहुत कुछ पूछा। फिर सभी लोगों ने परहंसा की कहानी सुनी और उससे प्रश्न पूछने लगे। उन्होंने अनुभव किया कि परहंसा की कहानी उनके अनुभव से भी अधिक अच्छी थी। स्त्रियाँ घर के अन्दर जाकर सोरीना की वस्तुएँ देखने लगीं, किन्तु पुरुष बाहर बैठे बातें करते रहे। वे मदिरा पान भी कर रहे थे, किन्तु वे नहीं चाहते थे कि स्त्रियों को इसका पता लगे।

आखिर सोरीना एक बोतल और एक छोटा सा गिलास लिये बाहर खलिहान में आई और बोली—"यह पीजिये, अब काफी समय हो गया है।" पुरुषों ने ऐसा दिखावा किया कि वह कुछ नहीं पीना चाहते, किन्तु हर किसी ने उसकी बोतल से थोड़ी-थोड़ी मदिरा

पी ली और फिर वे खलिहान में चले गये और स्कूल के बच्चों की तरह हँसने लगे।

किन्तु इस हर्ष और उल्लास के उत्सव में एक प्रतिकूल घटना घट गई। क्जेरस्ती पुरुषों का खाना खेतों में ला रही थी तो उसे ऐसा लगा कि उसकी गाय मैदान में नहीं है। उसने बहुत तलाश की किन्तु कोई गाय दिखाई न दी।

वह भागती हुई सोरीना के पास गई और उससे पूछा कि क्या उसे पता है कि उसकी गाय कहाँ है। निश्चय ही सब गायें गुम हो गई थीं। "वे अवश्य कहीं भाग गई हैं"—क्जेरस्ती ने चिल्लाते हुए कहा।

"हमें अभी चलकर यह बात पुरुषों को बतानी चाहिये"—सोरीना बोली।

वह अपने पति के पास गई। हंस ओलसा हल चला रहा था और बहुत प्रसन्न था क्योंकि उसकी नई मशीन बहुत अच्छा काम कर रही थी। वह समझ न सका कि स्त्रियाँ क्यों चिन्तित हैं। "दूध दुहने के समय गायें घर लौट आयेंगी"—उसने पत्नी से कहा। किन्तु उसकी पत्नी बहुत व्याकुल थी, अतः उसने भी गायों की तलाश की और जब कहीं कोई गाय दिखाई न दी तो वह भी चिन्तित हो गया। वह परहंसा के घर गया और वहाँ उसने देखा कि किसी को भी पता नहीं कि गायें गुम हो गई हैं।

जब परहंसा को यह पता लगा तो उसने ओल को वह नदी का तट देखने के लिये भेजा जो गायों को बहुत पसन्द था—"यदि तुम्हें गायें न मिलें तो सीधे लौट आना। फिर हमें कुछ प्रयत्न करना होगा।"

सभी मैदान में तलाश करते रहे किन्तु गायें शाम तक नहीं लौटीं। वे न जाने कहाँ खो गई थीं। यह बहुत विचित्र लग रहा था। परहंसा के घर एना मेरी रोजी के लिये चीख-चिल्ला रही

थी और नन्हा हंस इतना दुखी था कि कुछ भी खाता नहीं था। ओल पुरुषोचित साहस दिखाने का प्रयत्न कर रहा था किन्तु कुछ देर बाद वह भी इतना दुखी हो गया कि उसने कुछ न खाया और अकेला बाहर चला गया। सभी रोज़ी के लिए दुखी थे।

रात्रि के भोजन के पश्चात् सब लोग यह निश्चय करने के लिए कि क्या करना चाहिए परहंसा के घर गये। अंधेरा अधिक हो गया था और तेज आंधी चल रही थी जिस से लम्बी-लम्बी घास हिल रही थी। कितनी विचित्र शाम थी, वे सब मौन थे। वे सभी यह सोच रहे थे कि कोई गायों को रहस्यपूर्ण ढंग से ले गया है किन्तु कोई भी यह कहना न चाहता था।

आखिर सैम सोलम ने कहा—"यह इंडियनों का ही काम है। वे गायों को लेने के लिए लौट आये होंगे। विश्वास करो, मैं ठीक कह रहा हूँ।"

लोगों ने इस बात पर जितना अधिक विचार किया उन्हें इस में उतना ही अधिक सत्य प्रतीत हुआ। उन्हें तो इस बात पर आश्चर्य हुआ कि उन्होंने पहले यह बात क्यों नहीं सोची। और यदि इंडियन गायों को ले गये हैं तो परहंसा को जाकर उन्हें ढूंढना चाहिए क्योंकि वह उनका मित्र है। जब उन्होंने यह कहा तो परहंसा को बहुत क्रोध आया। उसने समझा वे सब मूर्ख हैं और चलने से पूर्व उसने कुछ ऐसी ही बात उनसे कह भी दी।

परन्तु घर पर भी स्थिति वैसी ही खराब थी। किसी को भी नींद न आई। नन्हा हंस इतना चीख चिल्ला रहा था कि परहंसा उठ बैठा और उससे बातें करने लगा। "चिन्ता मत करो, बेटा" वह बोला, "मुझे पता है कि गायें कहाँ हैं। मैं कल सबसे पहले घोड़ा ले कर उन्हें लाने जाऊँगा।"

"क्या उन्हें इंडियन ले गये हैं ?"

"नहीं, बिल्कुल नहीं। वे अच्छे इंडियन थे। तुमने स्वयं तो

उन्हें देखा था।"

अब नन्हे लड़के का मन कुछ स्थिर हुआ और वह बाकी रात आराम से सोने के लिए बिस्तर पर चला गया। किन्तु अब भी वह रोज़ी के लिए बहुत दुखी था।

अगले दिन प्रातः ही परहंसा जाने के लिए तैयार हो गया। बैरेट ने उसका नाश्ता तैयार किया। वह रात भर जागती रही थी। वह सोचती थी कि हमारी गायों को शैतान ले गया है, क्योंकि हम इस निर्जन स्थान पर आकर रहने लगे हैं जहाँ कुछ भी छिपाया नहीं जा सकता। और अब मेरा पति गायों को वापस करने के लिये जा रहा है। कहाँ जा रहा है वह ? उसे वहाँ कितना समय लगेगा ? अब तो उसे और भी अधिक विश्वास हो गया था कि यह स्थान उनके रहने के लिये उपयुक्त नहीं है। यदि गायें न लौटें तो संभवतः परहंसा भी इस बात को अनुभव कर ले।

"तुम्हारा जाना गलत होगा"—आखिर बैरेट ने आवेश में कहा, "तुम्हारे जाने पर मैं अकेली रह जाऊँगी। तुम कब वापस आओगे ? शायद तुम्हें पता नहीं। और कोई तुम्हारे साथ क्यों नहीं जाता ? गायें तो सभी की गुम हुई हैं।"

इस काम के लिए हंस ओलसा के सिवाय और कोई इतना अच्छा नहीं और वह घास-भूसा संभालने में व्यस्त है। कोई बात नहीं यदि हम गायें वापस लाना चाहते हैं तो मुझे जाना ही चाहिए।"

अब बैरेट रो पड़ी—"किसी और को जाने दो और तुम मेरे पास रहो।"

"इसका कोई लाभ नहीं बैरेट ! मुझे जाना ही चाहिए। तुम तो बहुत अच्छी हो।" परहंसा को विश्वास न हुआ कि उसकी पत्नी ऐसी बात कह रही है। वह स्वयं उसे छोड़ना नहीं चाहता था। पहले सदा वह समझाने पर समझ जाया करती थी। किन्तु उसे तो जाना ही था, चाहे बैरेट के मन पर कुछ भी बीते।

वह जाने ही वाला था कि उसे अकस्मात् बिल्कुल निकट हंस ओलसा की आवाज़ सुनाई दी—"क्यों क्या बात है ?"

"हमने सोचा है कि गायें बिग्राना चाहती थीं इसीलिए चली गई हैं। क्या तुम मेरा मतलब समझ गये हो ?"

परहंसा हंस पड़ा—"यही बात तो मैंने सोची थी। मैं बताऊं, मैं उन्हें कहां ढूंढने जा रहा हूं। मैं पूर्व में ट्रांडर की बस्ती वालों से पता करूंगा कि उन्हें गायों के बारे में कुछ पता है अथवा नहीं। इस लिए पता नहीं मैं कब तक लौटूं। किन्तु मित्र, तुम काम में लगे रहो और आज रात सोरीना को बैरेट के पास भेज दो ताकि वह अकेलापन न अनुभव करे।"

उसने घोड़े पर सवार होकर घर के पास का एक चक्कर लगाया और अन्दर से आने वाली आवाज़ को सुनने का प्रयत्न किया और फिर वह चला गया। बैरेट उसे पीछे से देखती रही। ज्यों-ज्यों वह दूर जा रहा था उसका आकार छोटा होता जाता था। आखिर वह आंखों से ओझल हो गया और बैरेट फूट-फूट कर रो पड़ी।

जब अन्य लोगों को पता लगा कि परहंसा कहां गया है, तो उन्होंने स्वयं कुछ न किया, प्रत्युत यही निश्चय किया कि उसके लौटने की प्रतीक्षा की जाय। टानसेटन का यही विश्वास था कि इंडियन गायों को ले गये हैं। वह समझता था कि इंडियनों को ढूंढने की बजाय ट्रांडर्स के पास जाने में परहंसा ने मूर्खता की है। आखिर एक उसी ने तो इंडियनों के प्रति मैत्री का व्यवहार किया था। यह सब उसी की गलती थी।

उस दिन शाम को सभी लोग थोड़ी देर बैरेट के पास बैठने के लिए गये। किन्तु वह मौन और अपने ही विचारों में खोई हुई थी। वह यह न समझ सकी कि क्यों केवल परहंसा गायों को ढूंढ़ने के लिए गया है जब कि अन्य लोग बैठे बातें बना रहे हैं। आखिर उन लोगों की भी तो गायें गुम हुई हैं। उसने अपने ये विचार लोगों पर प्रकट

भी कर दिये किन्तु कोई भी उसका उत्तर न दे सका। शीघ्र ही वे लोग चले गये और बैरेट अकेली रह गयी।

अगले दिन लड़के सारा दिन घर की छत पर बैठे रहे, और आखिर मध्याह्न पश्चात् नन्हे हंस ने पुकार कर कहा—"पिता आ रहे हैं। वह देखो उधर।" ओल ने भी पुकारा और सबको बताने के लिए भाग गया। सब के पहले वह माँ के पास गया और बोला—"पिता अपने साथ गायें भी ला रहे हैं।"

सब मित्र परहंसा के घर के बाहर खड़े उसकी प्रतीक्षा करने लगे। उसके साथ न केवल उनकी चार गायें थीं वरन् उनके पीछे एक और भी थी। जब वह निकट आया तो उन्होंने देखा कि वह पाँचवीं गाय नहीं थी वरन् सांड था। उसने यह व्यवस्था कर ली थी ताकि गायें पुनः साँड की तलाश में न जायें। परहंसा स्वयं बहुत थका हुआ और धूल से अटा पड़ा था। वह सबसे पहले बैरेट के पास गया और उसे अपनी छाती से बंधा बक्स उतार कर दिया जिसमें मुर्गी के कुछ बच्चे थे। "ये लो अपने मुर्गी के बच्चे, बैरेट," उसने प्रयत्नपूर्वक कहा, "आशा है ये जीवित हैं।"

अन्य लोग उससे बहुत से प्रश्न पूछना चाहते थे किन्तु वह इतना अधिक थका हुआ था कि बोल भी न सकता था। साँड ट्रांडर्स की बस्ती से साथ आ गया था जहाँ उसे गायें मिली थीं। "मैंने बस्ती वालों से कहा कि हम साँड को एक वर्ष अपने पास रखने के लिए दस डालर देंगे। जिसका मतलब है कि प्रत्येक परिवार को ढाई डालर देने पड़ेंगे। परन्तु नित्य प्रति गायों को ढूंढ़ने की अपेक्षा यह अधिक सुगम है।

अब सब ने अपने चतुर परहंसा पर गर्व अनुभव किया।

भाग तीन

: १ :

उस ग्रीष्म काल में परहंसा ने न तो कभी आराम किया और न ही कभी उसे थकावट हुई। वह यथाशक्ति देर तक काम करता रहता और फिर गहरी नींद सो जाता। अगले दिन वह जागते ही पुनः कठिन परिश्रम के लिए तैयार हो जाता। उसे अपने सारे काम में रुचि थी। वह बड़े-बड़े स्वप्न देखने लगा था। उसके पास संसार में सबसे अच्छी एक सौ साठ एकड़ भूमि थी। "क्यों न किसी दिन मेरे पास इससे भी अधिक भूमि होगी" वह सोचा करता। वह और भूमि चाहता था किन्तु उसकी सर्वप्रमुख इच्छा थी कि वह बैरेट के लिए एक मकान बनाये। वह मकान इतना बड़ा और इतना सुन्दर हो जिसकी बैरेट ने कल्पना भी न की हो। वह सोचा करता कि वह फूलों और फलदार वृक्षों से भरा एक बड़ा बाग लगवायेगा जिसके वृक्षों की छाया उसके सुन्दर और हरियाली भरे मकान पर पड़ा करेगी। न कभी उसके हाथ निश्चल रहते थे और न मस्तिष्क ही। चारों ओर सब कुछ इतना उत्साहवर्द्धक जो था। यहाँ का जीवन उसके लिये अत्यधिक उत्साहपूर्ण था।

एक दिन जब ओल और हंस घर आये तो वे केवल बत्तखों के ही बारे में बातें कर रहे थे। उन्होंने मैदान में बहुत दूर तक सैर की थी जहाँ उन्हें एक बड़ा तालाब मिला था जिसमें हजारों बत्तखें थीं। वे बत्तखें ऐसी भोली थीं कि कोई भी चाहे उन्हें पकड़ सकता था। उन्हें कैसे पकड़ा जाय? ये लड़के तो बस यही बातें करते रहते थे। किन्तु उनके पास बन्दूक की थोड़ी सी ही गोलियाँ थीं जिन्हें वे बत्तखों के शिकार में खर्च न कर सकते थे। वे सोचते थे

अब क्या किया जाय ? हर रविवार को वे बत्तखों को देखने चले जाते और यही सोचते रहते कि किस प्रकार उनका शिकार किया जाय।

एक रविवार को परहंसा हंस के साथ बत्तखों को देखने के लिए गया। ओल को घर पर अपनी माता के पास ठहरना पड़ा, जिस से वह बहुत क्रुद्ध हो गया। किन्तु परहंसा ने कहा कि उन्हें बारी-बारी से जाना होगा और हंस की बारी सबसे पहले है।

जब वे तालाब के पास पहुँचे तो हंस के हृदय में इतने भाव उमड़ रहे थे कि वह बोल भी न सका। वह बार-बार पिता से पूछता कि हम बत्तखों को कैसे पकड़ सकते हैं। परहंसा को स्वयं पता नहीं था किन्तु उसने लड़के को वचन दिया कि वह इस बारे में विचार करेगा और कोई रास्ता निकालेगा। फिर वे घर चले गये। हंस आगे-आगे भागता जा रहा था किन्तु परहंसा धीरे-धीरे चल रहा था और अपनी तथा पड़ौसी की भूमि में से गुज़रते हुए आनन्द का अनुभव कर रहा था।

तब उसे एक नई बात का पता लगा। वह टानसेटन की भूमि का चक्कर लगाते हुए उसकी प्रशंसा कर रहा था कि तभी उसका पाँव एक निशान की लकड़ी से टकराया जो लम्बी घास में छिपी पड़ी थी। क्या टानसेटन ने यहाँ भी निशान गाड़ दिया है ? वह उसे देखने के लिये झुका तो निशान को देखकर वह अपनी दृष्टि पर विश्वास न कर सका। निशान पर टानसेटन का नाम कहीं न था। उस पर लिखा था "ओ हारा।" यह कैसे हुआ ? परहंसा यह सोचने के लिये नहीं रुका। वह तेज़ी से हंस ओलसा की भूमि की ओर गया और वहाँ घास में निशान की लकड़ी की तलाश करने लगा। निश्चय ही यहाँ भी निशान था। उसकी आँखों में भी बैरेट की तरह आंसू आ गये। क्योंकि इस निशान पर 'हंस ओलसा' नहीं, वरन् 'जो गिल' लिखा था। वह सोचने लगा यह क्या हो गया ?

अकस्मात् उसे ऐसा लगा जैसे उस पर बुढ़ापा छा गया हो। उसने दूसरों की भूमि देखी और फिर अपनी भूमि में भी निशान की तलाश की ; किन्तु वहाँ उसे कुछ नहीं मिला। अंधेरा होने तक वह इस प्रकार के निशान की खोज करता रहा और जब घर लौटा तो वह थकावट अनुभव कर रहा था और इतना उदास था जितना पहले कभी नहीं हुआ था।

परहंसा आराम से घर नहीं बैठ सका। उसकी समझ में कुछ नहीं आ रहा था। सोच रहा था शायद शैतान उनके पीछे लगा हुआ है। किन्तु मेरी भूमि में निशान क्यों नहीं मिला। वह कुछ न समझ सका और जो कुछ उसने देखा था उसको किसी को बता भी न सकता था। वह चुपचाप घर के बाहर बैठ गया। लड़के बत्तखों के बारे में बातें करते रहे। बैरेट भी उससे बोली, किन्तु उसने कुछ न सुना। वह पत्थर की दीवार की तरह मौन बैठा रहा। हंस को विश्वास था कि वह यही सोच रहा है कि बत्तखों को कैसे पकड़ा जाय और इस कल्पना से हंस का मन बहुत प्रसन्न था।

बैरेट ने देखा परहंग्रा अधिकाधिक मौन हो गया है। उसे इस स्थिति में देखकर बैरेट को बहुत दुःख हुआ, किन्तु उसकी समझ में न आता था कि क्या कहे। परहंसा बिल्कुल बदला हुआ था। रात के भोजन के पश्चात् वह अपने दोनों बच्चों को लेकर अपनी भूमि के पश्चिम की ओर सैर करने चला गया, किन्तु परहंसा ने अपने स्वभाव के प्रतिकूल उनसे कोई बात न की। उसने उनसे केवल इतना कहा कि वे ध्यानपूर्वक वहाँ लकड़ी के निशान की खोज करें और किसी भी चीज़ को बिना देखे न छोड़ें। उसने कहा—"मैंने यहाँ एक निशान गाड़ा था, किन्तु वह अब मिल नहीं रहा।"

"आपने वह निशान यहाँ कब गाड़ा था ?" ओल ने पूछा। परन्तु परहंसा ने उसकी बात न सुनी। वह और ही बातों के बारे में सोच रहा था।

अंधेरा होने तक व निशान की खोज करते रहे। उन्होंने कई बार भूमि के चक्कर लगाये। लड़कों ने देखा कि उनके पिता कुछ बदले हुए हैं। किन्तु जब उन्होंने सब जगह देख ली और कोई निशान न मिला तो उसके चेहरे पर प्रसन्नता की लहर दौड़ गई और वह पुनः मुस्कराने लगा। उसने प्रसन्नतापूर्वक कहा—"तब तो गायों ने निशान को गिरा दिया होगा।"

बैरेट धीरे-धीरे यह समझ गई कि परहंसा कुछ ऐसी बातों के बारे में सोच रहा है जो वह किसी को न बतायेगा, यहाँ तक कि उसे भी नहीं। जब बैरेट उससे बात करती तो ऐसा प्रतीत होता कि वह सुन नहीं रहा। उसने बहुत-सी रातें जाग कर काट दीं। वह बिल्कुल बदल गया था। आखिर कारण क्या है ? उसने सोचा।

सप्ताह भर उसकी यही स्थिति रही। एक दिन प्रातः वह बहुत सवेरे जाग पड़ा और बाहर चला गया। बैरेट उसके पीछे-पीछे बाहर गई और उसने देखा कि हल और बैल अभी पशुशाला में ही हैं, किन्तु परहंसा चला गया है। बैरेट को बहुत अकेलापन महसूस हुआ क्योंकि परहंसा ने अपनी व्यथा उसे नहीं बताई थी। सुबह का सारा समय बीत गया किन्तु वह नहीं लौटा।

उस सुबह परहंसा घर से दूर बहुत कार्यव्यस्त रहा। यह तसल्ली कर लेने के बाद कि वह अकेला है उसने भूमि में से निशान निकाल फेंके और सावधानी से सुराखों में मिट्टी भर दी। फिर उसने उन स्थानों पर मिट्टी के ऐसे टुकड़े रख दिये जिन पर वैसी ही घास उगी थी जैसी आस-पास उगी हुई थी। उन स्थानों को देखकर कोई भी यह नहीं कह सकता था कि वहाँ कोई निशान गाड़ा हुआ था जिसे परहंसा ने निकाल दिया है।

वह नाश्ते के लिये घर आया। बैरेट ने उसे मकान में प्रवेश करने से पूर्व पशुशाला में कुछ रखते हुए देखा। वह फिर बदला हुआ और अपनी सामान्य प्रकृति के अनुरूप दिखाई दिया। नाश्ता

करते ही अपने लड़कों को साथ लेकर खेत में हल जोतने के लिये तैयार हो गया।

बैरेट उन कपड़ों को ढूंढने के लिये पशुशाला में गई जो उसने सीने के लिये वहाँ रखे हुए थे। परहंसा ने वे निशान कपड़ों के पीछे छिपाये थे। बैरेट की समझ में न आया कि वह क्या हैं। उन पर ऐसे आश्चर्यजनक नाम थे जिनसे प्रतीत होता था कि वे नाम वस्तुतः लोगों के नहीं हैं। तो फिर वे क्या हैं ? वह कपड़े सीने के लिए घर चली गई। किन्तु उन निशानों के बारे में ही सोचती रही।

वह उनके बारे में जितना सोचती उतनी ही उसकी चिन्ता बढ़ती। परहंसा उन निशानों को भूमि से निकालकर अपनी पशुशाला में रख गया था। ऐसा क्यों ? बैरेट ने सोचा, वह उसके बारे में पूछेगी, किन्तु जब वह खाना खाने घर आया तो वह फिर पूर्ववत् गम्भीर था और बैरेट उससे कोई बात न कर सकी।

उस रात भोजनोपरान्त बैरेट ने उसे पशुशाला में जाकर उन लकड़ियों को निकालते हुए देखा। उसने ध्यानपूर्वक प्रत्येक निशान के छोटे-छोटे टुकड़े कर उन्हें आग जलाने के लिये तैयार कर लिया और फिर उसने उन्हें जला दिया। बैरेट को अपनी दृष्टि पर विश्वास न हुआ। वह जानती थी कि किसी अन्य व्यक्ति के निशान जलाने से अधिक बुरी बात कोई नहीं हो सकती। यह तो ऐसा ही था जैसे कोई उसकी भूमि उससे छीन ले जाय। बैरेट की समझ में नहीं आया कि वह क्या करे। कैसे व्यक्ति के साथ उसने विवाह किया है ? वह सोचने लगी कि वह अधिक दिन उसके साथ जीवन न बिता सकेगी।

: २ :

फिर से परहंसा प्रातःकाल से लेकर रात्रि तक निरन्तर काम करने लगा, किन्तु वह अब प्रसन्न और शान्त न था। वह सदा उन

लोगों के बारे में सोचता रहता था जिन्होंने उस भूमि में निशान गाड़े थे। क्या वे लौट आयेंगे ? परहंसा यह न जानता था कि केवल निशान गाड़ देने से कोई अन्तर नहीं पड़ता। यदि उन लोगों का इस भूमि पर वास्तविक अधिकार था तो टानसेटन और हंस ओलसा को उस पर अधिकार न करने दिया जाता। किन्तु उसे इस बात का पता न था।

वैरेट भी पहले जैसी प्रसन्न न थी। वह समझती थी कि परहंसा ने लोगों के निशान उखाड़े हैं और वे दूसरे की भूमि में रह रहे हैं। किन्तु धीरे-धीरे उसने इस बारे में विचार करना कम कर दिया और उसके विचार इस बात पर केन्द्रित रहने लगे कि यदि किसी को इस बात का पता लग गया तो क्या होगा। परहंसा तो अंग्रेज़ी बोल भी न सकता था। उनका क्या बनेगा ? वह बार-बार यह प्रश्न अपने से पूछा करती।

उन्हें इस मैदान में रहते हुए चार महीने हो गये थे। अब वैरेट उन निशानों के बारे में नहीं सोचती थी। वहाँ प्रत्येक व्यक्ति के लिये भूमि थी, किन्तु और कोई आया ही नहीं। वही अकेले वहाँ बसे हुए थे।

फिर एक दिन कुछ अपरिचित लोग आये। वहाँ बसने वाले सभी लोग उन्हें देखने गये। ऐसा लगा कुछ और लोग वहाँ बसने के लिये आये हैं। वे चार आदमी थे। पूर्व से आ रहे थे और उन्हें सत्तर मील दूर जाना था। पहले तो परहंसा ने सोचा कि यही वे लोग हैं जिन्होंने वहाँ निशान गाड़े थे, किन्तु जब उसे पता लगा कि वे कौन हैं तो उसे सन्तोष हुआ। वे लोग जर्मन थे। सभी को यह जानकर प्रसन्नता हुई कि वे सत्तर मील दूर जा रहे थे। तब तो इस मैदान में लोग उनसे भी आगे बसने जा रहे थे।

लगभग एक सप्ताह बाद पूर्व की ओर से और गाड़ियाँ आईं। जिस समय वहाँ के व्यक्तियों ने उन्हें देखा अंधेरा हो चुका था।

"ये तो आगन्तुक प्रतीत होते हैं"--परहंसा ने हंस ओलसा से कहा। किन्तु वे गाड़ियाँ घरों के पास नहीं ठहरीं। वे पास से गुज़र रहे थे। परहंसा को विश्वास था कि यही वे लोग थे जिनकी वह प्रतीक्षा कर रहा था। वह मौन हो गया और उसका हृदय क्रोध से भर गया।

वे अपरिचित लोग हंस ओलसा की भूमि के निकट रुके और वहाँ उन्होंने आग जलाई। परहंसा यह देखना चाहता था कि वे लोग किस प्रकार के हैं। "चलो चलें और उन्हें कुछ आलू बेचें। तो क्या चला जाये ?" उसने पूछा। अन्य लोग आखिर उससे सहमत हो गये। टानसेटन उनके पास गया क्योंकि वह अंग्रेज़ी जानता था और परहंसा भी गया क्योंकि उसे आलू बेचने थे। टानसेटन नित्य की ही तरह डरा हुआ था, किन्तु परहंसा ने उसे रुकने नहीं दिया।

उन्होंने देखा कि वे दस पुरुष थे और चार स्त्रियाँ। टानसेटन उनसे बातें करने लगा। परहंसा कुछ भी समझ न सका, किन्तु उसे पता लग गया कि यही वे लोग थे। अन्त में टानसेटन ने परहंसा से कहा—"वे कहते हैं कि मेरी और हंस ओलसा की भूमि उनकी है।" जब वह उनसे बातें कर रहा था, वह बहुत ऊँचे स्वर में और तेज़ बोल रहा था। आखिर परहंसा ने उसे रोका और धीमे बातें करने के लिये कहा।

"वे कहते हैं कि सारी भूमि उनकी है। वे सिपाही थे अतः उन्होंने अपना अधिकार जमाने के लिए भूमि पर कुछ बोया नहीं। वे कहते हैं कि पिछली गर्मियों में, हिमपात के अन्त तक और इस वसंत ऋतु के आरम्भ में भी वे यहाँ थे। वे मार डालने और क़ैद करवाने की बातें करते हैं। अतः हम क्या करेंगे ?"

"उनसे कहो कि अपने कागज़ दिखायें"—परहंसा ने कहा।

"वे कहते हैं कि उनके पास कागज़ हैं। वे प्रातः उन्हें

दिखायेंगे ।"

"तो फिर हम भी ग्राज रात तो घर चले चलें । क्या उन्होंने निशान भी गाड़ रखे हैं ?"

"वे कहते हैं कि उन्होंने निशान गाड़ रखे हैं ।" टानसेटन इतना डर गया कि वह रोने को ही था । परहंसा ने ग्रनुभव किया कि इससे पूर्व कि वह रो पड़े उन्हें घर लौट जाना चाहिये । वे हंस ग्रोलसा को सुबह बतायेंगे ग्रौर फिर इन ग्रपरिचित लोगों से जो कुछ कहना होगा कह देंगे ।

ग्रब जबकि परहंसा को पता लग गया कि वे लोग किस प्रकार के हैं तो उसने संतोष ग्रनुभव किया । वह समझ गया था कि उनके पास कागज़ नहीं हैं । यदि उनके पास होते तो वे तुरन्त दिखा देते । वह यह भी जान गया कि वे उनसे झगड़ा नहीं करेंगे चाहे वे कितनी भी ग्रावेशपूर्ण बातें कर रहे थे । जब वह घर ग्राया तो बैरेट को उसके चेहरे पर भाव परिवर्तन देखकर प्रसन्नता हुई । उसने ग्रनुभव किया कि उन्हें कोई खतरा नहीं है ।

उसने परहंसा से ग्रपरिचित लोगों के बारे में पूछा किन्तु लड़के इतना शोर मचा रहे थे कि परहंसा ने उसकी बात न सुनी । वे इन ग्रपरिचित लोगों के बारे में सब कुछ जानना चाहते थे । परहंसा इतना प्रसन्न था कि उसने उनके सब प्रश्नों के परिहासपूर्ण उत्तर दिये । उसने उन्हें ग्रपरिचित ग्रागन्तुकों के बारे में सब कुछ बता दिया ।

ग्रगली सुबह वह प्रकाश होने से पहले ही जाग पड़ा । उसने थोड़ा सा खाना खाया ग्रौर फिर सोलम परिवार के लोगों को जगाने गया । हंस ग्रोलसा के घर जाते हुए उसने उन्हें सारा वृत्तान्त सुनाया । हेनरी उनके लिये बातचीत करेगा क्योंकि टानसेटन शीघ्र ग्रावेश में ग्रा जाता है ग्रौर सैम, परहंसा तथा हंस ग्रोलसा के लिए उनकी बातचीत का नार्वे की भाषा में ग्रनुवाद करेगा । सोलम

परिवार के लड़के सोच रहे थे कि प्रायः खाली पड़ी हुई भूमि के लिए लड़ना तो बहुत ही हास्यास्पद है।

हंस ओलसा बहुत विशालकाय व्यक्ति था; वह इतना लम्बा था कि लोग ठिठककर उसे देखने लगते थे और वह जितना बड़ा था उतना ही शक्तिशाली था। वह हर बात पर धीरे और ध्यानपूर्वक विचार किया करता था। किसी बात को सोचने में उसे बहुत समय लगता था किन्तु जब वह कार्यशील होता तो बहुत तेज़ी से काम करता था। जब परहंसा उसके घर आया तो सोरीना भी जाग पड़ी थी और परहंसा उसके सामने अपरिचित आगन्तुकों की बात नहीं करना चाहता था। किन्तु उसके पास समय थोड़ा था और वह जानता था कि सोरीना अच्छी स्त्री है और अधिक वाचाल नहीं है। अतः उसने सारी बात कह दी। उसने कुछ बातों को बार-बार दोहराया ताकि हंस ओलसा भली प्रकार समझ जाये। आखिर वह परहंसा के साथ जाकर आइरिश लोगों से बातचीत करने के लिए तैयार हो गया। उसका दस्तावेज़ उसके हाथ में था, जिसमें सब कुछ स्पष्ट लिखा हुआ था।

वे सब इकट्ठे चल पड़े। टानसेटन नित्य प्रति की तरह घबराया हुआ था और बहुत तेज़ी से बोल रहा था। वह अपना दस्तावेज़ भी साथ नहीं लाया था। उसने सोचा कि यदि वे उसका दस्तावेज़ ही छीन लें तो फिर वह क्या करेगा। वह इतना दुखी दिखाई देता था कि कोई भी उसे कुछ न कह सका, किन्तु परहंसा ने किसी तरह उसे दस्तावेज़ लाने के लिए लौटा ही दिया। फिर परहंसा ने उसे कहा कि हेनरी सोलम ही अधिकतर बातचीत करेगा। उसे यह बात पसन्द तो न आई किन्तु वह इतना चिन्तित था कि अधिक कुछ न कह सका।

शिविर के सब लोग उठ चुके थे और काम में लगे हुए थे। उन्होंने न तो इन निवासियों की ओर देखा और न ही कुछ कहा।

हेनरी सोलम उनके पास गया और उसने उनसे पूछा कि यह क्या बात है कि वे दूसरे की भूमि का दावा कर रहे हैं। आगन्तुक खिल-खिलाकर हंस पड़े किन्तु उनकी हँसी में कमीनापन लक्षित होता था। "आपके कागज़ कहाँ हैं?" हेनरी ने उच्च स्वर में पूछा। उन्होंने उत्तर दिया कि उनके कागज़ बन्द पड़े हैं और इस समय निकाले नहीं जा सकते, किन्तु वे अपने गाड़े हुए निशान दिखा सकते हैं।

"बहुत अच्छा" परहंसा ने कहा—"तो हमें अपने निशान ही दिखाओ।" वे सब हंस ओलसा की भूमि की ओर चल पड़े। जब वे उस स्थान पर पहुँचे जहाँ निशान गाड़ रखे थे तो परहंसा को यह देखकर बहुत प्रसन्नता हुई कि वहाँ निशान गाड़ने का चिह्न तक न था। वहाँ की भूमि आस-पास की भूमि की ही तरह थी। आइरिश लोगों को कोई गड़ा हुआ निशान न मिला। वे तलाश करते रहे, किन्तु उन्हें कुछ न मिला। वे अधिकाधिक क्रुद्ध हो गये। शीघ्र ही गाड़ियों में से और लोग आ गये और वे सब आपस में बातें करने लगे। वे हंस ओलसा की ओर देख रहे थे और उसे कोस रहे थे। हंस ओलसा समझ रहा था कि वे उसे झूठा और चोर कह रहे हैं।

वे निवासी आइरिश लोगों के साथ उनकी गाड़ियों की ओर गये। अब दस के दस आइरिश उनसे उलझने के लिए तैयार थे। उनमें से एक के हाथ में एक भारी तख्ता था। वह हंस ओलसा को बुरा-भला कहने लगा। वह बोला—"यदि तुम अपनी भलाई चाहते हो तो तुम्हारे लिये मेरी भूमि को छोड़ कर चले जाना ही अच्छा है।" तब वह आइरिश और निकट आ गया। उसने अपना लकड़ी का तख्ता ऊपर उठाया। वहाँ से हंस ओलसा के अतिरिक्त हर कोई हट गया। हंस ओलसा जब कोई निश्चय कर लेता था तो वह बहुत तेज़ी से काम करता था। उसने तुरन्त बायें हाथ से उस आदमी की बाईं कनपटी पर थप्पड़ मारा। वह आदमी ज़ोर से चीख

कर गिर पड़ा और निश्चेष्ट हो गया।

अन्य नार्वेजियन लड़ने के लिए तैयार थे किन्तु आइरिश लोग अब भी अचल खड़े थे। तब हंस ओलशा ने उस व्यक्ति को भूमि पर से उठाया और दूसरे आइरिश लोगों के सिर के ऊपर से उनके पीछे पड़ी गाड़ी के पास दे फेंका जहाँ वह पूरे ज़ोर के साथ गाड़ी से जा टकराया। तत्क्षण वे सब आइरिश दुम दबाकर भाग गये।

"अच्छा" परहंसा ने कहा—"मैं समझता हूँ कि वे हमें और कष्ट नहीं देंगे।" नार्वेजियन भी घर की ओर लौट पड़े और उनमें से टानसेटन तो पहले ही जा चुका था।

अन्ततोगत्वा आइरिश हंस ओलसा के पास वाली भूमि में बस गये। परहंसा अपने लड़कों के साथ प्रति दिन उनके पास जाया करता था और आखिर उसने उन्हें दस डालर से अधिक मूल्य के आलू बेचे। इससे वह बहुत प्रसन्न हुआ।

जो घटना घटी थी, उसके बारे में स्त्रियाँ चुप न रह सकीं और बैरेट को शीघ्र ही पता लग गया। तो यह सब परहंसा ने ही किया था। उसने सोचा कि अब उसकी समझ में आ गया है कि सारी बात क्या थी। वह यह विश्वास न कर सकती थी कि उसका पति इतना बुरा है। किन्तु उसने अब भी पति से कुछ न कहा। अब उसे पता था कि आइरिश लोगों का उस भूमि पर कोई अधिकार नहीं था। किन्तु बैरेट को इस बात पर विश्वास न हुआ कि जब परहंसा ने गड़े हुए निशान निकाले थे तो उसे यह ज्ञान न था।

आखिर परहंसा ने अन्य लोगों को बताया कि उसने क्या किया था। वे सब एक रात हँसते और गाते हुए आये और उसने उन्हें बताया कि कैसे उसे गाड़े हुए निशान मिले थे और फिर उसने उनका क्या किया था। हर किसी ने उससे कहा कि उसने बहुत बढ़िया बात की। सबने उसके साथ हाथ मिलाया किन्तु बैरेट ने कहा, "मैं जिस प्रदेश की हूँ वहाँ तो दूसरों के गड़े हुए निशान को

निकालना पाप समझा जाता है, किन्तु यहाँ मैं देखती हूँ लोगों को इस पर गर्व है।"

बैरेट की इस विचित्र बात पर सब बड़े व्यथित हुए और वे तुरन्त उनके घर से चले गये। बैरेट बाहर चली गई। परहंसा उसे ढूंढने के लिये नहीं गया और बिस्तर पर लेट गया। अगले कुछ दिन तक वे एक दूसरे से प्रायः बोले ही नहीं।

भाग चार

: १ :

पतझड़ का मौसम निकट आ गया। दिन छोटे होने लगे और उदासी छाने लगी। बैरेट अधिक मौन और व्यथित रहने लगी। उसने बहुत से दिन भावी बालक, बच्चों तथा परहंसा के लिये स्वेटर आदि बुनने में बिता दिये किन्तु जब वह बुनने के कार्य में भी व्यस्त होती थी तो निर्जन मैदान की ओर निर्निमेष दृष्टि से देखती रहती थी।

एक दिन वह अकेली बैठी खिड़की के बाहर देख रही थी। परहंसा और ओल सर्दियों के लिये लकड़ी काटने गये हुए थे। उसने उस विस्तृत मैदान में कुछ गाड़ियाँ निकट आते हुए देखीं और वह उन्हें देखने के लिए बाहर चली गई। उसे लगा कि इस भयानक स्थान पर और लोग आ रहे हैं। उसकी इच्छा हुई कि भाग कर जाय और उनसे कह दे कि यहाँ से लौट जाओ। नन्हा हंस उसके पास आया और उसने पूछा, "माँ यह क्या है?" बैरेट ने उसे आती हुई गाड़ियाँ दिखाईं। उसे लगा मैं तो उनसे बात भी न कर सकूंगी।

"दौड़कर जाओ", उसने हंस से कहा, "उनके पास जाओ और देखो तुम उनकी क्या सहायता कर सकते हो।"

हंस तुरन्त घोड़े पर चढ़कर उधर चला गया। तभी सैम सोलम बैरेट से मिलने आया। उसने भी गाड़ियाँ देखी थीं और टानसेटन से कहने जा रहा था। हंस ओलसा भी लकड़ी काटने गया हुआ था। बैरेट एना मेरी को साथ लेकर सोरीना को यह खबर देने के लिए गई।

शीघ्र ही सब लोग टानसेटन के मकान के सामने एकत्र हो गये और उसी ओर आते हुए नवागन्तुकों को देखने लगे। टानसेटन नित्य प्रति की तरह चिन्तित था। उसने कहा—"कल्पना कीजिये यदि वे अधिक कमीने आइरिश लोग हुए तो, और यहाँ मैं अकेला हूँ यह कितनी गड़बड़ है।"

नन्हा हंस भागता हुआ उनके पास आया "वे नार्वे के लोग हैं"—उसने पुकार कर कहा—"वे नार्वेजियन भाषा बोलते हैं।"

'कितनी मज़ेदार बात है' टानसेटन ने सोचा और उसमें बिलकुल परिवर्तन आ गया। "देखो कहवा तैयार करो," उसने पत्नी से कहा, "हमें इन लोगों का उचित ढंग से स्वागत करना चाहिए।" उन पाँच गाड़ियों में बीस व्यक्ति थे जो नार्वे के सोन तथा बोस प्रदेश के रहने वाले थे। उनके परिवार मिनीसोटा में थे और वे नये खेत ढूँढने के लिये निकले थे। वे शीघ्र ही पूर्व को लौट जायँगे और फिर वसंत ऋतु में परिवारों सहित आयेंगे। नार्वे निवासियों को इस निर्जन प्रदेश में देखकर उन्हें प्रसन्नता हुई किन्तु उनसे पता लगा कि वे आगे जेम्स नदी के निकट भूमि देखने जा रहे थे। टानसेटन ने प्रयत्न किया वे उनके पास ही स्प्रिंग क्रीक में बस जायँ। उसने उन्हें डकोटा प्रदेश के अन्य स्थानों के बारे में बताया जो उसने देखे थे और यह भी बताया कि सब प्रदेशों की तुलना में स्प्रिंग क्रीक क्यों सबसे अच्छा है। उसने सोचा कितना अच्छा होता यदि इस समय इनसे बातचीत करने के लिये परहंसा यहाँ होता। वह चाहता था कि चाहे कुछ भी हो ये अच्छे नार्वेजियन यहीं बस जायं।

वे लोग टानसेटन की बातों से आश्वस्त न हुए। उन्हें चहुँ ओर की निर्जनता पसन्द न आई। उस प्रदेश में तो कहीं वृक्ष भी देखने को न मिलता था। उन्होंने पूछा कि मकान बनाने और अंगीठी के लिये लकड़ी कहाँ से मिलेगी। टानसेटन अपने स्वभाव से भी अधिक तेज बोल रहा था। उसने उन्हें बताया कि जंगल निकट

ही है, भूमि बहुत ही अच्छी है और कुछ ही वर्षों में यह छोटी सी बस्ती एक बड़ा नगर बन जायगी और यहाँ से गाड़ी गुज़रा करेगी। इसके लिये अधिक प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ेगी।

उन लोगों ने उस रात अपने शिविर में भोजन करते समय इस विषय पर बातचीत की। उनमें से बहुत-सों ने स्प्रिंग क्रीक के पास ही नदी के उस पार बस जाने का निश्चय किया और आखिर बाकी लोग भी उनसे सहमत हो गये। टानसेटन ने जब यह सुना तो उसे विश्वास न हुआ। कितनी प्रसन्नता की बात थी कि उन्हें एक साथ बीस पड़ौसी मिल गये थे और वे भी नार्वेजियन।

शीघ्र ही पुरुषों को फिर शहर जाना था। बैरेट तो इस बारे में सोचना तक न चाहती थी। यद्यपि उसने परहंसा को नहीं बताया कि उसके मन में क्या है—क्योंकि वह इसे न समझता—परन्तु परहंसा उसके अधिक निकट रहने लगा और उसे इस निर्जन प्रदेश में अकेला नहीं छोड़ता था। और अब उसे एक सप्ताह के लिये जाना था। परन्तु वह जानती थी कि उसे जाना ही पड़ेगा। उन्हें सर्दियों के लिए भोजन, कपड़े तथा खेत की अन्य वस्तुओं की आवश्यकता थी। उसे ये सब वस्तुएँ अनावश्यक प्रतीत होती थीं और उसे अपने गिर्द किसी भी वस्तु पर विश्वास नहीं होता था। उसका मन प्रायः भटकता रहता था।

इस बार परहंसा, हंस ओलसा और हेनरी सोलम के साथ जा रहा था। उन्होंने निश्चय किया था कि वह टानसेटन का घोड़ा तथा गाड़ी ले जायगा और टानसेटन घर पर बैरेट तथा बच्चों की देख-भाल करेगा। आइरिश लोगों ने उससे बहुत आलू खरीदे थे और नये बसने वाले नार्वेजियनों ने और भी अधिक जिससे शहर ले जाने के लिये उसके पास काफी धन था। किन्तु उसे चीज़ें भी बहुत-सी लेनी थीं और उसे आशा थी कि उनके लिये उसके पास काफी रुपया है। उसने लड़कों को समझा दिया कि उसके चले जाने के पश्चात् उन्हें

अपनी माँ की सहायता के लिये क्या कुछ करना होगा। वे दोनों पिता के साथ जाना चाहते थे किन्तु उनका जाना संभव न था क्योंकि बैरेट को अकेला नहीं छोड़ा जा सकता था।

परहंसा और धन कमाना चाहता था। उनके पास अपने प्रयोग से फालतू आलू थे। उसने आलू से बोरियाँ भर कर गाड़ी में रखलीं और उन पर कुछ सब्जियाँ तथा कुछ बढ़िया फल रख लिये। उसने सोचा कि इन्हें नगर में बेच लूंगा।

इस यात्रा में उन्होंने एक विचित्र आनन्द का अनुभव किया। उन्होंने देखा कि पहले जो मैदान सर्वथा निर्जन थे वहाँ जगह-जगह नये मकान बन गए थे। उन्होंने पहली रात पड़ाव डाला और ताज़ी मछली तथा भुने हुए आलुओं का भोजन किया। इससे अच्छा क्या हो सकता था ? अगले ही दिन वे नगर पहुँच गये जहाँ कुछ दुकानें थीं।

वे दिन भर के लिये अलग-अलग स्थानों की ओर चले गये। परहंसा घोड़ा गाड़ी लिये घर-घर जाकर मुस्कराते हुए पूछने लगा कि किसी को आलू चाहिएँ। किन्तु उसे ग्राहक ढूंढ़ने में बहुत समय लग गया। आखिर उस नगर के दूसरे किनारे पर एक झोपड़े में एक अच्छा ग्राहक मिल गया। वह एक विधवा थी जिसके दो लड़के थे जो एक छोटा-सा मुर्गीखाना चलाते थे।

उन्होंने थोड़ी देर बातचीत करने के पश्चात् तीन चूज़ों के बदले में नौ बाल्टी आलू का सौदा कर लिया। उस विधवा ने परहंसा को शाम का भोजन वहीं करने के लिये आमंत्रित किया और वह मान गया। जब वह मकान के अन्दर गया तो उसे यह देखकर अत्यधिक प्रसन्नता हुई कि दीवारों पर हृदयाकर्षक चमकदार सफेदी की हुई थी। "तुमने इस कच्चे झोपड़े की दीवारों पर सफ़ेदी कैसे की है ?" परहंसा ने पूछा। विधवा ने उसे बताया कि चूना और पानी मिलाकर दीवारों पर इस तरह की चमकदार सफेदी की जाती है

और परहंसा ने निश्चय किया कि खाना खाने के बाद सबसे पहले कुछ चूना खरीदूंगा।

उसने जी भर कर भोजन किया और फिर सीधा कबाड़ी की दुकान पर चला गया। उस दुकान का मालिक भी नार्वेजियन था और वह परहंसा के सारे आलुओं का सौदा करने के लिए तैयार हो गया। बदले में उसने परहंसा को उसकी आवश्यकतानुसार चूना, उसकी आशा से भी अधिक लकड़ी तथा कुछ कीलें दे दीं। उसने सोचा इस लकड़ी से बच्चे के लिए एक छोटा-सा पालना बनाऊंगा। जब परहंसा बड़ी दुकान पर पहुंचा तो उसके साथी सामान खरीद चुके थे और उसे गाड़ियों में रख रहे थे।

परहंसा ने बहुत-सी वस्तुएं खरीदीं किन्तु शीघ्र ही उसके पैसे समाप्त हो गये। उसने जाल बनाने के लिए बहुत लम्बी रस्सी खरीदी। उसके साथी समझ न सके कि वह रस्सी का क्या करेगा क्योंकि अब तो वे मछुए नहीं थे। सर्दियों के लिए जिन बड़ी-बड़ी वस्तुओं की उन्हें आवश्यकता थी उन्हें खरीदने से पूर्व उसने बैरेट के लिए कुछ छोटी-मोटी वस्तुएं भी खरीदीं।

तत्पश्चात् उन्होंने घर के लिए प्रस्थान किया। समुद्रीय जीवन के अभ्यस्त उन लोगों को ये विस्तृत निर्जन मैदान कितने प्रिय लगते थे और उन मैदानों में गाड़ियों से यात्रा करते हुए उन्हें विशेष आनन्द का अनुभव हो रहा था।

परहंसा के लड़के को ऐसा प्रतीत हो रहा था कि पिता को गये बहुत समय हो गया है क्योंकि उन्हें दिन भर मां के पास घर पर ही रहना पड़ता था जो कभी कोई बात ही न करती थी। वे परस्पर झगड़ते रहते थे और पिता के लौटने के दिन गिन रहे थे।

बैरेट मौन रहती थी क्योंकि वह निरन्तर यही सोचती रहती थी यहां रहना कितना भयानक है। लड़कों का स्वभाव इंडियनों का सा बनता जा रहा था। जब भी वह लड़ते थे मां और अधिक

उदास हो जाती थी। उसे ऐसा लगता था कि इस प्रकार रहना ठीक नहीं। वे सभी पशुओं के समान बन जायेंगे। परहंसा क्यों नहीं समझता कि वह ईश्वरेच्छा के विपरीत चल रहा है। ईश्वर ने यह भूमि मनुष्यों के लिये बनाई ही न थी। वह सोचने लगी कि यहाँ से वापस कैसे चला जाये।

जब वह यहाँ से लौट चलने की बात सोच रही थी तो उसका चेहरा ऐसे नन्हे बालक जैसा दिखाई देने लगा जो कोई गड़बड़ करने की बात सोच रहा हो। उसने वह बड़ा सन्दूक खोला जो वे अपने साथ लाये थे और फिर सावधानी से उसमें वस्तुएँ रखने लगी। 'कम से कम यह काम तो पूरा हो जायेगा' उसने मन ही मन सोचा। उसने बाइबल और प्रार्थना की पुस्तक उसमें रखी और फिर हंस से कहा कि वह स्कूल की पुस्तकें भी ले आए।

"माँ! यह तुम क्या कर रही हो?"

"हमें वापस जाने के लिए तैयारी आरम्भ कर देनी चाहिए। सर्दियाँ आने से पूर्व हमें वहीं लौट चलना है जहाँ अन्य लोग रहते हैं" उसने उदास भाव से उत्तर दिया।

हंस को अपने कानों पर विश्वास न हुआ। "पिता जी क्या कहेंगे?" उसने इतना ही पूछा और निश्चेष्ट तथा जड़वत वहीं खड़ा रहा।

बैरेट के गर्भ का शिशु हिलने लगा मानो वह भी लौट चलने के प्रति विरोध प्रदर्शित कर रहा था। बैरेट को लगा कि वह विवश है और बिलकुल एकाकी है। ईश्वर ने ही उसे विवश बना दिया था। वह पुनः उस निर्जन क्षेत्र का अवलोकन करने धीरे-धीरे बाहर आई। हंस भी उसके पीछे-पीछे बाहर आया और माँ से लिपट गया। फिर इस निर्जन प्रदेश के शून्य वातावरण में दोनों काफी देर तक रोते रहे।

किन्तु इसके शीघ्र बाद परहंसा तथा अन्य लोग घर लौट

आये। परहंसा बहुत ही प्रसन्न था और अनेक प्रकार की बातें सुना रहा था जिसे सुनकर सभी अपनी उदासी भूल गये। और तो और उसके लिये भोजन तैयार करती हुई बैरेट भी मुस्कराने लगी।

उन सब को बहुत काम करना था। जब बच्चे सो गये तो परहंसा ने बैरेट को बताया कि वह सफ़ेदी के लिये चूना लाया है और जाल बनाने के लिये रस्सी। उसने कहा, "मैं जाल से सियूएक्स नदी में मछलियाँ पकड़ा करूँगा और आशा है कि बत्तखों को भी पकड़ लूंगा।" इससे बच्चे चकित रह जायेंगे। बैरेट भी सो गई और वह रात भर जाल बुनता रहा। अगले दिन प्रातः जाल तैयार हो गया। नाश्ते के तुरन्त बाद परहंसा फिर जाल तथा घोड़ा लेकर चला गया। साथ ही वह वहाँ निकट रहने वाले लोगों के लिये कुछ आलू ले गया। उसे अगले दिन लौटना था। बैरेट फिर उस छोटे से घर में अकेली रह गई। किन्तु इस बार उसे इतना बुरा नहीं लगा।

: २ :

अक्तूबर के आरम्भ में कुछ बर्फ गिरने लगी। यह बर्फ अधिक टिकने वाली न थी। अब भी प्रतिदिन सूर्य दिखाई देता था और दिन भर खूब चमकता था किन्तु उसमें गर्मी न थी। संध्या तक वह क्षीण सा रहता था और फिर जब अस्ताचल में पदार्पण करता तो इसकी स्वर्णिम तथा रक्तिम रश्मियाँ आकाश को आभायमान करने लगती थीं। दिन सभी एक समान थे। उनमें कभी कोई परिवर्तन नहीं होता था। किन्तु आखिर एक दिन सूर्य के दर्शन ही न हुए। मेघाच्छन्न निर्जन मैदानों में दूर-दूर तक मौन एवं निस्तब्धता का साम्राज्य छाया हुआ था।

मध्याह्न पश्चात् पुनः हिमपात आरम्भ हुआ और सारी रात तथा फिर अगले सारा दिन बर्फ गिरती रही। बर्फ के विशाल सागर और अंधड़ के बीच वह छोटी सी बस्ती घिरी हुई थी और उसके अतिरिक्त कहीं कुछ दिखाई न देता था। सर्दियाँ आरम्भ होने से कुछ

दिन पूर्व परहंसा और उसके लड़के निरन्तर काम करते रहे थे। बैरेट ने न तो उनके काम में हिस्सा लिया और न ही तत्सम्बन्धी बातचीत में। वह अधिकाधिक मौन होती गई और अपने ही मौन तथा अंधकार-पूर्ण संसार में विचरण करने लगी।

परहंसा ने बहुत काम किया था। उसने दीवारों पर सफेदी की थी जिससे दीवारें बाहर की बर्फ के समान सफेद हो गई थीं। वह मछलियाँ पकड़ने के लिए सियूएक्स नदी पर दोनों लड़कों को साथ ले गया और वहाँ से काफी मछली पकड़ कर लाया था, जो बाहर बर्फ में लगा कर रख दी गई थीं और उसके बाद उन्हें लम्बी सर्दियों के लिये, नमक लगा कर पीपों में रख दिया गया था। परहंसा के नगर से लौटने के पश्चात् उसने जो जाल बनाया था उसे लेकर वे बत्तखों का शिकार करने भी गये थे। जब तक तालाब में बर्फ न जम गई वे हर रात वहाँ जाया करते थे और उनके पास भोजन के लिए पर्याप्त से भी अधिक बत्तखें एकत्र हो गयीं। परहंसा ने अनुभव किया कि वे राजाओं की तरह खाना खाते हैं।

इन दिनों वे अपने पड़ोसियों से अधिक मिल-जुल नहीं सके क्योंकि हर कोई परहंसा की ही तरह सर्दियों की तैयारी में व्यस्त था। एक और कारण से भी वे लोगों से मिलने नहीं जाते थे और वह यह था कि बैरेट का व्यवहार कुछ विचित्र सा हो गया था और वह मौन रहती थी। किन्तु एक दिन यह पता लगने पर कि परहंसा ने बहुत सी बत्तखें पकड़ी हैं और यह नहीं बताता कि वह कैसे उन्हें पकड़ पाया है, उसके पड़ोसी उससे कुछ बत्तखें लेने के लिये उसके पास आये।

उसके मकान में प्रवेश करते ही वे बत्तखों के बारे में तो भूल ही गये और चकित भाव से सफेद दीवारों को देखने लगे। उन्हें अपनी दृष्टि पर विश्वास न हुआ। स्त्रियों को विशेष प्रसन्नता हुई और उन्होंने बैरेट से कहा—"तुम्हारा पति कितना अच्छा है जो

तुम्हारे लिए ऐसी-ऐसी बातें सोचता रहता है।" इससे बैरेट को भी कुछ प्रसन्नता हुई किन्तु ऐसा लगता था कि कोई भी बात अब उस में परिवर्तन नहीं ला सकती। वह तो यह अनुभव करती थी कि बाहर के मैदान की तरह उसके हृदय में भी अंधकार और ठंड भरी पड़ी है।

जब मौसम बहुत खराब हो गया तो परहंसा ने भी आराम किया जिसकी उसे बहुत देर से आवश्यकता थी। वह खूब भोजन करता और सोया रहता था। इस प्रकार सोकर समय बिताना भी उसे अधिक दिन अच्छा न लगा और थोड़े ही दिनों में वह ऊब गया। प्रतिदिन एक सा मौसम रहता था। कभी-कभी कुछ लकड़ी काटने के सिवाय उन्हें और कुछ काम ही न था। निरंतर बर्फ पड़ती रही यहाँ तक कि बर्फ की ऐसी चादर बिछ गई जिससे वह दूसरे मकानों को देख भी न सकता था।

लड़कों के पास भी कोई काम न था इसलिए वे आपस में लड़ते रहते थे। कभी-कभार ही वे पढ़ने के लिए पुस्तक को हाथ लगाते थे। आखिर वे लड़के ही तो थे, उन्होंने पढ़ाई में कोई प्रगति न की।

कभी-कभी उनके मित्र आ जाया करते थे क्योंकि बैरेट अब बिलकुल बाहर न जा सकती थी। क्जेरसती ने होने वाले बालक के लिए कुछ चीजें बुनीं और सोरीना ने एक सुन्दर, लाल, नीली तथा सफेद टोपी बनाई। इन वस्तुओं को संभालते हुए बैरेट की आँखों में आँसू आ गए।

खाली बैठे रहने के कारण परहंसा को बैरेट की गतिविधि देखने का अवसर मिला। उसको देख कर उसे दुख हुआ क्योंकि वह इस बार बहुत पीली और दुबली हो गयी थी। वह सोचने लगा, 'बैरेट किसी भी प्रसव के समय इतनी मौन और उदास नहीं हुई थी। वह क्यों कम भोजन करती है, जबकि हमारे पास इतना अधिक

भोजन है ।' एक दिन उसने मछली का एक बड़ा टुकड़ा उसकी प्लेट में डाल दिया किन्तु वह थोड़ा सा खाकर मेज़ से उठ खड़ी हुई । "ओह" वह बोली—"भोजन का अधिक महत्त्व नहीं है ।"

वह रात भर प्रायः जागती रहती थी । परहंसा उससे पहले ही सो जाया करता था किन्तु प्रातः जब वह जागता तो बैरेट पहले ही उठी होती थी । एक रात उसे बैरेट के निरंतर रोने की आवाज़ सुनाई दी । उसके जागने पर वह बोली— "मुझे आशंका है कि हंस बीमार है ।" किन्तु हंस बिलकुल स्वस्थ था ।

कहाँ तो वह सदा ध्यान रखा करती थी कि वह कैसी लगती है और साफ-सुथरी रहा करती थी और कहाँ अब यह स्थिति थी कि न वह नहाती थी और न ही कभी बालों में कंघी करती थी । उसके वस्त्र गंदे और फटे हुए रहते थे । परहंसा की समझ में न आया कि सदा साफ रहने वाली बैरेट क्यों सर्वथा बदल गई है ।

परहंसा ने मन को समझाने का भरसक प्रयत्न किया, किन्तु यह कैसे हो सकता था कि वह बेकार बैठा हुआ उन सब छोटी-मोटी बातों की ओर ध्यान न देता जो नित्य प्रति होती रहती थीं । वह चाहे कैसे भी उससे बात करता, कुछ भी उससे कहता, किन्तु ऐसा प्रतीत होता था मानो वह किसी और ही लोक में विचरण कर रही है । आखिर उसने यह अनुभव कर लिया कि बैरेट नहीं बदल सकती और वह भविष्य के उन स्वप्नों को नहीं देख सकती जो वह देखा करता है । भला ऐसी स्थिति में वह क्या कर सकता है ?

एक और बात यह हुई कि वह अत्यन्त साधारण वस्तुएँ भी रख कर भूल जाने लगी । किसी स्थान पर कोई चीज़ रखती और फिर वहाँ से घूमते ही उस छोटे से घर में उसे जहाँ-तहाँ ढूंढती फिरती, उसे याद न रहता कि उसने वह कहाँ रखी थी । उससे इस प्रकार चीजें खो जाने पर जब वे लोग हंसने लगते तो वह रो पड़ती । परन्तु परहंसा मन ही मन कहा करता था कि बैरेट बिलकुल

बदल जायेगी, बच्चा हो जाने पर वह ऐसी न रहेगी। अब इसके लिए उन्हें अधिक प्रतीक्षा की बात नहीं थी।

सर्दी अधिकाधिक बढ़ती गई। अब सदा बर्फ गिरती रहती थी और निरन्तर तेज़ अंधड़ चलते रहते थे। केवल संध्या समय का दृश्य सुन्दर होता था जब डूबते हुए सूर्य की आभा अनेकानेक रंगों अर्थात् लाल पीली तथा हरित रश्मियों के रूप में प्रकट होती थी। इसके बाद स्वच्छ आकाश में स्वर्णिम पूर्ण चन्द्र उदय होता था और ऐसा लगता था मानो वह उस शून्य आकाश में मौन भाव से स्थित इस जगत् को निहार रहा हो।

परहंसा 'सियूएक्स' नदी पर ट्रांडर लोगों से मिलने के लिए जाना चाहता था, किन्तु वह जानता था कि वह नहीं जा सकता। इसलिए वह मेज़ पर बैठा बैरेट को देखता रहता। उसने देखा कि बैरेट सर्दी के कारण बहुत घबराई हुई है इस कारण वह अंगीठी को सदैव गर्म रखता था। एक दिन परहंसा ने उसके लिए लकड़ी के जूते तैयार करने का निश्चय किया क्योंकि वह जानता था कि ये जूते पाँव को गर्म रखते हैं। उसने बड़ी सावधानी से काम किया और आखिर जूतों का एक बढ़िया जोड़ा तैयार कर लिया और उसे पहना दिया। उसने देखा कि बैरेट को उससे प्रसन्नता हुई है किन्तु वह केवल इतना ही बोली—"कितना अच्छा होता जो तुम्हें इसका पहले ध्यान आ जाता। मैंने सारी सर्दियाँ इसी तरह से काट दी हैं।" उसके इन शब्दों का कोई विशेष अभिप्राय नहीं था वरन् उसके मन में जो आया उसने कह डाला। किन्तु यह सुन कर परहंसा का हृदय विकल हो उठा।

तत्पश्चात् एक दिन परहंसा की यह विकलता क्रोध के रूप में फूट पड़ी और उसे स्वयं को यह ज्ञान न रहा कि वह क्या कर रहा है। हेनरी सोलम उससे कहने आया कि वह उनकी गाय रख ले ताकि वह तथा उसका भाई वापिस मिनिसोटा चले जायें और क्रिस-

मस के दिन अपने माता-पिता के पास गुज़ारें। जब परहंसा ने सुना कि वे मिनिसोटा जा रहे हैं तो वह मेज़ पर से उछल पड़ा और बोला—"अपनी बूढ़ी गाय को अपने साथ ले जाओ, हेनरी, हमें तुम्हारा दूध नहीं चाहिये।"

हेनरी शान्त भाव से बातचीत करता रहा और फिर चला गया। परहंसा बैठा निर्निमेष नेत्रों से खिड़की के बाहर देखता रहा, तभी बैरेट बोली—"मैं समझती हूँ कि सोलम परिवार के लड़के क्यों जाना चाहते हैं। बात यह है कि यहाँ किसी के लिये कोई धंधा ही नहीं है।"

"क्या कहा", परहंसा बोला—"दो हृष्ट-पुष्ट युवकों के लिये कोई धंधा नहीं ? वह कैसे, यदि मुझे सारा दिन एक रोगी स्त्री की तरह घर बैठे रहना न पड़ता तो मैं घर, खेत, पशुशाला सब के लिए लकड़ी काट लाता।"

इस पर बैरेट ने अपने स्वभाव के अनुसार शान्त भाव से पूछा "तो फिर तुम क्यों जाकर काम नहीं करते ?"

"क्यों, क्या तुम्हें भी यह पूछने की आवश्यकता है ? क्या मैं तुम्हें इस हालत में छोड़ कर जा सकता हूँ ?'

बैरेट फिर उसी प्रकार शान्त भाव से बोली—"ओह, मेरी हालत तो वही है जो तुमने बना दी है। उसमें अच्छा या बुरा कोई भी तो अन्तर नहीं पड़ा। तुम्हें मेरी खातिर घर पर नहीं बैठे रहना चाहिए।"

इस पर परहंसा इस ज़ोर से चिल्लाया कि लड़के भय से कांपने लगे और एना मेरी माँ की गोद में मुंह छिपा कर रोने लगी। परहंसा ने अपनी टोपी और कोट उठाया और बाहर चला गया। वह प्रायः सारा दिन बाहर ही रहा और उसने दोनों लड़कों के लिये एक एक जोड़ी लकड़ी के जूते बनाये जिनसे बर्फ पर चला जाता है। जब वह वापिस घर आया तो उसके लिये रात का भोजन मेज़ पर रखा

हुआ था किन्तु बैरेट सो गई थी।

खाना खाने के बाद वह हंस ओलसा के घर चला गया और वहाँ उसने सोरीना से कहा कि वह आज रात बैरेट के पास जाकर रहे। वह बोला—"बैरेट अकेलापन अनुभव कर रही है, क्योंकि वह किसी से मिलने तो जाती नहीं और सदा परिवार में ही घिरी रहती है। सोरीना तुरन्त चली गई और परहंसा हंस ओलसा से बातचीत करने के लिए रुक गया।

ज्योंही परहंसा प्रविष्ट हुआ, टानसेटन भागा-भागा वहाँ आया। वह बहुत चिन्तित था। उसने सुना था कि सोलम लड़के वापस जा रहे हैं और परहंसा तथा हंस ओलसा को दोषी ठहराते हैं। टानसेटन बोला—"कितना अच्छा होता यदि आप अपने बच्चों को पढ़ाने के लिये हेनरी सोलम को यह कहने की बात सोच लेते कि वह सर्दियों का स्कूल चलाये। मेरा कोई बच्चा नहीं किन्तु मैं भी उन्हें रखन के लिए कुछ पैसा दे दिया करूंगा। क्योंकि यदि वे चले गए तो सम्भवतः लौट कर नहीं आयेंगे।"

हंस ओलसा ने इस पर कुछ देर विचार किया किन्तु आखिर वह जाने के लिए सहमत हो गया। परहंसा को स्मरण हो आया कि उसने हेनरी से क्या कहा था किन्तु वह भी साथ चला गया। वे ठीक समय पर पहुँच गए क्योंकि सोलम लड़के जाने के लिऐ सामान बांध रहे थे। उनमें बहुत देर तक बातचीत होती रही। पहले तो सोलम लड़के ठहरने के लिए तैयार न हुए। आखिर वे ठहर जाने और कुछ अध्यापन कार्य करने के लिए तैयार हो गये। यह निश्चय किया गया कि वे प्रत्येक परिवार के पास एक-एक सप्ताह बितायेंगे। वह परिवार उनके भोजन का प्रबन्ध करेगा तथा परिवार की स्त्रियाँ उनके कपड़े आदि सीं दिया करेंगी। इस प्रकार वे अकेलापन अनुभव नहीं करेंगे।

चाहे दिन प्रसन्नतापूर्ण होते या उदासी भरे बैरेट निरन्तर

अपनी झोंपड़ी के अंधकारभरे फर्श की ओर देखती रहती थी और उसे निरन्तर रात्रि ही प्रतीत होती थी। वह धूप तो अन्दर आने ही न देती थी। वह यह अनुभव करने लगी थी कि उसने पाप किया है और ईश्वर ने उसे यहाँ निर्जन तथा अंधकारपूर्ण प्रदेश में भेज कर दण्ड दिया है। उस पाप की अपराधिनी वह स्वयं थी किसी ने उसे उसके लिये बाध्य न किया था।

उसे स्मरण हो आया कि चाहे उनके विवाह से पूर्व ही ओल का जन्म हो गया था किन्तु तब भी बैरेट के माता-पिता परहंसा के विरुद्ध थे। और वे उसे बच्चे सहित घर रखने के लिए भी तैयार थे। [किन्तु वह परहंसा के बिना न रह सकती थी। उसने अपने माता-पिता की एक न सुनी। उसके स्मृति-पटल पर बीते दिनों के दृश्य उभरने लगे कि उसके माता-पिता ने उसके लिए क्या कुछ किया था और किस प्रकार वह परहंसा के साथ आने के लिए उन्हें छोड़ आई थी। किस प्रकार उसने उनके हृदय पर आघात किया था। हाँ, उसने पाप किया था और उसके परिणाम स्वरूप उसे यह दण्ड मिला था।

उसे यह भी याद आया कि जब परहंसा अमेरिका आने के लिए तैयार हो रहा था तो उसके पिता ने परहंसा से कहा था—"हमारी नौका, मछली पकड़ने का सामान और सब चीजें ले लो और हमारे निकट रहो। हमारी बेटी को हम से सदा के लिये जुदा न करो।" यह सब सुनकर भी वह परहंसा के साथ चली आई थी और उसने इस बात की तनिक भी परवाह न की थी कि उसके माता-पिता रो रहे थे और अब वे अकेले रह जायेंगे। तत्पश्चात् वे अमेरिका चले आये। उससे अधिक घृणित पाप क्या कभी किसी ने किया होगा?

अमेरिका में भी उन्हें कौन सा सुख मिला था? रोटी के एक-एक टुकड़े के लिये उन्हें कठिन परिश्रम करना पड़ता था। वह देख

रही थी कि इन सब बातों में ईश्वर का हाथ था। उसके भाग्य में यही बदा था। अमेरिका में आने के बाद अभी तक वे कहीं आराम से नहीं टिके थे, क्योंकि उन्हें पश्चिम की ओर जाना होता था और वे निरन्तर अधिक अच्छी भूमि तथा अधिक सुखद जीवन की तलाश में पश्चिम की ओर बढ़ रहे थे। अधिकाधिक लोग न केवल नवयुवक वरन् बूढ़े भी पश्चिम की ओर बढ़े चले जा रहे थे। यहाँ स्वतन्त्रता थी। वे सोचते थे कि यहाँ भूमि है और वे कम से कम अपने खेतों के मालिक तो हो सकते हैं।

जब उसे पता लगा था कि वह पुनः गर्भवती हो गई है तो उसने प्रार्थना की कि जब तक बच्चा न हो ले किसी और स्थान के लिए प्रस्थान न किया जाये। किन्तु हंस ओलसा जाने के लिए तैयार हो गया और परहंसा को भी उसके साथ ही चलना पड़ा। परहंसा उसे इतना अधिक प्यार करता था कि वह भी मान गई। बस यही उसका पाप था और वह जानती थी कि परहंसा इस पाप का भागी नहीं। इसलिए उसे ही इसका दण्ड मिल रहा था।

वह निरन्तर अपने पाप के बारे में सोचती रहती थी और उसे विश्वास हो गया था कि वह शीघ्र ही मर जायेगी। बस वह बच्चा जनने के पश्चात् बिस्तर से जीवित न उठेगी। वह सोचती कि उसके भाग्य में तो इतना भी न होगा कि उसका मृत शरीर अपने परिवार के गिरजाघर के आंगन में दबाया जाय जहाँ उसके अन्य सम्बन्धी दफ़न किये गये थे। उसे तो मृत्युपर्यन्त भी इस निर्जन और सुनसान प्रदेश में पड़े रहना होगा। वह सोचने लगी—"मुझे अपनी अन्त्येष्टि के बारे में परहंसा से बात करनी होगी। अब समय अधिक नहीं रहा। मेरा जीवन प्रायः समाप्त हो गया है। मैं कहूँगी कि मृत्यु के पश्चात् मुझे बड़े सन्दूक में डाला जाये और उसमें पड़ी चीज़ों को कहीं और रखा जाये। मैं निश्चय ही परहंसा से शीघ्र इस बारे में बात करूँगी।"

: ३ :

क्रिसमस से एक दिन पूर्व बर्फ गिरनी आरम्भ हुई और अगले दिन तक गिरती रही। बाहर इतना अंधेरा था कि वह दिन क्रिसमस का दिन प्रतीत ही न होता था। परहंसा के घर निरन्तर प्रतीक्षा हो रही थी, और वे कर भी क्या सकते थे। एक दिन क्जेरस्ती बैरेट के पास रही और अगले दिन सोरीना वहाँ रही क्योंकि अब अधिक समय नहीं था।

बैरेट से भी अधिक परहंसा को सहायता की आवश्यकता थी। वह चक्कर लगाता रहता था और उसकी आँखों से घबराहट के भाव टपकते रहते थे। प्रतिदिन बच्चों को हंस ओलसा के घर भेज दिया जाता था। शीघ्र ही वे सारा दिन वहाँ रहने के अभ्यस्त हो गये। घर में उनके बगैर मौन छाया रहता था। कभी एक-आध बार बैरेट के चेहरे पर एक उदासी भरी मुस्कराहट आ जाती थी।

क्रिसमस को प्रायः दोपहर के समय आकाश साफ हो गया और उसकी नीलिमा धूप में चमकने लगी। उस हिमाच्छादित प्रदेश पर सूर्य एक सुनहरी गेंद की तरह चमक रहा था। उस दिन बाद दोपहर बैरेट को प्रसव पीड़ा होने लगी। अन्य बच्चे हंस ओलसा के घर क्रिसमस की प्रतीक्षा कर रहे थे।

सोरीना और क्जेरस्ती दोनों सहायता के लिए आई हुई थीं। परहंसा कोट उठा कर बाहर चला गया किन्तु बार-बार दरवाज़े के पास आ कर खड़ा हो जाता था। उसे बैरेट के रोने-चीखने की आवाज़ सुनाई दे रही थी, आखिर उसे पशुशाला में जाना पड़ा ताकि वह आवाज़ सुनाई न दे। क्जेरस्ती ने आकर उससे कहा कि बैरेट उसे बुलाती है तब वह अन्दर गया।

परहंसा ने बैरेट के चेहरे की ओर देखा तो वह विकल हो उठा। उसने कभी उसे इतना भयभीत न देखा था। बैरेट ने स्त्रियों से कहा कि वे कुछ देर के लिए चली जायें ताकि वह अपने पति से

कुछ बातें कर ले। फिर वह बोली—"आज रात में तुम से जुदा हो रही हूँ। मुझे जाना ही होगा। मैं जानती हूँ कि मेरा अन्त समय आ गया है। मेरे पापों के कारण ईश्वर मुझे दण्ड दे रहा है। अब तुम्हें मेरे बिना रहना होगा। एना मेरी वजेरस्ती को दे देना क्योंकि उसे बच्चे की बहुत आवश्यकता है। तुम बच्चों को साथ लेकर यहाँ से दूर चले जाना। वचन दो परहंसा! कि बड़े सन्दूक में रखोगे; हाँ मेरी कब्र खूब गहरी खोदना क्योंकि यहां रात को इतना सुनसान होता है।"

परहंसा को यह सुनना असह्य हो गया। उसने अपना मुंह ढक लिया और वह रो पड़ा—"मेरी प्यारी बैरेट, तुम शीघ्र ठीक हो जाओगी शीघ्र ही। कल ही तुम पुनः स्वस्थ हो जाओगी।"

बैरेट फिर दर्द से कराह उठी—"नहीं नहीं मैं आज रात मर जाऊँगी। और मुझे बड़े सन्दूक में ही डालना। बसंत में यहाँ से चले जाना। यहाँ ठहरना पाप होगा। यहाँ तो मनुष्य जानवर बन जाते हैं।" वह एक क्षण दर्द के कारण रुक कर फिर बोली—"अभी मत जाओ, मुझ से प्यार करो, एक बार फिर प्यार करो। तुम बच्चों को लेकर नार्वे चले जाना और माता-पिता से कहना कि वे मुझे क्षमा कर दें। उनसे यह भी कह देना कि मुझे बड़े सन्दूक में दफ़न किया गया है।" वह चिल्ला पड़ी—"वह देखो, वे मुझे लेने आ गये हैं।"

परहंसा चिल्लाते हुए उठ खड़ा हुआ—"शैतान तुम उसे नहीं ले जा सकते।" उसने बाहर से स्त्रियों को बुला लिया। उस रात कोई न सोया। रात भर बैरेट रोती-चिल्लाती रही। हंस ओलसा के घर भी लोग बैठे प्रतीक्षा करते रहे। सब सोच रहे थे, इतना कष्ट सहने पर कोई जीवित नहीं रह सकता। रात भर लोग बारी-बारी समाचार पाने के लिए आते रहे। कुछ पूछने पर स्त्रियाँ केवल सिर हिला देती थीं। वे केवल प्रार्थना ही तो कर सकती थीं। पर-

हंसा का कहीं पता न था। ईश्वर उस पर दया करे।

परहंसा सर्दी और अंधकार में चक्कर काट रहा था। जब भी कोई समाचार पाने के लिए आता वह दूर चला जाता था। उसकी किसी से बात करने की इच्छा न होती थी। उसके गाल आँसुओं से भीगे हुए थे। घर से आने वाली प्रत्येक चीख उसे व्यथित कर देती थी। बार-बार वह दरवाज़े के पास जाता किन्तु सोरीना उसकी व्यथा को दूर न कर सकती क्योंकि अभी तक स्थिति में कोई अन्तर नहीं आया था। वे समझती थीं कि बैरेट इतने कष्ट के बाद जीवित न रह सकेगी।

रात भर चीखों की आवाज़ आती रही। आखिर वह आवाज़ धीमी होती गई और अन्त में बिल्कुल बन्द हो गई। परहंसा द्वार से कान लगाये सुन रहा था। उसने सोचा बस अन्त निकट आ गया है और वह बर्फ पर धड़ाम से गिर पड़ा। परन्तु अकस्मात उसका दिल संभल गया, ······उसने सोचा उसके पास एक भारी रस्सी है जिस से कोई भी भारी चीज़ लटकाई जा सकती है······और पशुशाला में एक तख्ता है जो ऊँचाई पर फेंका जा सकता है······हाँ तो वह रस्सी तो उसे भी संहार सकती है।"

तभी एक दरवाज़ा खुला और प्रकाश की कुछ रेखाएं बाहर आईं, "परहंसा" एक धीमी आवाज़ आई। क्जेरस्ती ने उसे पुकारा था—"तुरन्त अन्दर आओ" उसने फुसफुसाते हुए कहा।

अन्दर सर्वत्र मौन था। बाहर के गहन अंधकार से आने पर भीतर प्रकाश और गर्मी अनुभव हुई। उसे नींद का झोंका आ गया "यह क्या बात है ?" उसने मन ही मन प्रश्न किया। फिर उसने देखा सोरीना बिस्तर पर झुकी मुस्करा रही है।

"देखो" वह बोली—"तुम्हारा नन्हा यहाँ है। आओ इधर देखो। मैंने तो जीवन में इससे बड़ा चमत्कार नहीं देखा कि आज रात तुम्हारी पत्नी और बच्चा दोनों ही बच गये। ईश्वर करे मुझे कभी

इतना कष्ट न भोगना पड़े।'

"तो क्या कोई आशा है ?"

"हाँ, मैं तो यही समझती हूँ। किन्तु मैं अभी इसका नामकरण करना चाहती हूँ, क्योंकि भगवान न करे पल में क्या हो जाय।"

"इसका नामकरण !"

"हाँ, हाँ इसमें अधिक विलम्ब करने का लाभ नहीं है।"

तब बैरेट ने अपना सिर तनिक परहंसा की ओर घुमाया। परहंसा धीरे-धीरे उसके बिस्तर के पास आ गया और उसके थके पीले चेहरे की ओर देखने लगा। वह निश्चल लेटी हुई थी और उसके चेहरे पर शान्ति झलक रही थी। वहाँ भय और त्रास का चिह्न मात्र भी न था। उसने तनिक आँखें खोलीं और फिर बिना कोई संकेत किये बन्द कर लीं।

परहंसा फिर सोचने लगा। "तुमने क्या कहा इसका नामकरण करोगी ?" उसने पूछा।

"हाँ" सोरीना बोली, "मैं समझती हूँ तुम्हें नाम रख ही देना चाहिए। सच कहूँ, यह बच्चा हमारे लिये भाग्यशाली है।"

"तब इस काम के लिए तो एक ही योग्य व्यक्ति है"—परहंसा अपना हैट और कोट पहनते हुए बोला। उसका तात्पर्य हंस ओलसा से था। सोरीना ने अपने पति के बारे में उसे यह कहते सुना तो उसे ऐसा अनुभव हुआ कि उसके सारे कठिन श्रम का पुरस्कार उसे मिल गया है। फिर उसने परहंसा को सब से अच्छी खबर सुनाई। उसने बताया कि जब बच्चा पैदा हुआ, उसका सिर झिल्ली में लिपटा हुआ था जिसका अभिप्राय है कि वह विशेष बच्चा है और सौभाग्यशाली है। यह सुनकर परहंसा हर्ष से विह्वल हो उठा।

बाहर क्रिसमस दिवस का सूर्य प्रखरता से चमक रहा था। हंस ओलसा के घर सिवाय उसके सभी सोए हुए थे। टानसेटन ने परहंसा के आने की आहट सुनी और उसे ऊँचे स्वर में यह कहते

सुना—"दोस्तों क्रिसमस की बधाई हो"—तो उसकी आँख खुली। उसने सोचा "तो सब ठीक हो गया है।"

"कोई अधिक बुरा नहीं हुआ"—परहंसा बोला—"कहीं अधिक बुरी संभावना थी। अब तो ऐसा लगता है कि बैरेट बिल्कुल स्वस्थ हो जायेगी। किन्तु बच्चे की हालत ठीक नहीं अतः उसका नामकरण अभी कर देना चाहिए। यह काम तुम्हें करना होगा, हंस ओलसा।"

हंस ओलसा घबराया हुआ प्रतीत हुआ। वह बोला—"ओह नहीं, मैं नहीं कर सकता, मेरे जैसा पापी आदमी कैसे यह काम कर सकता है ?"

"भई" परहंसा बोला—"मैं नहीं जानता भगवान् तुम्हें कैसा समझता है। किन्तु मैं इतना अवश्य जानता हूँ कि तुम से अधिक अच्छा व्यक्ति कहीं नहीं मिल सकता और मुझे तो ऐसा लगता है कि भगवान् भी यह जानता है।"

इस पर हंस ओलसा उसके साथ जाने के लिये विवश हो गया। उसने अपने आप को इस कार्य के अयोग्य समझा किन्तु वह यह जानता था कि जब कोई पादरी निकट न हो तो एक साधारण व्यक्ति भी नामकरण संस्कार कर सकता है। उसे आशा थी कि वह यह कार्य भली प्रकार कर सकेगा। दोनों धुन्ध भरी प्रभात में चुपचाप चल पड़े।

"यदि वह लड़की होती" परहंसा कहने लगा—"तो उसका नाम भी बैरेट ही रखा जाता। किन्तु वह लड़का है, अतः उसका नाम मेरे दादा के सामान पर······पीडर आदि होना चाहिये। और उसका दूसरा नाम" वह एक क्षण रुक कर बोला—"वह तुम्हारी सोरीना के नाम पर 'सियर' होना चाहिये। आज रात सोरीना ने मेरे लिये जो काम किया है मैं उसके आभार से कभी उऋण नहीं हो सकता, अतः लड़के का नाम उसी के नाम पर होगा। हाँ तो······ पीडर सियर या पीडर विक्टोरियस ऐसा नाम रखना होगा।"

जब वे चुपचाप परहंसा के घर में प्रविष्ट हुए तो वहां की स्थिति भिन्न प्रतीत हुई। अंगीठी पर कहवा उबल रहा था और मेज़ पर सफेद चादर बिछी हुई थी। भजन की पुस्तक में नामकरण संस्कार का स्थल खोलकर रखा हुआ था और साथ ही मेज पर पानी का एक प्याला तथा एक छोटा सा सफेद कपड़ा रखा था। कमरा गर्म था और वातावरण उल्लासपूर्ण।

सोरीना ने हंस ओलसा से कहा—"तुम तो नामकरण संस्कार भली प्रकार कर सकते हो।" हंस ओलसा ने भावना भरी भारी आवाज़ में पुस्तक पढ़ी और फिर उच्च स्वर में 'पीडर विक्टोरियस' का नाम पुकारा और भगवान से प्रार्थना की।

क्जेरस्ती बोली—"देखो न, मुझे तो विश्वास है कि नामकरण संस्कार, इससे अधिक अच्छे ढग में कोई न कर सकता था। आओ अब एक-एक प्याला कहवा पीलें।"

पहले परहंसा अपनी बोतल निकाल लाया और उसे स्त्रियों को देते हुए बोला—"निश्चय ही तुम दोनों ने आज रात बहुत भलाई का काम किया है। लो इसमें से कुछ पी लो। किन्तु हंस ओलसा और मेरे लिये कुछ छोड़ देना।"

थोड़ी देर बाद उन्होंने भोजन किया और कहवा पिया। गोल मेज़ पर बैठे कहवा पीते हुए परहंसा खिलखिला कर हंस पड़ा और बोला—"लगता है आखिर हम वास्तविक क्रिसमस मना ही लेंगे।"

भाग पाँच

: १ :

बैरेट नव शिशु को वगल में लिये बिस्तर पर लेटी हुई थी। उसमें नई चेतना का संचार हो रहा था यद्यपि अब भी वह अनुभव कर रही थी कि उसे कब्र में लेटे होना चाहिए। उसने बच्चे को स्तन दिया और एक आह भरी किन्तु उसकी ऐसी स्थिति में भला बच्चा दूध कैसे पी सकता था।

खिड़की में से प्रवेश करती हुई धूप कमरे को प्र।ाशमान कर रही थी। अंगीठी में आग दहक रही थी। सफेद दीवारें पहले से भी अधिक सुन्दर प्रतीत हो रही थीं। अंगीठी के ऊपर एक तार पर बच्चे के कपड़े सुखाने के लिए टंगे हुए थे। बैरेट को तनिक ऊंघ आ गई और वह तंद्रिक अवस्था में यह स्मरण करने का प्रयास करने लगी कि उस दिन और रात के दीर्घ काल में क्या कुछ हुआ था। यह सोचते सोचते वह निद्रा में डूब गई।

आखिर जब उसकी नींद खुली तो उसने देखा कि एना मेरी बिस्तर के निकट खड़ी नव शिशु को देखने का प्रयत्न कर रही है। हंस भी वहीं था और परहंसा अभी-अभी हाथों में लकड़ी लिए दरवाज़े में प्रविष्ट हुआ। उसने बैरेट को बताया कि ओल सोलम लड़कों के साथ शिकार पर गया हुआ है।

"क्या हम परमंड को देख सकते हैं?" बच्चों ने नव शिशु का नाम अपने ढंग से पुकारते हुए पूछा। बैरेट ने उन्हें सोया हुआ लाल चेहरे वाला बालक दिखाया। परहंसा ने भी अपने आपको साफ किया और वह भी उसके बिस्तर के निकट आ गया। वह

प्रसन्नता को व्यक्त तो न कर सका किन्तु बैरेट जानती थी कि उसके हृदय में क्या है ।

"तुम कितनी अच्छी हो" वह बैरेट से बोला "जो तुमने क्रिसमस के शुभ प्रभात को हमें यह महान बच्चा दिया है" इतना कह वह एकटक बैरेट और बच्चे को देखता रहा । बैरेट को फिर झपकी आ गई । उसे ऐसा लगा कि उसके चारों ओर ग्रीष्म काल की सी सुखद शान्ति विद्यमान है······गर्मी, धूप और शान्ति का वातावरण है... पक्षी चहचहा रहे हैं······वह सोचने लगी जीवित रहना भी कितना अच्छा है ।

वहाँ सब लोगों ने अनुभव किया कि नव शिशु उन सब का है । क्जेरस्ती और सोरीना ने उसके जन्म में सहायता दी थी, हंस ओलसा ने उसका नामकरण किया था और अन्य सब लोग सारी रात उसके आगमन की प्रतीक्षा में बैठे रहे थे । इसके अतिरिक्त वह बच्चा उनकी बस्ती में बसने वाला सबसे पहला व्यक्ति था । वे परस्पर इस बारे में बातें करने लगे कि लड़का बड़ा होकर क्या बनेगा । एक ने कहा वह पादरी बनेगा । दूसरा बोला नहीं वह अध्यापक बनेगा । टानसेटन ने कहा नहीं वह तो राष्ट्रपति बनेगा । आखिर हंस ओलसा ने कहा—"एक दिन यहाँ के मैदान राज्य बन जायेंगे और हमें यहाँ अच्छे गवर्नर की आवश्यकता होगी ।" सबको लगा कि यह विचार समझदारी-पूर्ण है । बैरेट और परहंसा ने इस सम्बन्ध में कुछ न कहा वरन् केवल दूसरों की बातें सुनते रहे । वे इतने प्रसन्न थे कि कुछ भी कह न सके ।

इस काल में स्कूल भी चल रहा था । सोलम लड़कों ने एक सप्ताह हंस ओलसा के घर रह कर स्कूल चलाया । जब बैरेट स्वस्थ हो गई तो वे एक सप्ताह के लिए परहंसा के घर आ गये । तत्पश्चात् वे टानसेटन के घर गये यद्यपि टानसेटन का कोई बच्चा न था । पुरुष और स्त्रियां भी स्कूल जाया करती थीं । वे सब

अंग्रेजी सीख रहे थे और इससे सर्दियों के उन महीनों में उन्हें परस्पर मिल बैठने का अवसर भी मिल जाता था। पुरुष ज्योंही खेत का काम समाप्त करते स्कूल चले जाते थे और स्त्रियाँ भी मध्यान्ह पश्चात् सिलाई का काम लेकर वहाँ चली आती थीं।

वहाँ सभी कुछ पढ़ाया जाता था—नार्वेजियन और अंग्रेजी, तथा धर्म के सिद्धान्त। कभी-कभी वह स्कूल, स्कूल की बजाय एक क्लब प्रतीत होता था जिसमें सब एक साथ हँसते और बातें कर रहे होते थे। कभी-कभी वहाँ गिरजाघर की तरह गम्भीर धार्मिक चर्चा हुआ करती थी।

पहले-पहले तो हैनरी सोलम के पढ़ाने का ढंग केवल यह था कि वह बच्चों को कहानियाँ सुनाया करता था और उन्हें दोहराने के लिए कहता था और आखिर बच्चों को सब शब्द याद हो जाते थे। फिर परहंसा को पैंसिल का एक टुकड़ा मिल गया, एक और टुकड़ा क्जेरस्ती को कहीं मिल गया। तब पुरुषों ने लिखने के लिये लकड़ी के तख्ते बनाये और बच्चे लिखना तथा हिज्जे करना भी सीखने लगे।

एक दिन साम सोलम ने उन्हें गाना सुनाया और उन्हें पता लगा कि उसकी आवाज़ बहुत अच्छी है। अब सारी सर्दियाँ गाने का कार्यक्रम भी होता रहा और उन्होंने बहुत से गाने, नार्वेजियन लोकगीत तथा भजन, और स्वीडन के प्रणय गीत सीख लिये। क्जेरस्ती और सोरीना को भी अनेक पुराने गीत स्मरण हो आये और अन्य लोगों ने भी गीत सुनाये। कभी-कभी टानसेटन पढ़ाया करता था। उसे दूसरों के काम का ढंग कभी पसन्द न आता था और वह निरन्तर दूसरों की गलतियाँ निकालता रहता था। किन्तु उन उदासी भरे दिनों में यह कार्यक्रम भी पसन्द किया जाता था और कोई बुरा नहीं मनाता था।

सर्दी इतने दीर्घकाल तक रही कि सर्दियों के लिये एकत्र की

हुई लकड़ी समाप्त हो चली। हंस ओलसा को पता लगा कि सूखी घास बहुत अच्छी जलती है किन्तु वे अधिक घास जलाने के काम नहीं ला सकते थे क्योंकि फिर गायों के खाने के लिये कुछ न बचता।

अतः फरवरी में उन्हें और लकड़ी लाने के लिये स्यूएक्स नदी पर जाना पड़ा। यह निश्चय किया गया कि हैनरी सोलम स्कूल चलाता रहेगा और स्त्रियों और बच्चों के पास रहेगा क्योंकि उन्हें अकेला नहीं छोड़ा जा सकता।

टानसेटन और हंस ओलसा का विचार था कि परहंसा ऐसी सर्दी में बैलों को साथ नहीं ले जा सकता और उन्होंने उसे अपने साथ चलने के लिये कहा। परन्तु परहंसा चाहता था कि बैलों को साथ ले जाने का प्रयत्न किया जाये और उसने जो बर्फगाड़ी बनाई थी, उसे चलाने का बैलों को अभ्यास कराया। बैल बर्फगाड़ी को भली प्रकार न चला सकते थे किन्तु परहसा अन्य लोगों की सी असमर्थता स्वीकार करने के लिए तैयार न था।

बैरेट ने उससे पूछा—"तो क्या तुम सचमुच जा रहे हो ?" "हाँ", वह बोला, "नहीं तो तुम सब बर्फ में जम जाओगे।" वह और कुछ न बोली किन्तु फिर उसे नींद न आई और वह भय से आक्रान्त हो गई।

वे अधिक अच्छे मौसम की प्रतीक्षा करने लगे। कल्पनातीत सर्दी पड़ रही थी और अंधड़ तो कभी रुकता ही न था। किन्तु एक दिन प्रातः सूर्य प्रकट हुआ और बसंत ऋतु की सी धीमी हवा चलने लगी। ऐसा लगा कि वह दिन सबसे अच्छा था। परन्तु टानसेटन ने कहा कि मौसम के लिये ऐसे दिन अच्छे नहीं होते, इसलिये न जाने किस दिन क्या घटना घट जाये पर आखिर उन्हें जाना था क्योंकि बहुत देर होती जा रही थी।

प्रातः के दस बज गये और अभी तक उन्होंने प्रस्थान नहीं

किया था। उन्होंने केवल थोड़ा-सा भोजन किया क्योंकि उन्हें आशा थी कि वे रात होने से पहले ट्रांडर की बस्ती में पहुँच जायेंगे। परहंसा सबसे आखिर में आया क्योंकि उसके बैल बहुत ही धीरे चलते थे। सिवाय बैरेट के सभी लोग उन्हें विदा करने आये। बैरेट जुदाई का दृश्य सहन न कर सकती थी। वह बच्चे को लेकर अन्दर बैठी रही। उसने अनुभव किया कि वह सर्वथा निःशक्त है।

वे बड़े आराम से यात्रा कर रहे थे। बैल भी उसी गति से बढ़े जा रहे थे। सूर्य अधिक चढ़ आया और बर्फ नर्म हो गई। ऐसा लगा मानो मई का दिन हो। उन्होंने सोचा कि यदि शेष दिन भी ऐसा ही मौसम रहा तो दो-तीन घंटों में वे ट्रांडर की बस्ती में पहुँच जायेंगे और फिर स्यूएक्स नदी की ओर चल पड़ेंगे। अभी केवल ३ बजे थे।

किन्तु परहंसा ने एक क्षण भर के लिये फिर आकाश की ओर देखा और घिरी काली घटा को देखकर उसे अपनी दृष्टि पर विश्वास न हुआ। उसने ऊँचे स्वर में बैल को हाँका। शीघ्र ही वह काला बादल सारे आकाश पर छा गया। सब ओर मौन था। हवा चलनी भी बन्द हो गई थी।

आगे जाने वालों ने प्रतीक्षा की ताकि सब एकत्र हो जायें। फिर उन्होंने आने वाले तूफान के बारे में बातचीत की कि भयानक तूफान आ रहा है और उससे बच निकलना चाहिये। हंस ओलसा ने उनसे कहा कि सब बर्फगाड़ियों को रस्सी से एक दूसरी के साथ बाँध लो ताकि तूफान में वे अलग न हो जायें। परहंसा जानता था कि वह उनसे पीछे रह जायेगा। उसे तथा हंस ओलसा को मछलियां पकड़ते हुए तूफानों का सामना करने का अभ्यास था, किन्तु यह तूफान भिन्न प्रकार का था तथा पहले देखे हुए तूफानों की अपेक्षा कहीं अधिक बुरा था। इतनी अधिक बर्फ पड़ रही थी कि उन्हें अपने सामने कुछ दिखाई न देता था। ऊपर आकाश में

ऐसी हृदय-विदारक गड़बड़ की आवाज़ सुनाई देने लगी जैसी उन्होंने पहले कभी न सुनी थी। फिर अंधड़ चलने लगा और बर्फ का गिरना तेज हो गया।

उन्हें कुछ भी दिखाई न देता था। चारों ओर बर्फ ही बर्फ थी। परहंसा को जहाज चलाने का तो अभ्यास था किन्तु बैल हांकने का नहीं। शीघ्र ही वह नियंत्रण खो बैठा। अकस्मात उसकी रस्सी की खिचावट इतनी सख्त हो गई कि वह स्लेज से बर्फ पर गिरने लगी और उसे वह रस्सी काटनी पड़ी जिस से उसकी बर्फगाड़ी साम सोलम की स्लेज तथा अन्य स्लेजों के साथ बंधी हुई थी। अब वह अकेला ही तूफान से जूझ रहा था।

बैलों की गति निरन्तर धीमी होती चली गई और आखिर वे बिलकुल रुक गए। इस पर पहली बार परहंसा ने उन्हें चाबुक मारते हुए ऊंचे स्वर में कहा, "लो अब चलो।" और फिर उसने धड़ा-धड़ चाबुक बरसाये। बैल इतने तेज दौड़ने लगे कि परहंसा को जान बचाने के लिये बर्फगाड़ी से चिपटे रहना पड़ा। अब उसे ऐसा लगा मानो वह सचमुच जहाज़ पर सवार है। बैल बर्फ पर हवा की सी तेज़ी से जा रहे थे। परहंसा ने सोचा वह अन्य लोगों से आगे निकल गया है किन्तु बैल तो रुकने का नाम ही न लेते थे। वे शैतान की तरह तेज़ी से बढ़ते रहे और आखिर थक कर बिल्कुल ही रुक गये और एक कदम भी आगे न बढ़ सके।

परहंसा हाथ में घास का थैला लिये बर्फ पर रेंगता हुआ उनके पास पहुँचा ताकि उन्हें कुछ खिला दे। बर्फ सूइयों की तरह चुभ रही थी और शरीर को छेदे डाल रही थी। "जल्दी करो कुछ खा लो"—वह फुसफुसाते हुए बोला। वह इस प्रकार अधिक देर न ठहर सका। अब फिर बैल चलने लगे किन्तु बहुत धीमी गति से जैसे ग्रीष्मकाल में किसी सुहावने दिन चहलकदमी कर रहे हों। उसने बहुत प्रयत्न किये किन्तु बैलों की गति तेज़ न हुई।

रात हो गई। बर्फ का गिरना कुछ रुक गया था किन्तु सर्दी इतनी अधिक थी कि ऐसा प्रतीत होता था मानों कोई चाकू से शरीर को काट रहा हो, और हवा इतनी तेज़ थी कि उसे स्लेज से परे फेंके जा रही थी। परहंसा को विश्वास हो गया कि उसका अन्त निकट आ गया है। उसे बारबार ऊंघ सी आने लगी, किन्तु वह जानता था कि यदि वह सो गया तो उसका क्या बनेगा, बस फिर तो उसका अन्त हो जायेगा। उसे बैरेट और चार बच्चों का ध्यान आ गया। वह सोचने लगा कि इस निर्जन प्रदेश में उन्हें एकाकी कैसे छोड़ा जा सकता है ?

अब वह पैदल चलने लगा। कभी-कभी गहरी बर्फ में गिर पड़ता और फिर साहस करके उठ खड़ा होता। उसकी विचार शक्ति क्षीण हो गई। बैल धीरे-धीरे चले जा रहे थे। उसे भी हिम्मत करके उनके पीछे-पीछे जाना पड़ रहा था भले ही वह बार-बार गिर पड़ता था। यद्यपि उसके हाथ बर्फ में जमकर सख्त हो गये थे, किन्तु उसने रस्सी को ढीला नहीं होने दिया। वह आगे ही आगे बढ़ता गया।

बैल फिर रुक गये। 'यह क्या है ?' उसने सोचा, 'बैल मुझे खींच क्यों नहीं रहे ?' वह धीरे-धीरे बैलों के पास पहुंचा और उनके सहारे खड़ा होते हुए उसने देखा कि ऊपर से एक बड़ी पीली चमकती हुई आंख उसे घूर रही है। उसने मन ही मन कहा 'बस यही मेरी मृत्यु का चिह्न है।' बैलों ने सिर उठाया और ज़ोर-ज़ोर से रंभाने लगे। रंभाने से परहंसा ऐसे चौंका जैसे नींद से जगा हो। वह सोचता हुआ आगे बढ़ा कि उसके हाथ एक मकान की दीवार के कोने से टकराये। एक खिड़की से पीला प्रकाश निकल रहा था। वह उठते-गिरते हुए आगे बढ़ा कि आखिर में उसे दरवाज़ा मिल गया। उसने दरवाज़ा खोला और धड़ाम से अन्दर फर्श पर गिर पड़ा।

उसे कुछ दिखाई न दिया। उसकी ग्रांखों पर बर्फ जमी हुई थी। किन्तु उसने ग्रनुभव किया की वहाँ गर्मी है ग्रौर वह एक सुरक्षित स्थान पर पहुँच गया है। उसे निश्चय हो गया कि ग्रब वह नहीं मरेगा। किन्तु उसमें यह सब सोचने की क्षमता काफी देर बाद ग्राई। वह ऐसे स्वर में कुछ बोला मानों कोई ग्रौर ही व्यक्ति बात कर रहा हो। "बैल बाहर······ बैल—मुझे कुर्सी दो···"। उसे एक कुर्सी पर बैठा दिया गया। उसे लगा, वहाँ बहुत बातचीत हो रही है जैसे बहुत से लोग उस कमरे में बैठे हों। ग्रब भी उसे ग्रधिक दिखाई न देता था। फिर उसे एक ग्रावाज़ सुनाई दी। कोई पूछ रहा था—"क्या तुम ही परहंसा हो ?"

"टानसेटन क्या तुम सब यहाँ हो ?" उसे ग्रब भी विश्वास नहीं हो रहा था।

जब तक वह बोला नहीं किसी को भी पता नहीं लगा था कि वह परहंसा है। उसकी ग्रांखें, दाढ़ी, टोपी ग्रौर कोट, सभी जमी हुई सख्त बर्फ से ढके थे ग्रौर बर्फ की एक चादर उसकी पीठ पर चढ़ी हुई थी। साइमन बारस्टड की झौंपड़ी में बैठा वह मानव रूप में बर्फ का बादशाह दिखाई दे रहा था।

धीरे-धीरे उसके शरीर में गर्मी ग्राई ग्रौर उसने ग्रपने चारों ग्रोर देखा। उसके सभी पड़ौसी वहीं थे ग्रौर वह साइमन बारस्टड को भी जानता था। साम एक लड़की के साथ सटा बैठा था, उसे देखकर परहंसा मुस्करा दिया।

हंस ग्रोलसा ने उसे बताया कि उन्होंने किस प्रकार ग्रपनी जान बचाने के लिये बर्फ में से स्लेज चलाई थी ग्रौर इस झौंपड़ी में पहुँचे उन्हें दो ही घंटे हुए थे। खैर ग्रब वह भयानक यात्रा समाप्त हो गई थी किन्तु ग्रब भी परहंसा उस यात्रा की बात सोचना तक न चाहता था। इसकी बजाये उसका ध्यान गुरीना बारस्टड की ग्रोर लगा हुग्रा था जो उसके लिये दूध ग्रौर शराब का एक

बड़ा प्याला तैयार कर रही थी। जब उसने प्याला उसके हाथ में दिया तो वह उसे एक ही सांस में पीता चला गया।

"आह गुरीना"—परहंसा ने प्याला खतम करते हुए कहा—"क्या तुम्हारे उस बर्तन में थोड़ा दूध और है ?" उसने एक और प्याला भर कर उसे दिया जिसे वह पहले ही की तरह तेजी से पी गया। तब गुरीना ने उसे एक प्याला गर्म दलिये का और एक गर्म दूध का दिया। ऐसा लगता था कि उसका पेट कभी भरेगा ही नहीं।

थोड़ी देर वे उस प्रदेश के बारे में बातें करते रहे और फिर सो गये। अतिथि फर्श पर बिछी घास और गर्म कपड़ों पर सो गये किन्तु जब अन्य लोग सो रहे थे परहंसा अत्यधिक थकावट के कारण सो न सका। तन्द्रा की सी अवस्था में पड़े हुए उसे दिखाई दिया कि उसकी छोटी सी झोंपड़ी उस अंधकारपूर्ण निर्जन प्रदेश में बर्फ से घिरी हुई है। एक स्त्री गोद में बच्चा लिये कभी झोंपड़ी के बाहर जाती है कभी अन्दर और इस प्रकार निरन्तर आ जा रही है। उसकी इच्छा हुई कि उस स्त्री से बातचीत करे और उसे बता दे कि सब कुशल हैं। उसे आशा थी कि लड़के तूफान आने से पहले काफी लकड़ी घर में ले आये होंगे। उसने करवट ली और फिर सोने का प्रयत्न किया किन्तु उसे निरंतर वह स्त्री अन्दर आती और बाहर जाती दिखाई देती रही।

स्यूएक्स नदी के तट पर ट्रांडर लोगों की एक बड़ी बस्ती थी। उनमें से बहुत से लोग पांच-छः वर्ष पूर्व यहां आकर बस गये थे और उन्होंने लकड़ी के घर बना लिये थे, काफी भूमि में फसलें बो ली थीं और आनन्द का जीवन व्यतीत कर रहे थे। वे कहानियां सुनाया करते थे कि जब वे पहले-पहल यहां आये थे तो यहां की स्थिति क्या थी। जहां-तहां बहुत से इण्डियन रहते थे और नगर तो कहीं थे ही नहीं। परहंसा बड़ी प्रसन्नता से इन कहानियों को सुना करता था किन्तु उसे विश्वास था कि वह कैसी भी परिस्थितियों

में अधिक सफल हो सकता है। उसे अपने ऊपर गर्व था।

अगले दिन मौसम साफ था किन्तु सर्दी अभी काफी थी। परहंसा ने पहले ही बारस्टड से कुछ जंगल खरीद रखा था इसलिए लकड़ी काटने के लिये उसके पास अपना जंगल था। अन्य लोग लकड़ी खरीदने के लिये चले गये। वे जल्दी काम न कर सके अतः तीसरे दिन प्रातः से पूर्व घर के लिये प्रस्थान न कर सके। ट्रांडर लोगों से बातचीत करना उन्हें बहुत अच्छा लगा क्योंकि बहुत दिनों बाद अन्य लोगों से उनकी भेंट हुई थी। इस यात्रा में उन्होंने बसंत में बोने के लिये अपनी-अपनी आवश्यकतानुसार गेहूँ का बीज खरीद लिया। बस अब उन्हें जल्दी नहीं थी और उनके पास नार्वेजियन नृत्य का उल्लासपूर्ण उत्सव देखने के लिये समय था। परहंसा ने देखा कि साम सोलम बारस्टड की लड़की के बहुत निकट बैठा हुआ है। उसे विश्वास हो गया कि अब वे शीघ्र ही विवाह कर लेंगे।

तीसरे दिन पौ फटने से बहुत पहले इन चारों ने प्रसन्न स्वभाव वाले ट्रांडर लोगों से विदा ली और स्प्रिग क्रीक की ओर चल पड़े।

: २ :

रविवार बाद दोपहर का समय बहुत उदासी भरा था, सूर्य का प्रकाश मद्धम था और अंधड़ अब भी चल रहा था। चारों ओर सिवाय निर्जनता के और कुछ दृष्टिगोचर नहीं होता था। उस दिन का वातावरण इतना उदासीपूर्ण था कि किसी के लिये भी अकेले रहना असह्य था। अतः सभी लोग यहां तक कि नव शिशु भी टान-सेटन की झोंपड़ी में एकत्र हो गये। यूँ तो वे सभी दिन उदासी भरे थे। और तो और पुरुषों को भी उन मनोरंजक कहानियों पर विश्वास नहीं आ रहा था जो लोग सुनाया करते थे कि चार-छः

वर्षों में ही यह भूमि आश्चर्यजनक रूप में समृद्धि प्राप्त कर लेगी।

तब टानसेटन ने उन सब को सचेत करते हुए पूछा—"जब इस प्रदेश में भूमि सम्बन्धी कागजात को सरकारी तौर पर मान्यता दे दी जायेगी तो तुम उन में अपने क्या नाम लिखवाना पसन्द करोगे।" इस पर परहंसा और हंस ओलसा पूछ बैठे—"तो क्या हमारे ये नाम काफी अच्छे नहीं ? तुम और क्या चाहते हो ?" नित्य ही की तरह टानसेटन को तुरन्त क्रोध आ गया किन्तु वह बोला—"तुम्हारे इन नामों से कैसे किसी को पता लगेगा कि तुम नार्वेजियन थे। वे यह भी तो समझ सकेंगे कि तुम स्वीडन के लोग थे।"

खैर यह बात उनके लिये विचारणीय थी। बैरेट बैठी सारा समय बच्चे को गोद में लिये हिला रही थी। उसके चेहरे पर मुस्कराहट थी और वह कुछ भी बोल न रही थी। स्पेरीना नार्वे के 'बाग' नगर की निवासी थी और उसने तथा हंस ओलसा ने 'बाग' नाम चुन लिया। थोड़ी देर बातचीत के पश्चात परहंसा ने कहा उनके लिये 'होम' नाम ठीक रहेगा, जैसे 'ओल होलडर होम', 'हंस क्रिस्टियन होम', 'पीडर विक्टोरियस होम' ये नाम उसे बहुत ही अच्छे प्रतीत हुए। निस्संदेह ये थे भी अच्छे। बैरेट अब भी कुछ न बोली किन्तु वह सोच रही थी कि शैतान ने यह एक और काम कर दिया है जो लोग नामकरण संस्कार द्वारा प्रदत्त नामों को बदल रहे हैं।

उस रात जब अन्य लोग सो गये तो बैरेट बहुत समय तक विचारों में मग्न आग के सामने बैठी रही। वह सोच रही थी—'अब इन्होंने अपने-अपने पिता का नाम छोड़ दिया है····· न जाने यह देश इन से क्या-क्या मांग करेगा ? ऐसा प्रतीत होता है कि इसका कहीं अन्त नहीं। मैं किसी की प्रसन्नता में बाधा नहीं पहुँचाना चाहती किन्तु इन लोगों ने बहुत भयानक बात की है।

मैं इस सम्बन्ध में कुछ न कहूँगी......क्योंकि अब तो मैं जो कुछ भी कहती हूँ गलत प्रतीत होता है। कहीं मैं सनकी तो नहीं होती जा रही ? शायद यही बात है। ओह भगवान् इस बार मुझे ले न गया, ताकि मैं पश्चाताप कर सकूँ। किन्तु मैं पश्चाताप भी न कर सकी।' आग के सामने बैठी हुई वह इस प्रकार भयभीत हो रही थी जैसे किसी अंधकारपूर्ण कमरे में कोई भयत्रस्त बालक बैठा हो।

आग बुझ गई और वह ठण्डे कमरे में अपने बिस्तर पर चली गई। किन्तु अब भी उसे नींद न आई। वह जानती थी कि भगवान् ने अनेक लोगों को अपनी प्रसन्नता के लिये रेगिस्तानों में भेजा है। किन्तु यहाँ तो भगवान् ने लोगों को त्रसित करने के साधन भी जुटा दिये हैं। वह सोचने लगी— 'यदि भगवान् मुझे केवल भय से मुक्त रखे तो मुझे विश्वास है कि मैं यहाँ भी उसकी सेवा कर सकती हूँ।'

कुछ ही दिनों में दिन बड़े हो गये। पुरुष फिर अपने काम धंधे में लग गये और परहंसा ने तो ऐसा काम किया जिसकी डकोटा प्रदेश में अब भी चर्चा होती है। उसने ट्रांडर लोगों से सुन रखा था कि केवल चालीस मील दूर इंडियन सारी सर्दियाँ फर एकत्र किया करते थे जिसे वे बसंत में पूर्व की ओर भेज देते थे। यहाँ फर का मूल्य बहुत कम था किन्तु मिनीसोटा या उससे और परे पूर्व में उसका मूल्य बहुत अधिक था। परहंसा ने सोचा कि इंडियनों के साथ व्यापार करे और उनसे जो कुछ हो सके खरीद ले और फिर स्वयं फर को पूर्व में भेज दे और अधिक मूल्यों पर धन कमाये। उसने इस बारे में बहुत सोचा।

कुछ धन कमाने के लिये उसे आरम्भ में और अधिक धन प्राप्त करना होगा। उन्हें अनेक वस्तुओं की आवश्यकता है। जब उसने अपना यह विचार बैरेट को सुनाया तो उसे भी मानना पड़ा क्योंकि उन्हें कपड़ों की अत्यधिक आवश्यकता थी, अब तो पुराने कपड़ों पर लगी थेगलियाँ भी फट चुकी थीं। "हाँ"

वह बोली—"जब तक हो सके हमें अपने आपको जीवित रखना चाहिये।" परन्तु जब बैरेट ने इस यात्रा पर जाने के लिये परहंसा की उत्साहपूर्ण बातें सुनी तो वह सोचने लगी कि परहंसा यह क्यों नहीं सोचता कि अन्य लोगों की भी उनके समान ही आवश्यकताएँ हैं। किन्तु वह इस बारे में कुछ न बोली।

परहंसा एक सप्ताह के लिये इस यात्रा पर चला गया। इण्डियनों के साथ थोड़ी देर बातचीत के पश्चात उसने उनसे जितनी फर ले जा सकता था खरीद ली। फिर उसने उसे पूर्व में ले जाकर बेच दिया किन्तु उसने कभी किसी को नहीं बताया कि वह पूर्व में कितनी दूर गया था। जब वह घर लौटा तो वह अपनी आवश्यकता की बहुत सी चीजें लाया···और अब भी उसके पास चालीस डालर बचे हुए थे!

किन्तु तीन दिन पश्चात् वह इण्डियनों को पहली फर का मूल्य देने तथा और नयी फर खरीदने के किये पुनः चला गया। एक बार फिर उसने यात्रा की। कुल मिलाकर वह तीन बार एक-एक सप्ताह के लिये बाहर गया और अपनी आवश्यकता की सभी चीजें खरीद लाया। अन्त में उसने एक सौ चालीस डालर बचाकर बैरेट को दे दिये।

इसके बाद वे सब लोग फिर गेहूँ का बीज खरीदने के लिये ट्रांडर लोगों की बस्ती में गये। तभी परहंसा ने बारस्टड से एक बछड़ी भी खरीदी। आखिर कुछ दिनों के लिये उन्होंने ये यात्रायें बंद कर दी क्योंकि अब घर पर काम करने का समय था। परहंसा की इन यात्राओं के समय बैरेट ने कभी कुछ न कहा था, किन्तु परहंसा इतना अधिक व्यस्त था कि उसे इस बात का ध्यान ही न आया। वह तो बस इतना ही सोचता था कि कितना अच्छा हो जो उसकी प्यारी बैरेट प्रसन्नता के साथ इतना कह दे—'तुम मेरे लिये कितना कुछ कर रहे हो।' किन्तु उसका विचार था कि बसंत ऋतु आने पर बैरेट ठीक हो जायेगी।

भाग छः

: १ :

परहंसा और लड़के मेज के चारों ओर बैठे बीज छाँट रहे थे। इसे बहुत ध्यानपूर्वक करने की आवश्यकता थी क्योंकि सब खराब बीज निकाल देने थे और परहंसा तो उन बीजों को भी फेंक रहा था जो बहुत अच्छे नहीं थे। नौतोड़ भूमि के लिये केवल सर्वोत्तम बीज रखे जा रहे थे।

यह कठिन काम करते हुए परहंसा के मन में अनेक विचार आ रहे थे—'अभी तो काम आरम्भ हुआ है। ये गेहूँ के बीज की कुछ एक बोरियां सारे परिवार की वर्ष भर की आवश्यकता के लिये अनाज पैदा कर देंगी और उससे धन भी प्राप्त होगा तथा अगले वर्ष के लिये और बीज भी। यह भी हो सकता है कि मैं कुछ गेहूँ रख लूँ और जब नये लोग यहाँ बसने के लिये आयें तो उन्हें बीज के लिये गेहूँ बेच दूँ ···बहुत से नये बसने वाले लोग गेहूँ के बीज खरीदने के लिये तैयार होंगे। खैर देखूंगा······'

"लड़को" वह बोला—"ध्यानपूर्वक काम करो। देखो तुम क्या कर रहे हो।"

जब बसंत का ऊष्म काल आरम्भ हुआ तो परहंसा आराम से बैठा न रह सका। वह भूमि को देखता रहता था कि वह बीज बोने के लिये तैयार हो गई है अथवा नहीं। मुर्गियाँ अब प्रति दिन पाँच अंडे देने लगी थीं। उसने सोचा उनसे बच्चे निकलवा लेगा और वर्षा ऋतु तक उनके पास पचास और मुर्गियाँ हो जायेंगी जिनकी देख-भाल बैरेट किया करेगी।

गत वसंत के बाद से बेरेट ने कभी उसे इस रूप में न देखा था कि वह हर जानदार वस्तु को बड़े कोमल हाथों से छूता था मानो उससे बातें करना चाहता हो। ऐसा प्रतीत होता था कि बसंत और उस काल में बढ़ने वाली सभी वस्तुओं के साथ उसका तादात्म्य हो गया है।

प्रति दिन उस क्षेत्र पर सूर्य चमकने लगा और मौसम अच्छा रहने लगा। अब परहंसा प्रतीक्षा न कर सका। अप्रैल के आरम्भ में ही जिस समय नार्वे में बीज बोया जाता है उसने भी बीज बोना आरम्भ कर दिया। उसकी भूमि में जो भाग सब से सूखा था उस पर उसने क्यारियाँ बना लीं और उन्हें बीज बोने के लिये तैयार कर लिया। उसने अपने आस-पास अपने पड़ौसियों की ओर देखा। किसी ने भी बीज अभी बोना आरम्भ नहीं किया था।

परहंसा ने अनुभव किया कि जीवन का सबसे महान् क्षण उपस्थित हो गया है...... जब वह अपनी निजी भूमि में बीज बोने लगा है। उसने गेहूँ से अपनी मुट्ठी भरी और उसे सिर के ऊपर तक उठाया, बीज उसके चारों ओर बिखर गये और प्रत्येक बीज ठीक स्थान पर जा कर गिरा। उसने बहुत धीरे-धीरे तथा ध्यानपूर्वक काम किया और यह भी ध्यान न रखा कि वह दिन में कितने घंटे काम कर रहा है।

उस दिन मध्याह्न पश्चात् टानसेटन पहाड़ी पर से भागा भागा उसके पास आया। परहंसा को बीज बोते देख उसे अपनी दृष्टि पर विश्वास न हुआ। "क्या तुम पागल हो गये हो ?" उसने पूछा—"भूमि अभी तक काफी सूखी नहीं और अभी सर्दी भी है।" किन्तु परहंसा केवल हंस दिया और बीज बोता रहा। टानसेटन ने सोचा 'मैंने तो अपने कर्त्तव्य का पालन कर दिया'—और वह घर लौट गया।

सूर्य डूबने तक परहंसा बीज बोता रहा। रात्रि के भोजन के

समय वह इतना प्रसन्न और इतना थका हुआ था कि उसकी इच्छा हो रही थी कि कुर्सी पर बैठा रहे और हिले-डुले नहीं। उसे यह भी सुनाई न दिया कि बैरेट या लड़कों ने उससे क्या कहा है।

अगले दिन भी उसने सारा दिन खूब मेहनत से बीज बोया और लड़के उसके पीछे-पीछे बैलों द्वारा बीज को ढकते रहे। शाम हुई तो उसने काम समाप्त कर लिया था जब कि उसके पड़ौसियों ने अभी तक आरम्भ भी न किया था। उस रात जब वह घर गया वह विशेष आनन्द का अनुभव कर रहा था।

अगले दिन ठंडी और भारी वायु चलने लगी थी। सुन्न कर देने वाली वायु बहती रही और सूर्य बदली में छिपा रहा। वर्षा होने लगी और थोड़ी ही देर में बर्फ के बड़े-बड़े गाले गिरने लगे जो जमीन पर गिरते ही पानी बनते जाते थे। शीघ्र ही अधिक सर्दी हो गई और बर्फ के गाले ज्यों के त्यों जमे रहने लगे। यह तूफान इतना सख्त था कि सारी सर्दियों में ऐसा तूफान न आया था।

अगले दिन प्रातः बर्फ गिरनी बंद हो गई किन्तु सर्दी इतनी अधिक थी कि कोई भी बाहर न जा सकता था। ऐसा प्रतीत होता था कि बसंत के आने में अभी वर्षों लगेंगे।

ऐसी स्थिति में परहंसा को बिल्कुल नींद न आई। उसकी इच्छा हो रही थी कि बच्चों की तरह रो पड़े। वह सोच रहा था—'मैं तो पुराना नाविक हूँ, खेती का तो मुझे कुछ भी पता नहीं। मैंने केवल इसलिये अपने लिये विपत्ति निमंत्रित करली है कि मैं इस काम में सर्व प्रथम रहना चाहता था। अब बर्फ से ढकी जमीन में मेरा सारा बीज नष्ट हो जायेगा और उससे कुछ भी प्राप्त न होगा।' उसने कुछ न खाया और जब भी बैरेट उसके पास जाती या उससे बात करती वह चिल्ला पड़ता था।

आखिर सूर्य निकल आया किन्तु उससे बर्फ पिघलनी आरम्भ न हुई। परहंसा दीवार की ओर मुंह किये बिस्तर में ही लेटा रहा

और सोचता रहा—'जब ईश्वरीय शक्ति भी मेरे विरुद्ध काम कर रही है तो मैं क्या कर सकता हूँ ···· यदि शैतान ही मेरा पीछा कर रहा है तो पशुशाला में पड़ी रस्सी ही मेरी सहायक हो सकती है।'

बर्फ तेजी से पिघल गई और जमीन सूख गई। फिर सूर्य निकल आया और धूप रहने लगी। यह धूप धरती, आकाश और सब जगह फैल गई। अब रात के समय भी ठंड नहीं होती थी। किन्तु अब भी परहंसा का बीज पाले और बर्फ से विनष्ट हुआ भूमि में ही पड़ा था। अब टानसेटन ने बीज बोना आरम्भ किया और परहंसा के लिये यह देखना असह्य हो गया। वह अपने खेत में गया और उसने एक बीज निकाल कर देखा। इसका रंग सुनहरी नहीं था वरन् वह सफेद और गंदा था और फूटने वाला था। उसने मन ही कहा—'निश्चय ही यह पाले का प्रभाव है। यह सड़ना आरम्भ हो गया है। निस्संदेह शैतान मेरा पीछा कर रहा है।'

उसके पास भूमि का एक और टुकड़ा शेष था। उसमें उसने आलू बो दिये। यह चार एकड़ खेत था और उसने तथा लड़कों ने हिसाब लगाया कि उसमें से बेचने के लिये छः सौ बुशल आलू निकल आयेंगे। अब बचाव का यही साधन था। परहंसा जानता था कि उसे निरंतर काम करते रहना चाहिये अन्यथा वह पागल हो जाएगा। शैतान उसका पीछा कर रहा था और वह कुछ न कर सकता था।

जितने आलू वे बचा सकते थे उसने ले लिये और उसके इतने छोटे-छोटे टुकड़े कर लिये जितने सारे खेत के लिये पर्याप्त थे। फिर उसने तथा लड़कों ने उन्हें बो दिया। रविवार को प्रातः वह इतना थका हुआ था कि वह देर तक बिस्तर में लेटा रहा। बैरेट मेज पर बैठी बाइबल पढ़ रही थी। परहंसा की उदासी के दिनों में बैरेट उस से प्रायः कोई बात न करती थी। वह इन दिनों बहुत कम बोलती थी। परहंसा यह सोचने का प्रयत्न कर रहा था कि क्या किया जाये जिससे गेहूँ का बीज नष्ट न हो, किन्तु जितनी ही बार

उसने इस प्रश्न पर विचार किया, उसे कोई उत्तर न मिला।

तब उसे लड़कों के इतना तेज़ दौड़ने की आवाज़ सुनाई दी कि उसके उठकर बैठने से पहले ही लड़कों ने दरवाज़ा खोल दिया। ओल भागा हुआ आया—"गेहूँ की कोंपलें निकल आई हैं" वह जोर से बोला। "क्या तुमने मेरी आवाज़ नहीं सुनी!" हँस उसके पीछे पीछे आता हुआ चिल्लाया—"पौधे इतने इतने ऊँचे हो गये हैं। क्या अब हम बन्दूक खरीद सकते हैं?"

परहंसा कुछ नहीं बोला, बल्कि उठा और बाहर चला गया। उसने खेत को देखा तो निस्तब्ध खड़ा रह गया। अनायास उसकी हर्षमिश्रित चीख सी निकल गई। उसने देखा सारे खेत में नन्हीं-नन्हीं हरी कोंपलें धूप में लहरा रही हैं। वह उन्हें देखता का देखता रह गया। जब वह घर लौटा तो वह बिल्कुल बदला हुआ था। जब उसने घर में प्रवेश किया बैरेट अभी बाइबल पढ़ रही थी। उसने बैरेट की ओर देखा और कहा—"अच्छा हो जो हमें भी कुछ पढ़कर सुनाओ। लड़को, अब शोर मत करो। आओ यहाँ चुपचाप बैठ जाओ। तुम्हारी मां हमें बाइबल पढ़कर सुनायेगी।"

वसन्त ऋतु में और लोग यहाँ बसने के लिये आ गये। आइरिश लोग लौट आये फिर वार्सिग और सार्गनिग तथा अन्य लोग आ गये। सिवाय एक टारकल टालकसेन के वे सब भले लोग थे। किन्तु टारकल टालकसेन के पास अन्य लोगों की अपेक्षा अधिक धन था और बातें करने में वह टानसेटन से भी बाज़ी ले गया। वह सबसे यही कहता फिरता था कि चाहे कोई भी काम हो उसे करने का उसका ढंग ही सब से अच्छा है। खेत में काम करने की बजाय वह पहले लकड़ी का मकान बनाना चाहता था। किन्तु अन्य लोग इतने व्यस्त थे कि वे उसकी आवश्यकता की सब चीज़ें लाने के लिये उसके साथ शहर नहीं जा सकते थे, अतः उसे भी अन्य लोगों की तरह पहले झोंपड़ी ही बनानी पड़ी।

बैरेट बोली—"मैं तो यह देखना चाहती हूँ कि यहाँ कम से कम एक लकड़ी का मकान बन जाए चाहे वह हमारा न भी हो। मैं भली प्रकार जानती हूँ कि मनुष्यों को पशुओं की तरह नहीं रहना चाहिये किन्तु जब मनुष्य पशु ही बन जायें तो फिर चाहे मकान कैसे भी हों कोई फर्क नहीं पड़ता। किन्तु मनुष्यता का द्योतक कुछ तो यहाँ होना चाहिये!"

वह इस प्रकार बोल रही थी जैसे किसी से कुछ कहने की बजाय स्वयं ही ऊँचे स्वर में सोच रही हो। परहंसा खिन्न भाव से बाहर चला गया और फिर उसकी लौटने की इच्छा न हुई। उसकी आँखों में आँसू थे। वह सोचने लगा—'मैं हूँ कि निरंतर काम करता रहता हूँ और वह कहती है—'तुम अच्छे नहीं हो'। क्या मेरी प्यारी बैरेट टारकल टालकसेन से ऐसी बात कहेगी। उसे क्या हो गया है? क्या मेरा सारा परिश्रम अन्त में व्यर्थ जायेगा।'

कुछ और लोग वहाँ आये जो केवल विश्राम करने के लिये एक दिन रुके। वे पश्चिम में और आगे किसी ऐसे स्थान पर जा रहे थे जहाँ अधिक भीड़ नहीं थी। इस तरह से कई लोग आते रहे।

तीन दिन द्वारा मैदान धुंध से ढका रहा। तीसरे दिन शाम को मौसम कुछ साफ हुआ और डूबते हुए स्वर्णिम सूर्य का दृश्य दृष्टि-गोचर हुआ। बैरेट आँगन में बैठी दूध दुह रही थी। उसने दृष्टि उठाई तो उसे एक गाड़ी अपनी ओर आती हुई दिखाई दी। गाड़ी के पीछे पीछे दो गायें थीं और उनके साथ-साथ एक थका हुआ आदमी तथा एक नवयुवक धीरे-धीरे चला आ रहा था। "क्या यहाँ कोई नार्वेजियन है?" आदमी ने पूछा।

परहंसा पशुशाला से बाहर आया और बोला—"तुम नार्वेजियन चाहते हो तो तुम्हारा सौभाग्य है कि हम नार्वेजियन ही हैं।"

आदमी ने पूछा—"क्या हम यहाँ एक रात ठहर सकते हैं?" परहंसा ने, जो पहले ही गाड़ी से सामान उतारने में उस आदमी की

सहायता कर रहा था, सहमति दे दी। दो और लड़के तथा एक लड़की गाड़ी से बाहर आए। तब उस आदमी ने पुकारा—"क्या तुम भी बाहर आ रही हो?" लड़की ने पिता से कहा—"पहले रस्सी तो खोल दो। तुम्हें याद क्यों नहीं रहता?"

फिर वह आदमी गाड़ी में घुसा और परहंसा ने भी अन्दर झाँका। अन्दर उसने जो देखा, उसे विश्वास न हुआ और भय से उसका मुख विवर्ण हो गया। वहाँ एक स्त्री कपड़ों के ढेर पर बैठी थी और एक संदूक पर झुकी हुई थी। उसके हाथ संदूक की हत्थी के साथ बंधे हुए थे और उसके चेहरे पर असाधारण भाव लक्षित हो रहे थे।

उस आदमी ने परहंसा की ओर कोई ध्यान न दिया और उस स्त्री की सहायता करते हुए उसे नीचे ले आया। "सब ठीक हो जायेगा" उसने ऐसे कहा जैसे किसी बच्चे से बात कर रहा हो।

बैरेट भागी-भागी उस स्त्री के पास गई और अपना हाथ उसकी कमर में डाल दिया। दोनों ने एक दूसरे की ओर देखा और आँखों ही आँखों में एक दूसरे के भाव समझ गईं। "नहीं यह भी वह जगह नहीं"—वह स्त्री बैरेट के साथ कमरे में प्रविष्ट होने से पहले ही चिल्लाती हुई बोली।

फिर वह आदमी परहंसा को अपनी कहानी सुनाने लगा, "चार और गाड़ियाँ हमारे साथ ही चली थीं किन्तु जब हमारे ऊपर विपत्ति आई तो अन्य लोगों को आगे चले जाना पड़ा।" वह व्यक्ति ऐसे विचित्र ढंग से अपनी कहानी सुना रहा था जैसे निरन्तर चिल्ला रहा हो। "हमें मिनीसोटा से चले प्रायः छः सप्ताह हो गए हैं और हमें यह भी पता नहीं कि हम कहाँ पहुँचे हैं। हम तो सारा रास्ता भूलते-भटकते चले आ रहे हैं और अब सब आशा खो बैठे थे कि आपके घर पहुँच गए। हम पर न जाने कितनी विपत्तियाँ आई हैं" इतना कह उस व्यक्ति ने फिर अपनी आँखें पोंछीं।

"क्या तुम्हारी स्त्री बीमार है ?" परहंसा ने पूछा।

"पता नहीं"—वह व्यक्ति धीमे स्वर में बोला—"वह तो सदा की तरह अच्छी भली प्रतीत होती है, किन्तु स्त्रियां विपत्ति सहन नहीं कर सकतीं, भगवान् जानता है। और फिर वह मां है और हमें अपना सबसे छोटा बच्चा इस निर्जन मैदान की एक कब्र में छोड़ आना पड़ा है।

यह सुन परहंसा को रुलाई सी आ गई—"यह सब कैसे हुआ ?" उसने नम्र भाव से पूछा।

उस आदमी ने फिर अपनी गाथा सुनानी आरम्भ की—"नन्हा बच्चा बीमार हो गया था। रास्ते में हम जिस डाक्टर के पास गए वह कुछ जानता नहीं था। हम तो बस इतना ही कर सके कि गाड़ी को यथासम्भव तेज चलाने लगे ताकि अपने साथियों से जा मिलें। किन्तु एक रात उसने प्राण त्याग दिये और हमें मार्ग में उसे दबा देना पड़ा जहाँ हमने निशानी के लिये एक बड़ा पत्थर रख दिया। इस घटना को हुए पांच रातें हो गई हैं। तभी से मुझे अपनी पत्नी को बांधे रखना पड़ता है नहीं तो वह गाड़ी से उतर जाती है और अपने पुत्र को ढूंढ़ने के लिए पीछे की ओर चल पड़ती है। यदि हम वापस जाकर लड़के के शव को न लाये और उसे अपने लोगों की बस्ती में नई कब्र में न दबाया तो मेरी पत्नी पागल हो जायेगी।"

परहंसा ने उन सब से अन्दर जाने के लिये कहा। बैरेट उस स्त्री से बातें करने में व्यस्त थी जो आखिर सो गई। बैरेट ने उसके लिये सब सुविधा की व्यवस्था कर दी और फिर दुःख के मारे अतिथियों के रात के विश्राम के लिये सब प्रबन्ध कर दिया। जब वे सब आराम करने चले गये तो परहंसा ने बैरेट से पूछा—"क्या स्त्री ने कुछ कहा है ?" बैरेट बोली—"यूंही कुछ-एक बातें की हैं, इतनी नहीं कि कुछ समझ आ जाये।" तब परहंसा ने उस परिवार की कहानी सुनाई और कहा—"कल मैं और हंस ओलसा इस

आदमी के साथ लड़के को ढूंढ़ने जायेंगे। हमें उसे दफन करने के लिये एक सन्दूक भी तैयार करना है। उसे इस प्रकार बाहर पड़े रहने नहीं दिया जा सकता।"

बैरेट ने परहंसा की बात का कोई उत्तर नहीं दिया। आखिर वह अत्यन्त कटु स्वर में चिल्लाती हुई बोली—"अब तुम देख रहे हो यह जीवन नहीं है। मनुष्य इस प्रकार नहीं रह सकते।" परहंसा उसके इस स्वर का भाव न समझ सका और चकित-सा रह गया किन्तु उसने एक ही क्षण सोचा और फिर उस आदमी के बारे में सोचने लगा।

घर में प्रवेश करते ही वह स्त्री विश्राम करने लगी। यहाँ उसे सब कुछ—बिस्तर, पानी, अंगीठी और सद्भावपूर्ण चेहरे अपने ही घर सरीखे लगे। नींद आ जाने से पूर्व उसे उसकी सहायता करते हुए बैरेट के सुकोमल हाथों का स्पर्श अनुभव हुआ। उसके बाद उसे कुछ स्मरण न रहा और मन में यही विचार आने लगा कि उसका नन्हा बालक बाहर निर्जन प्रदेश में खुले ही पड़ा है।

वह सोई पड़ी रही। प्रातः सवेरे ही उसकी नींद खुल गई। अब भी उसके मन में अपने बच्चे का ही विचार था। उसने सोचा—'मुझे जाकर उसे तलाश करना चाहिये। बस अब पति के उठने से पूर्व मुझे चल ही देना चाहिये अन्यथा वह मुझे जाने नहीं देगा।' वह चुपके-चुपके बिस्तर से निकली और फिर अकस्मात् अपने साथ सोती हुई एना मेरी को गोद में उठा लिया और जल्दी से बाहर चली गई। जाते हुए उसने दरवाज़ा खुला ही रहने दिया ताकि उसे बन्द करने से कोई और न जाग पड़े। वह घर से दूर चली जा रही थी।

बैरेट नींद ही में कुछ हिली। उसे एक ऊँची आवाज़ सुनाई दी, किसी ने उसे कई बार पुकारा। आखिर वह जाग पड़ी। वह बहुत थकी हुई थी अतः धीरे-धीरे उठी किन्तु जब उसने दूसरे

बिस्तर की ओर देखा तो वह खाली दिखाई दिया। तब वह तेजी से उठ खड़ी हुई।

उसने अपने पति को पुकारा—"वह चली गई है—वह चली गई है—जल्दी करो।"

परहंसा ने तुरन्त उठकर अपने कपड़े पहन लिये। वह बोला—"तुम तुरन्त हंस ओलसा के पास जाओ और उसे आने के लिये कहो। हम अभी चल पड़ेंगे।"

जब वे बाहर निकले दिन निकल रहा था। परहंसा ने अपनी गाड़ी में खड़े होकर चारों ओर के निर्जन मैदान को देखा। उसे पास ही की पहाड़ी पर कुछ दिखाई दिया। वह तथा बैरेट उस ओर दौड़ पड़े। वह स्त्री उन्हें देखकर चुपचाप खड़ी उनके आने की प्रतीक्षा कर रही थी।

जब परहंसा ने देखा कि उस स्त्री की गोद में क्या है तो उसका रंग भय से पीला पड़ गया। वह और भी तेज़ भागने लगा और जाकर उसने स्त्री की गोद से एना मेरी को ले लिया और भींच कर गले से लगा लिया। जब बैरेट पहुँच गई तो उसने थकी नन्ही बच्ची को उसकी माँ को सौंप दिया। उसे गोद में संभाले बैरेट के हाथ शिथिल थे। उसने अनुभव किया कि जो आवाज़ उसे पुकार रही थी वह भगवान् की ही थी, जो रात भर उनके पास रहा था।

परहंसा उस स्त्री के साथ धीरे-धीरे घर की ओर चल पड़ा। रास्ते में परहंसा ने उसे बताया कि वे उसके बच्चे को ढ़ूँढ़ने जा रहे हैं। "जल्दी जाओ"—स्त्री बोली—"वह बेचारा सर्दी में पड़ा है।" वह इसके अतिरिक्त कुछ न बोली और जब वे जाने के लिए तैयार हो रहे थे वह निर्निमेष नेत्रों से उन्हें देखती रही। पुरुषों ने एक छोटा सा तावूत बना लिया और बैरेट ने सफेद कपड़े से उसकी झालर बना दी। फिर परहंसा, हंसा ओलसा, वह आदमी और उसकी पत्नी चल पड़े। वे उस विशाल पत्थर की तलाश में

चार दिन घूमते रहे किन्तु जब वे लौटे तो बच्चे को दबाने के लिये बनाया गया सन्दूक खाली ही था।

बच्चे को तलाश करके आने के एक दिन पश्चात् अतिथि चल पड़े। वे जेम्स नदी की ओर जा रहे थे। जब परहंसा ने इस व्यक्ति से पूछा कि क्या उसे पता है कि जेम्स नदी कहाँ है तो उसने उत्तर दिया—"निस्सन्देह, वह पश्चिम की ओर है। मुझे तो सिर्फ उस दिशा की ओर बढ़ते रहना है।" परहंसा समझ गया कि और कुछ पूछना व्यर्थ है, अतः उसने उनके प्रस्थान में यथासम्भव उनकी सहायता की।

वह स्त्री चुपचाप और खोई हुई सी प्रतीत होती थी। जब तक चलने का समय न हुआ वह हाथ पर हाथ धरे बैठी रही। वह आदमी उसी विचित्र स्वर में, जिसमें उसने यहाँ आने के दिन बातचीत की थी बहुत कुछ कहता रहा, फिर उसका काम समाप्त हो गया और उसने सब का धन्यवाद किया। वह गाड़ी पश्चिम की ओर चल पड़ी और आखिर रात्रि के अन्धकार में विलीन हो गई।

बैरेट एक छोटी पहाड़ी पर बैठी उन्हें देखती रही और आखिर गाड़ी आँखों से ओझल हो गई। उन्हें विदा करते हुए उसे प्रसन्नता हुई किन्तु वह मन ही मन सोच रही थी कि उन्हें जाने नहीं देना चाहिए था। वह बहुत उदास थी। उसके मन में आया—'मैं भी कैसी हूँ कि मुझे जिन विपत्तियों का सामना करना पड़ा है उनसे भी अधिक भयावहं विपत्तियों के लिये मैंने इन बेचारों को भेज दिया है।' उसे ऐसा लगा कि मानो वे लोग धरती में धंसते चले जायेंगे और आखिर उनका कुछ भी न बचेगा। अब तो ऐसा लगता था कि रास्ते में ही उन्हें वर्षा घेर लैगी। घने काले बादल मैदानों पर घिरते आ रहे थे। बैरेट धीरे-धीरे अपने छोटे से प्यारे घर की ओर चल पड़ी और रात्रि का भोजन तैयार करने लगी और मन ही मन सोचने लगी कि मैं किसी के लिये तो प्रसन्नता का कारण बनूं।

किन्तु रात्रि के भोजनोपरान्त वह फिर पहाड़ी पर चली गई और गाड़ी की दिशा की ओर देखने लगी यद्यपि इस समय उसे कोई गाड़ी दिखाई नहीं दे रही थी। सोचने लगी—'बेचारे,! ईश्वर कैसे मनुष्यों पर ऐसी विपत्तियाँ ढा रहा है। वह तो सब से प्रेम किया करता था। कुछ समझ में नहीं आता। अवश्य ही शैतान हम सब के पीछे लगा हुआ है।' वह ऊपर काले बादलों की ओर देखती रही। काले बादल की एक बड़ी टुकड़ी उसे ऐसी लगी मानो शैतान स्वयं ऊपर से उसे घूर रहा है। उसने मन ही मन कहा—'मैं ठीक ही तो कहती थी। मैं सदा यह कहती रही हूँ कि मनुष्य इन मैदानों में नहीं रह सकते और मेरा यह कथन ठीक ही था।' वह देर तक इसी प्रकार बैठी रही और आखिर वह घबराई हुई घर भाग आई तथा उसने सब खिड़कियाँ बन्द कर लीं।

जब परहंसा और लड़के हँसते और प्रसन्नता से परस्पर बातें करते हुए घर लौटे तो परहंसा बैरेट के पास गया। उसने बड़े मधुर स्वर में उसे पुकारा—"मेरी प्यारी बैरेट इधर आओ।"

जब वह उसे अपने आलिंगन में लेने लगा तो बैरेट चिल्ला पड़ी—"नहीं-नहीं, यह नहीं।" क्या उसे पाप और शर्म का कोई बोध नहीं ? यह इस बात का प्रमाण था कि शैतान उनके पीछे लगा हुआ है।

अब निरन्तर बैरेट को शैतान का वह चेहरा दिखाई देता रहता था और विशेषतः शाम को उसे ऐसा लगता कि शैतान ऊपर से उसे ही घूर रहा है। काम करते-करते वह अनुभव करती कि वह बीमार है और काम छोड़ कर बैठ जाती। फिर उसे बादलों में घिरे उस चेहरे का ध्यान आ जाता और वह सोचती, 'क्या लोग भी इसे नहीं देखते ? उन्होंने भी अवश्य इसे देखा होगा।'

अब वह प्रतिदिन रात को खिड़कियाँ बन्द कर दिया करती थी चाहे परहंसा घर पर ही हो। पहले-पहल तो परहंसा हँस देता

ग्रौर उससे प्यार करने का प्रयत्न करता किन्तु शीघ्र ही बैरेट के भय ने उसे भी ग्रा घेरा यद्यपि उसे पता न था कि बैरेट किस से डरती है। उसे तो बस यह डर था कि उसकी प्यारी पत्नी को क्या हो रहा है।

: २ :

जुलाई तक सारे खेत गेहूँ की सुन्दर घनी बालियों से भर गए। सारा दिन उन पर सूर्य चमकता था वे निरन्तर बढ़ रही थीं ग्रौर उन्हें देखते-देखते परहंसा का मन कभी तृप्त न होता था। ग्रब तो केवल उस समय उस पर उदासी छा जाती थी जब वह बैरेट की ग्रोर देखता था। उसे पता न था कि बैरेट को क्या हो गया है। वह सोचने लगा—'सम्भवत: उसके लिये लकड़ी का बड़ा मकान बना दिया जाये तो उसे प्रसन्नता हो। मैं शीघ्र ही, चाहे तो इसी वर्षा काल में मकान बनाना ग्रारम्भ कर दूंगा। क्यों नहीं? जब मेरी सारी खेती बढ़ रही है तो मेरे पास इतना धन होगा कि मैं ग्रपनी प्यारी बैरेट के लिए ग्रपनी कल्पना का घर भी बना सकूंगा।'

उनके ग्रालू पैदा हो गए थे ग्रौर वे प्रतिदिन नये ग्रालू खाने लगे थे जबकि ग्रन्य किसी के खेत में ग्रालू नहीं थे। जई भी खूब ऊँची हुई थी किन्तु उनके गेहूँ सबसे बढ़िया थे। उसके पड़ोसी ग्रौर नये ग्राइरिश लोग भी उसका गेहूँ का खेत देखने ग्राये। परहंसा ग्राइरिश लोगों को बहुत पसन्द करने लगा था ग्रौर उसकी इच्छा होती थी कि उनसे बात कर सकता। उसने उन्हें ग्रपने नये ग्रालू भी दिये।

परहंसा को ग्रब गेहूँ काटने की कोई जल्दी न थी। वह प्राय: बैरेट से कहा करता था—"ग्राग्रो देखो न।" कभी एक-ग्राध बार वह उसके साथ गई ग्रौर उसने खेत की प्रशंसा भी की किन्तु ग्रधिकतर उसे कोई न कोई काम होता था ग्रौर वह परहंसा के साथ ग्रंधेरा होने तक बाहर न रहती थी।

ग्राखिर एक दिन टानसेटन ग्राया' ग्रौर बोला—"हम ग्राज ही बाद दोपहर कटाई ग्रारम्भ कर देंगे। मैं ग्रपने सभी मित्रों के लिये कटाई का काम करूँगा क्योंकि तुम नहीं जानते कि यह कैसे किया जाता है। हंस ग्रोलसा की फसल भी प्रायः तैयार है। इसलिये पहले तुम्हें ग्रपने खेत की कटाई करवानी होगी। सोलम लड़के तुम्हें बतायेंगे कि बालियाँ कैसे बाँधी जाती हैं। क्योंकि तुम दोनों पुराने नाविकों के लिए तो यह सब काम नया ही है।"

उस दिन बाद दोपहर टानसेटन सभी के लिए ग्राकर्षण केन्द्र बना हुग्रा था। बस्ती के सभी लोग फसल की कटाई देखने ग्राए थे ग्रौर टानसेटन कटाई कर रहा था। उसने कभी भी यह ग्रनुभव नहीं किया था कि वह इतना ग्रधिक महत्त्वपूर्ण व्यक्ति है। उसने ध्यानपूर्वक भारी मशीन को देखा ग्रौर उसमें घोड़े जोत दिये तथा काम करना ग्रारम्भ कर दिया। शाम तक मशीन ग्रागे-पीछे ग्राती जाती रही ग्रौर उसके लाये हुए गेहूँ को लोग बाँधते रहे। परहंसा ने सोचा कि प्रति एकड़ चालीस बुशल गेहूँ निकलेगा।

वे सूर्यास्त होने तक काम करते रहे। किन्तु ग्राखिर गेहूँ इतने गीले हो गये कि मशीन चलनी बन्द हो गई। सभी थक गये थे किन्तु कोई भी पहले यह न कहना चाहता था। परहंसा के घर बैरेट ग्रौर सोरीना ने सब के लिये रात्रि के भोजन का बड़े पैमाने पर ग्रायोजन किया ग्रौर पुरुषों ने दिन भर के परिश्रम के पश्चात् खूब जी भर कर खाया। खाना खाते हुए वे ग्रापस में बातें कर रहे थे कि जब पहले वर्ष इतना बढ़िया गेहूँ उपजा है तो वे कितने धनी हो जायेंगे। वे ग्रनेकानेक योजनाग्रों पर विचार कर रहे थे।

ग्रगले दिन गेहूँ की कटाई समाप्त हो गई। टानसेटन ने शेष खेतों की कटाई के बारे में विचार बदल दिया। उसने कहा—"कोई जल्दी नहीं एक सप्ताह ग्रौर प्रतीक्षा की जा सकती है······तब गेहूँ की इतनी बढ़िया फसल कटाई के लिये तैयार हो जायेगी कि जितनी

इतिहास में कभी नहीं हुई।" अब उसे परहंसा के चार एकड़ जई की कटाई करनी थी।

अतः लोग आराम से परहंसा की पशुशाला के निकट छाया में बैठे हुए थे। पश्चिम की ओर से शीतल पवन चलने लगी। गेहूँ के पकने के लिये यह बहुत अच्छा मौसम था। टानसेटन अपूर्व आनन्द का अनुभव कर रहा था......क्योंकि आखिर वही तो सबको इस उपजाऊ भूमि पर लाया था। "क्या सोचते हो परहंसा ?" उसने हँसते हुए पूछा।

परहंसा ने कोई उत्तर न दिया। वह खड़ा पश्चिम की ओर देख रहा था जहाँ उसे एक काली सी लहर अपनी ओर आती हुई दिखाई दे रही थी। अकस्मात् भय से उसका शरीर ठंडा हो गया। सोचने लगा—'क्या यह तूफ़ान हो सकता है ?' वह हंस ओलसा के पास गया और उसे भी वह काली लहर देखने के लिये कहा। 'ओह तूफान' हंस ओलसा चिल्लाया। वे दोनों भागे-भागे टानसेटन के पास पहुँचे जो कटाई समाप्त करने ही वाला था। उसने भी देखा।

तीनों ने पहले कभी ऐसी चीज़ न देखी थी। पश्चिम से बादल की परतें की परतें बढ़ी आ रही थीं; ये सामान्य बादलों जैसे नहीं थे। वे तो समुद्र की लहरों की तरह तेज़ी से बढ़ रहे थे और उनमें एक चमक भी थी। जब बादल अधिक निकट आ गये तो उन्हें मद्धम गर्जन की सी आवाज सुनाई दी और वे चमकदार बादल उनके सिर पर पहुँच गये।

एक ही मिनट में उस बादल ने उन्हें घेर लिया। खेतों में घोड़े दौड़ने लगे और टानसेटन ने उन्हें खोला तथा शान्त किया। वे पशुशाला की ओर भाग गये और नदी पर चरती हुई गायें भी छत तले छिपने के लिये भागीं। अन्य लोग हवा में हाथ छटपटाते और भागते हुए आ गये। कोई कुछ न बोला। सभी अज्ञात भय से जड़ हो गये थे।

फिर वह बादल बिखर गया और छोटे-छोटे फुदकते हुए कीड़ों

ने निराश्रित लोगों को काट खाया और फिर वे उड़े तथा शोर करते हुए खेत पर टूट पड़े। वे काले तथा भूरे कीड़े निरन्तर शोर कर रहे थे। नन्हा हंस पिता को दिखाने के लिए एक कीड़ा पकड़ लाया। यह एक इंच लम्बा था, रंग भूरा तथा छोटे-छोटे पंख थे, पतली टाँगें थीं तथा बड़ी-बड़ी काली आँखें थीं।

"फेंक दो इसे, बच्चे"—बेरेस्ती चिल्लाई।

किन्तु ऐसे ही अन्य कीड़ों से वे छुटकारा न पा सके। उन्होंने लाखों की संख्या में छोटे-छोटे शैतानों की तरह सारी पृथ्वी को ढक लिया और सभी चीज़ों को घेर लिया। लोग भयाक्रान्त अवस्था में खड़े देखते रहे। यह तो बाइबल में वर्णित महामारी की सी महामारी थी। भगवान उनके माध्यम से उन्हें कुछ कहना चाहता था।

"ईश्वर ने जो कुछ हमें दिया है उसे वापिस लेना चाहता है" टानसेटन बोला। "हमें इतना गर्व हो गया था कि यह न सोच सके कि इतने अच्छे गेहूँ की कटाई न कर सकेंगे।"

परहंसा को ऐसी बातों पर क्रोध आ गया—"क्या तुम समझते हो कि ईश्वर को हमारे गेहूँ की आवश्यकता है?" उसने पूछा। इससे स्त्रियों का मन कुछ संभला किन्तु हंस ओलसा और टानसेटन ने अपने विचार को न बदला। आखिर हैनरी सोलम ने मौन तोड़ा—"आओ आज हम जो कुछ कर सकते हैं करें क्योंकि कल तो कुछ भी नहीं बचेगा।"

परहंसा सोचने लगा—'इन शैतानों को किसी तरह रोकना चाहिए।' ओल ने उसे बन्दूक लाकर दी और परहंसा ने एक दनदनाता गोली चला दी। इस पर वे कीड़े उठकर ऊपर हवा में एकत्र हुए और बादल बन कर उड़ गये। केवल कुछ कीड़े खेत में पड़े रह गये।

"क्या सच वे चले गये हैं?" हैनरी सोलम ने पूछा।

"हाँ"—हंस ओलसा बोला—"यहाँ से तो वे चले गये हैं। किन्तु उधर दूसरे खेतों को देखो।" वह बादल केवल थोड़ी दूर परे

चला गया था। किन्तु परहंसा को यह सुनाई न पड़ा और वह कटाई में सहायता करने के लिए तेज़ी से चला गया। शाम तक उन्होंने जई के खेत की कटाई समाप्त कर ली।

फिर सब लोग यह देखने के लिए अपने अपने खेतों में गये कि कुछ फसल बचाई जा सकती है अथवा नहीं। यदि कुछ बच गया हो तो कल कटाई ही आरम्भ कर दें।

परहंसा भी जब घर गया तो बहुत उदास था। यद्यपि उसकी फसल अन्दर लाई जा चुकी थी किन्तु वह और बातें सोच रहा था—'मेरी ही फसल क्यों बच गई है जबकि मेरे पड़ोसियों ने मुझ से अधिक नहीं तो मेरे जितना ही कठिन परिश्रम किया है और उन्हें हानि उठानी पड़ी है। तो भगवान मुझ से क्या चाहता है ?' सारा दिन काम करते हुए वह बैरेट के विचार से चिन्तित रहा किन्तु बैरेट के बारे में सोचने के लिये उसके पास अधिक समय नहीं था। सारा दिन बैरेट किसी को दिखाई नहीं दी। परहंसा ने सोचा वह बच्चों के कारण घर बैठी रही होगी। किन्तु फिर वह अपने मन को इस आशंका से मुक्त न कर सका कि घर में कोई भयानक बात हो गई है।

घर में पूर्ण मौन था और दरवाज़ा सख्त बन्द था। उसने दूर से कान लगा कर सुना और उसे ऐसा लगा कि कोई आवाज़ आ रही है। "ईश्वर का धन्यवाद है"—उसने कहा। किन्तु दरवाज़ा नहीं खुला। उसने उसे धकेला किन्तु कोई भारी चीज़ वहाँ रखी हुई थी अतः दरवाज़ा नहीं खुलता था। "बैरेट" उसने ऊँचे स्वर में पुकारा—"दरवाज़ा खोलो। तुम कहाँ हो ?"

उसने सुना फिर उसे एक आवाज़ सुनाई दी, किन्तु फिर मौन छा गया। 'यह हो क्या गया है' —उसने सोचा और फिर अपने पूरे ज़ोर से दरवाज़े को धकेला, किन्तु वह दरवाज़े को इतना ही खोल सका कि जिससे सिकुड़ कर अन्दर जा सका। कमरा खाली था।

"बैरेट" उसने पुनः पुकारा—"बैरेट, तुम कहाँ हो ?"

कोई उत्तर न मिला, किन्तु फिर उसे एक धीमी सी आवाज़ सुनाई दी। उसने सब बिस्तरों पर से चादरें उठा दीं किन्तु वहाँ तो कोई भी नहीं था। फिर उसकी दृष्टि बड़े सन्दूक पर पड़ी जो दरवाज़े के साथ सटा कर रखा हुआ था। किसने इसे वहाँ रख दिया है। फिर उसे ध्यान आया कि वह आवाज़ सन्दूक में से ही आ रही है। उसने तेजी से सन्दूक का ढक्कन खोल दिया और जो देखा उससे स्तम्भित रह गया। बैरेट बच्चे को गोद में लिये सन्दूक में लेटी हुई थी और एना मेरी उसके पाँव में पड़ी रो रही थी……यही आवाज़ परहंसा ने सुनी।

उसे ऐसा लगा कि वह बेहोश हो जायेगा किन्तु नहीं उसे पहले बहुत काम करना था। उसने एना मेरी को बाहर निकाला और उसे बिस्तर पर लिटा दिया, फिर बच्चे को निकाला और आखिर बैरेट को उठाया तथा उसे सन्दूक पर बैठा दिया। उसका चेहरा आँसुओं से भीगा हुआ अपरिचित सा प्रतीत होता था और उसकी निर्निमेष दृष्टि शून्य में टिकी हुई थी।

"क्या शैतान ने तुम्हें अभी तक नहीं पकड़ा ?"—बैरेट ने विचित्र से स्वर में उससे पूछा। "वह तो सारा दिन इधर घूमता रहा है। सन्दूक को फिर वहीं दरवाज़े के साथ लगा दो। हम सब को सन्दूक में छिप जाना चाहिए……वह सन्दूक को उठाने का साहस नहीं करेगा।"

अब परहंसा अपने आप को न रोक सका और अपना सिर उसकी गोद में रख कर बच्चों की तरह फूट-फूट कर रोने लगा। बैरेट उसके बालों में उंगलियाँ घुमाती हुई, उसी विचित्र स्वर में नम्रता से बोली—"अपने महान् पाप के लिए रोओ। मैं प्रतिदिन रात को रोती हूँ चाहे उससे भी सहायता नहीं मिलती। इस निर्जन प्रदेश में तुम्हारे रोने की आवाज़ कोई नहीं सुन सकेगा। रोओ,

रोओ, डरो नहीं, क्योंकि सब समाप्त होने से पूर्व की स्थिति बहुत बुरी होती है।"

परहंसा ने अपनी पत्नी की आँखों की ओर देखा तो उसके मुंह से एक तीखी चीख निकल गई और फिर वह निश्चेष्ट हो गया। तो भगवान उससे यही चाहता था।

यह तो अभी आरम्भ था। पाँच वर्ष तक प्रतिवर्ष वे भयानक कीड़े आते रहे और जो कुछ भी उन्हें दिखाई देता उसे चट करते रहे। इस विपत्ति के कारण वहाँ बसने वाले कई लोग पागलों जैसे हो गये, कई भिखारी बन गये, और कई सब कुछ खोकर लौट गये। किन्तु उनमें से बहुत से वहीं रह गये क्योंकि वे इतने दरिद्र हो गये थे कि जा भी न सकते थे। और फिर वे जाते भी तो कहाँ? अतः वे यहीं रहे और प्रतिवर्ष उन भयानक कीड़ों के आने की प्रतीक्षा करने लगे। कीड़े सिवाय घास के सब कुछ खा जाते थे और घास इसलिये छोड़ जाते थे कि वह मनुष्य के परिश्रम के बिना उगती थी।

वहाँ के निवासियों को विश्वास हो गया था कि यह प्लेग ईश्वर ही भेजता है। भला इसे अस्वीकार भी कैसे किया जा सकता था। सारी गर्मियाँ फसलें बढ़ती रहती थीं और धूप में अनाज पकता रहता था और तब ऐसा लगता था कि स्वर्ग भूमि पर उतर आया है तो पश्चिम से एक बादल आया इन भूरे कीड़ों का बादल जो मनुष्य द्वारा प्रयत्नपूर्वक बोई हुई हर चीज को चट कर जाता था। तो निस्संदेह भगवान ही उन्हें दण्ड देने के लिये शैतान को भेजा करता था।

इससे भी बुरा यह था कि ये कीड़े अंडे छोड़ जाते थे जो सारी सर्दियाँ सख्त भूमि पर पड़े रहते थे और वसन्त में फूट कर वैसे ही नन्हें-नन्हें शैतान पैदा कर देते थे। और ये कीड़े निरन्तर आते रहे। कभी-कभी तो इनका प्रकोप इतना अधिक होता था कि कई दिन तक आकाश साफ नहीं होता था। वे कीड़े सभी कुछ

खा जाते थे यहाँ तक कि लकड़ी के बक्स और बाहर सुखाने के लिये रखे हुए कपड़े भी। कभी-कभी वे एक खेत को खाते और दूसरे को छोड़ जाते थे। जब तक वे चले न जाते कोई कुछ न कह सकता था कि वे क्या कुछ करेंगे।

प्रतिवर्ष लोग कहते कि बस यह आखिरी वार है। वे इकट्ठे होकर भगवान से प्रार्थना करते कि वह उन्हें विपत्तियों से छुटकारा दिलाये, वे यथाशक्ति एक-दूसरे की सहायता भी करते और प्रतीक्षा करते रहते कि कभी इसका अन्त होगा।

भाग सात

: १ :

जून के महीने में, जबकि प्रायः सूर्य चमकता था और गर्मी रहती थी, एक दिन एक विचित्र-सी गाड़ी स्प्रिग क्रीक बस्ती की ओर धीरे-धीरे चली आ रही थी। ऐसा प्रतीत होता था कि गाड़ी अभी गिरी कि गिरी और उसे खींचने वाला घोड़ा भी कोई अच्छा नहीं था। गाड़ी को हाँकने वाला आदमी पैंतालीस वर्ष का था या पैंसठ का कुछ कहा नहीं जा सकता। उसका चेहरा युवकों का-सा था किन्तु शरीर भारी भरकम था और उसकी भारी दाढ़ी में बहुत से सफेद बाल थे। उसके सारे वस्त्र काले थे।

वह धीरे-धीरे गाड़ी को हाँक रहा था और अपने चारों ओर के दृश्यों को देखता हुआ एक गीत गुनगुना रहा था। भगवान भास्कर ने अस्ताचल में गमन किया जबकि वह व्यक्ति स्प्रिग क्रीक की बस्ती में पहुँच गया जहाँ कुछ एक झोंपड़ियां तथा कुछ लकड़ी के मकान बने हुए थे। जब वह पहले मकान पर पहुँचा, सूर्य अस्त हो गया था। "क्या कोई घर पर है ?" उसने पुकारा।

एक रक्तिम चेहरे वाला भारी भरकम आदमी बाहर निकला और उसके पीछे-पीछे वैसे ही भारी आकार की एक स्त्री आई। दोनों कुछ खाने में व्यस्त थे। उस पुरुष ने अपना प्रश्न दोहराया।

"ओह शैतान, क्या तुम नार्वेजियन हो ?" रक्तिम चेहरे वाले आदमी ने पूछा।

"क्या तुम किसी व्यक्ति को बुला रहे हो ?", अपरिचित व्यक्ति ने पूछा।

जब आगंतुक ने कहा कि क्या उसे कुछ भोजन और ठहरने

के लिये स्थान मिल सकता है तो नीचे खड़े वह पुरुष और उसकी पत्नी दोनों मौन हो गये। आखिर वह व्यक्ति बिना उत्तर की प्रतीक्षा किये गाड़ी से उतरा—"और भले आदमी तुम्हारा नाम क्या है ?"

"सिवर्ट टानसेटन। और तुम कौन हो ?" वह अपरिचित व्यक्ति के निकट आकर उसे देखने लगा। वजेरस्ती भी कुछ पूछना चाहती थी। वह भी अपरिचित व्यक्ति को देखने लगी। उसे उस अपरिचित व्यक्ति को घर में ठहराना अच्छा नहीं लग रहा था। टानसेटन फिर बोला—"मैं तुम से पूछ रहा हूँ कि तुम क्या चाहते हो ? क्या तुम्हें भूमि चाहिये ?"

अपरिचित व्यक्ति उत्तर देने से पूर्व एक क्षण रुका और फिर बोला – "मैं पादरी हूँ। और तुम्हें, भले आदमी, यह नहीं चाहिये कि अपरिचित लोगों के सामने गालियाँ निकालो। अब, क्या मैं यहाँ रात भर ठहर सकता हूँ ?"

वजेरस्ती को यह जानकर कि एक पादरी उनके घर ठहरेगा अत्यधिक प्रसन्नता हुई और साथ ही भय भी लगा। वह बोली— "निस्संदेह, यदि आप हमारा खाना पसन्द करें तो आप हमारे पास ठहर सकते हैं।"

"माँ, खाने के लिये कुछ भी हो मुझे स्वीकार है।"—वह बोला "अच्छा तो अब हमें घोड़े के लिये कुछ व्यवस्था करनी चाहिये।"

यह सोचकर कि एक पादरी उनके घर ठहरेगा, टानसेटन का हृदय हर्षातिरेक से इतना अभिभूत हो गया कि वह पहले तो कुछ बोल ही न सका। वे काफी देर पशुशाला में बेचारे घोड़े के लिये व्यवस्था करते रहे और पादरी अनेक प्रकार के प्रश्न पूछता रहा। जब वे झोंपड़ी में आये तो उन्होंने देखा कि वहाँ सफाई की जा चुकी थी और वातावरण बहुत सुखद था। वजेरस्ती ने मेज पर एक सफेद चादर बिछा दी थी और उस पर ताजा दूध, उबले हुए अंडे, रोटी, कहवा तथा केक रख दिये थे, किन्तु वजेरस्ती समझ रही

थी कि यह काफी नहीं और वह कुछ और रख रही थी। पादरी ने प्रार्थना की और फिर वह शीघ्रता से भोजन करने लगा क्योंकि वह बहुत भूखा था।

टानसेटन कमरे के मध्य में, सिर नीचा किये, हाथ लटकाए खड़ा था और भोजन करते हुए पादरी के साथ बातें कर रहा था। वजेरस्ती अंगीठी के पास खड़ी उनकी बातें सुन रही थी। कितना अच्छा होता जो सिवर्ट पादरी के पास जाकर अधिक बोलते हुए अपनी मूर्खता सिद्ध न करता। किन्तु वह तो निरन्तर बोलता ही जाता था और बता रहा था कि भविष्य के बारे में उसकी क्या योजना है, पिछले छः वर्षों में यहाँ आने के बाद उसने कितना काम किया है। वह बीच-बीच में पादरी की राय भी पूछ रहा था।

आखिर पादरी ने भोजन समाप्त किया और बोला—"अच्छा, भले आदमी, अब हम चुप करके इस दिन के लिये भगवान् का धन्यवाद करें।" अब वजेरस्ती बैठ गई किन्तु टानसेटन कमरे के मध्य में खड़ा रहा, उसे पता न लगा कि उसे क्या करना चाहिए।

पादरी इस प्रकार धीरे-धीरे बोला जैसे पास खड़े किसी चिर-परिचित मित्र से बात कर रहा हो। उसने बीते दिन के लिये भगवान् का धन्यवाद किया। उसने प्रार्थना की—"भगवान् सारे दिन में किये गए पापों के लिए क्षमा कर दो। इस घर के लोगों पर विशेष दया करो। विशेष रूप से इस व्यक्ति का कल्याण करो जो बुरा भला कहने के लिये तैयार रहता है। इस निर्जन प्रदेश में रहने वाले लोगों को याद करो जिनके पास न कोई गिरजा है और न पादरी—आमीन।" फिर वह एक क्षण मौन रहा। मोमबत्ती के प्रकाश में उसकी दाढ़ी चांदी की तरह चमक रही थी। कमरे में शान्ति फैल गई। "भगवान् का यशोगान हो"—पादरी ने कहा—"और भले आदमी इस स्वादिष्ट भोजन के लिए तुम्हारा भी यश बढ़े।" टानसेटन इतना अवाक् था कि वह कुछ भी न कह सका

ग्रौर झोंपड़ी से बाहर चला गया। वजेरस्ती प्रसन्नता से विह्वल हुई अब भी चुपचाप बैठी थी।

ग्रब प्राय: प्रत्येक फार्म के साथ एक पृथक् झोंपड़ी भी बन चुकी थी ग्रौर उसी झोंपड़ी में पादरी को सुलाया गया। इस ग्रलग कमरे में बहुत-सी चीजों के ग्रतिरिक्त ग्रागंतुकों के लिये बिस्तर हर समय तैयार रहता था। सिवर्ट ग्रौर वजेरस्ती दोनों पादरी को उसका बिस्तर दिखाने के लिए गए। कमरा बहुत तंग दिखाई देता था किन्तु वहाँ का वातावरण प्रसन्नतादायक ग्रौर सुखद था ग्रौर पादरी ने इस व्यवस्था के लिये भी उनका धन्यवाद किया ग्रौर ग्रभिवादन करके सोने के लिये चला गया।

पिछले दो वर्षों से वृद्धावस्था ने टानसेटन को ग्रा घेरा था। हर वसंत ऋतु में वह खाँसी से ग्रस्त हो जाता था जिससे वह बिल्कुल टूट ही जाता था ग्रौर उसे बहुत नींद की ग्रावश्यकता होती थी। किन्तु ग्राज रात वह ग्रधिक न सो सका ग्रौर ग्रपने घर पादरी के ग्राने की बात ही सोचता रहा कि मेरे घर ग्राज एक पादरी ठहरे हैं,...ग्रौर मैं हूँ कि जिसकी ग्रात्मा ग्रनेक पाप कर्मों से ग्रावेष्टित है।

ग्रगले दिन प्रात: नाश्ते के समय पादरी उनसे कुछ प्रश्न करता रहा। उसने जानना चाहा कि जो घर दिखाई देते हैं उनमें कौन लोग रहते हैं। टानसेटन तो ग्राज नाश्ता ही न कर सका ग्रौर घबराकर जल्दी ही झोंपड़ी से बाहर निकल गया। थोड़ी देर बाद पादरी बाहर ग्राया, वजेरस्ती उसके पीछे-पीछे थी। वह जाने के लिये तैयार था। "यहाँ सबसे बड़ा मकान किसका है?" पादरी ने पूछा।

"वह परहंसा का मकान। उसे ग्रब परहोम कहा जाता है। टारकल टालकसेन एक बड़ा लकड़ी का मकान बना रहा है किन्तु वह ग्रभी तैयार नहीं हुग्रा है।"

"ठीक है" पादरी ने कहा—"भले ग्रादमी तुम्हें ग्रब कुछ काम करना होगा। तुम जाकर ग्रपने सब पड़ोसियों को कहो

कि आज दो बजे मैं परहोम के घर प्रार्थना-सभा करूँगा और धार्मिक उपदेश दूंगा।" फिर क्जेरस्ती को सम्बोधित कर बोला—"और यदि तुम तैयारी करने में श्रीमती होम की सहायता करो तो तुम्हारी बहुत कृपा होगी।"

वे दोनों कुछ क्षण मौन भाव से उसकी ओर देखते रहे, फिर क्जेरस्ती ने उसे बैरेट के सम्वन्ध में बताना आरम्भ किया। बीच-बीच में सिवर्ट भी एक-आध शब्द कह देता था। जहाँ तक धन का सम्बन्ध था उन्होंने बताया कि परहंसा समृद्ध व्यक्ति है किन्तु जब बैरेट के सम्बन्ध में बताने लगे तो पादरी का चेहरा उदास तथा गम्भीर हो गया। आखिर वह बोला—"अच्छा पहले मैं जाकर उन से बात करूँगा फिर तुम कुछ घंटों में आ जाना। "और तुम", उसने टानसेटन को सम्बोधन किया, "अपना काम भली प्रकार करना, लोगों से कह दो कि वे अपने सब बच्चे नामकरण संस्कार के लिए ले आयें और साथ में भजन की पुस्तकें भी लायें।"

टानसेटन अपना काम करने के लिये चला गया जबकि पादरी धीरे-धीरे परहंसा के घर की ओर चल पड़ा।

पादरी अब प्रार्थना आदि कार्यक्रम के लिये वस्त्र पहनकर खिड़की के सामने तैयार खड़ा था। उसके वस्त्र बहुत नये नहीं थे, न ही बहुत साफ थे किन्तु किसी को भी इसका ध्यान नहीं था क्योंकि सभी यह सोच रहे थे कि आखिर एक नार्वेजियन पादरी आया है। और टानसेटन ने सब को बता रखा था कि वह एक असाधारण व्यक्ति है।

सफेद चादर से ढककर एक मेज खिड़की के पास रख दी गई जिस पर घर में बनाई हुई कुछ मोमबत्तियाँ रखी हुई थीं। उस पर एक बाइबल और भजन की पुस्तक भी रखी थी।

सारा घर लोगों से भरा पड़ा था। स्त्रियाँ बिस्तरों पर इकट्ठी बैठी थीं, उनके पीछे बच्चे थे। अन्य लोग बड़े सन्दूक पर और कुछ

कुर्सियों पर, जो हंस ओलसा और परहंसा ने जल्दी में बना ली थीं, बैठे थे। अधिक लोग फर्श पर ही बैठे थे। जिन्हें कहीं जगह नहीं मिली वे या तो बाहर खड़े थे या घास पर बैठे हुए थे। सबने बढ़िया वस्त्र पहने हुए थे।

पादरी उनके सामने आ खड़ा हुआ। "भद्रजनो, अब मौन हो जाओ"—वह बोला। "अब हम कार्य आरम्भ करते हैं।" जब पादरी ने पहली प्रार्थना पढ़कर सुनाई कमरे में मौन छा गया। फिर उन्होंने एक भजन गाया जैसे सचमुच वे एक गिरजाघर में ही बैठे हों। यह कितना विचित्र लग रहा था!

फिर पादरी ने यहूदियों के कनान की भूमि में आने की गाथा सुनाई और उसने उन्हें उन दस यहूदी कबीलों की कहानी भी सुनाई; कि किस प्रकार उन लोगों पर विपत्तियाँ आईं, उन्होंने अपने ईश्वर को भुला दिया और आखिर वे कबीले विनष्ट हो गए किन्तु अन्य दो कबीले विपत्तियों में भी भगवान् के प्रति निष्ठावान रहे और उन्हीं में से जनगण का कल्याण करने के लिये ईसा मसीह का जन्म हुआ।

पादरी ने फिर उन्हें बताया कि वे भी यहूदियों के ही समान हैं, जो घर से इतनी दूर इस अपरिचित प्रदेश में आ गए हैं और यहाँ अनेक विपत्तियों को सहन कर रहे हैं। विशेषत: यहाँ की निर्जनता ही बहुतेरों को हानि पहुँचाती है और फिर टिड्डी दल भी एक बड़ी विपत्ति है। फिर उसने उनके भविष्य का चित्र प्रस्तुत किया और बताया कि भगवान् उन्हें अनेक विचित्र वस्तुएँ प्रदान करेगा जो उसने उन्हें पहले भी दी हैं। तो क्या वे भी कभी उसे स्मरण करते हैं और कभी नत-मस्तक होकर उसका धन्यवाद भी करते हैं। क्योंकि यदि वे एक नये साम्राज्य का निर्माण कर रहे हैं तो वह भगवान् की देख-रेख में होना चाहिये नहीं तो निश्चय ही वे विनष्ट हो जायेंगे।

उसने कहा कि वे यहूदियों की अपेक्षा कहीं अच्छे हैं क्योंकि वे यहाँ दासों के रूप में नहीं वरन् स्वतन्त्र लोगों की तरह आये हैं। क्या वे इस बात को अनुभव करते हैं ? क्या वे भगवान् के यश के लिये कार्य करेंगे और उन दो कबीलों की तरह रहेंगे जो बचे रहे थे या उन दस कबीलों की तरह जो भगवान् के प्रति निष्ठा खो बैठने के कारण विनष्ट हो गए थे ?

पादरी ने बोलते हुए अपने सामने बैठे मौन लोगों पर दृष्टि दौड़ाई। बैरेट एक कोने में अंगीठी के पास बैठी थी। वह सामने बैठे लोगों के पीछे प्रायः छिपी हुई थी और उसकी गोद में पीडर था। परहंसा उसका हाथ पकड़े पास ही बैठा था। यह भाषण सुनते हुए बैरेट के होंठ हिल रहे थे और चेहरे पर चालाकी के भाव टपक रहे थे। उसने यह समझ लिया था कि वह पादरी सच्चा पादरी नहीं है और यहाँ पर भगवान् के यश की बात कहते हुए वह झूठ बोल रहा है। किन्तु वह कुछ बोली नहीं।

भाषण तथा भजन के पश्चात् पादरी ने उन बच्चों का नामकरण संस्कार किया जिनका नामकरण या तो हुआ ही न था और या घर पर ही हुआ था। बच्चे अपने माता-पिता के साथ पादरी तथा मेज पर पड़े पानी के प्याले के निकट पहुँचे। रस्म भली प्रकार पूरी होती रही और सभी ध्यानपूर्वक सुनते रहे। आखिर सोरीना पीडर विक्टोरियस को लिये हुए आई जो ज़ोर-ज़ोर से हंस रहा था और हर किसी से बातें कर रहा था। उसके नन्हें से चेहरे पर सुखद मुस्कान बिखरी हुई थी।

पादरी ने बच्चे का नाम पूछा और फिर नामकरण करते हुए वह ऊँचे स्वर में बोला—"पीडर विक्टोरियस" किन्तु वह इतना ही कह सका तभी बैरेट अपने स्थान से उछली और भीड़ को धकेलती हुई भागकर कमरे के मध्य में पहुँच गई। फिर उस नितान्त में उस का उच्च स्वर सुनाई दिया—"यह कुकर्म नहीं होगा, यह पाप नहीं

होगा। यहाँ विक्टोरियस (विजेता) कौन हो सकता है, यहाँ तो शैतान का राज्य है ? क्या तुम सब पागल हो गये हो ?" उसकी चीखें पागलों की तरह अधिकाधिक ऊँची होती चली गई। कुछ और स्त्रियाँ तथा बच्चे भी चिल्लाने लगे।

आखिर परहंसा अपनी पत्नी के पास पहुँचा और उसने उसे पकड़ लिया और वे धीरे-धीरे लोगों की भीड़ में से दरवाजे की ओर चले गए। वैरेट निरन्तर चीखती-चिल्लाती रही—"यह सब काम शैतान का है। अब वह निश्चय ही मेरे बच्चे को ले लेगा।" उनके बाहर चले जाने तक पादरी मौन भाव से खड़ा प्रतीक्षा करता रहा और फिर उसने बिना कुछ कहे रस्म आरम्भ कर दी। जब रस्म पूरी हो गई तो उसने लोगों से कहा कि वह दो सप्ताह में वापस आयेगा और फिर रविवार से आध्यात्मिक सभा आरम्भ करेगा। "इस बीच में" उसने स्पष्ट शब्दों में कहा—"तुम सबको बैकुण्ठ निवासी भगवान्, जो हम सबके पिता हैं, के समक्ष अपने पापों को स्वीकार करना चाहिये।" इतना कहकर उसने रस्म समाप्त की।

तत्पश्चात् सब लोग आँगन में खड़े बातचीत करते रहे। वे अधिकतर उस दुःखद घटना के बारे में ही बातें कर रहे थे जो उस दिन घटी थी। वे कह रहे थे कि इस परिवार पर इतना अधिक बोझ डालना बहुत बुरा है, यद्यपि बहुत से लोग यह समझते थे कि परहंसा पापी है।

घर के लोगों में से वहाँ कोई भी दिखाई न देता था। धीरे-धीरे सब लोग चले गये। कुछ स्त्रियाँ, जैसा कि उन्होंने पहले से व्यवस्था कर रखी थी, सहायता करने के लिए ठहर गईं। पादरी ने उनसे कहा कि वे सब चली जाएँ और एक समय में केवल एक वहाँ रहे और वह भी इस प्रकार काम करती रहे कि जैसे यहाँ कुछ हुआ ही नहीं और कोई वैरेट के बारे में कुछ न पूछे। उसने कहा—"निराशा की कोई बात नहीं है। मुझे वस्तुतः विश्वास है कि आखिर में सब ठीक हो जायेगा।"

उसने नन्हें बालक को गोद में ले लिया और उससे खेलने लगा। "अब तुम में से केवल वही यहाँ ठहरे जिसका इस घर में सबसे अधिक परिचय है और बाकी सब चली जायें। घर जाकर तुम यथासम्भव मौन रखो और भगवान् का स्मरण करो।" शीघ्र ही आंगन खाली हो गया। सूर्य अस्त हो रहा था और छाया फिर रही थी। अब भी पादरी आंगन में घूम रहा था। नन्हा पीडर उसका हाथ पकड़े चल रहा था और अधिक तेज़ चलने का प्रयत्न करते हुए हंस रहा था।

पादरी नयी झोंपड़ी की ओर गया और उसे वहाँ से आवाज़ें आती सुनाई दीं। उसकी आँखें अंधकार से अभ्यस्त हो जाने पर उसे परहंसा बैरेट के निकट घास पर बैठा दिखाई दिया। बैरेट ने अपना मुंह उसकी बगल में छिपा रखा था और परहंसा ने उसके गिर्द बाहें डाल रखी थीं। एना मेरी अपने पिता की गोद में थी।

"भगवान् तुम्हें मधुर शान्ति प्रदान करे" – पादरी ने कहा— "सभी लोग चले गये हैं। और अब माँ होम मैं आपके पास रात्रि का भोजन करना चाहता हूँ। क्या आप मुझे कहवे का एक प्याला तैयार कर देंगी ?"

उसकी आवाज़ सुनते ही बैरेट उठ खड़ी हुई। उसने जो कुछ किया था और पादरी ने उसे यहाँ इस स्थिति में पाया इसके कारण वह भयभीत प्रतीत होती थी। फिर उसने पीडर को उठा लिया और बार-बार उसका चुम्बन लेने लगी। ऐसा लगता था कि वह उसे छोड़ेगी ही नहीं और वह उसे अधिकाधिक भींचती जाती थी।

"बैरेट, जरा ध्यान तो रखो" उसके पति ने विनयपूर्ण स्वर में कहा।

"तो क्या मैं अपने पुत्र से प्यार भी न करूँ ?" वह चिल्लाती हुई बोली।

"तुम उससे जितना चाहो प्यार करो," पादरी बोला "किन्तु

भगवान् का धन्यवाद करना कभी न भूलो जिसने तुम्हें इतना सुन्दर बालक दिया है। यह बालक बहुत अच्छा आदमी बनेगा।"

बैरेट ने पादरी की बात को ध्यानपूर्वक सुना और फिर बिना कुछ कहे पीडर का हाथ पकड़े हुए चली गई। परहंसा घास पर ही बैठा रहा। अब उसकी दाढ़ी और बाल बहुत सफेद हो गये थे। उसके चेहरे पर झुरियाँ पड़ गई थीं और वह बूढ़ा दिखाई देने लगा था।

पादरी उसके पास ही बैठ गया और विनम्रता से बातें करने लगा। "मुझे सब कुछ बता दो। जो बोझ एक के बस का नहीं होता उसे दो मिलकर उठा लेते हैं"—उसकी आवाज़ धीमी और कोमल थी।

परहंसा अपनी गाथा सुनाने लगा किन्तु वह बीच-बीच में रुक कर आँसू पोंछ लेता था। पर उसने वे सब घटनायें पादरी को बता दीं जिनसे बैरेट की यह हालत हो गई थी। "यदि इसकी यह स्थिति इसी प्रकार बनी रही तो मुझे उसे वापस भेजना पड़ेगा"—उसने एक ठण्डी आह भरते हुए कहा।

"क्या उसका मस्तिष्क सर्वथा जाता रहा है?" पादरी ने पूछा।

"इससे क्या अन्तर पड़ता है? दरार बड़ी हो या छोटी आप शीशे का प्रयोग तो नहीं कर सकते।"

परहंसा कहता रहा—"इसमें मेरा भी अपराध है। मैं ही इसे यहाँ लाया था और इसे यह पसन्द न था। किन्तु क्या यह पाप है? क्या किसी को किसी ऐसे स्थान से जहाँ उसका भविष्य बनने वाला हो केवल इस कारण लौट जाना चाहिए कि वह स्थान उसकी पत्नी को पसन्द नहीं।"

"नहीं, नहीं" पादरी ने कहा—"उसे लौटना तो नहीं चाहिए। किन्तु अच्छा तो यह है कि पति पत्नी दोनों सहमत हों।"

"आह, यह कहना सुगम है। किन्तु हम तो कभी किसी बात पर असहमत भी नहीं हुए। उसने कुछ कहा ही नहीं, यहाँ आने के

बाद भी कुछ नहीं कहा। बस यहीं उसे कुछ हो गया है। हमारे बीच आज तक कभी भी झगड़ा नहीं हुआ। पर हाँ कभी-कभी मैं सोचता हूँ कि हम अन्य लोगों की अपेक्षा कहीं अधिक एक-दूसरे का ध्यान रखते थे। पर तुम ही बताओ, तुम तो पादरी हो और बाइबल को जानते हो—आदमी को क्या करना चाहिए ?"

"तुम्हें अपना दुःख धैर्य से सहन करना चाहिये"—पादरी बोला।

परहंसा फूट पड़ा—"नहीं, नहीं, मेरे लिए यही पर्याप्त नहीं। मुझे तो ऐसा उत्तर दो जिसे मैं समझ सकूं। क्या जब मैं इसे यहाँ लाया तो मैंने ठीक किया अथवा गलती की ? मुझे और क्या करना चाहिए था ?"

"नहीं, तुम ने तो ठीक ही किया था। आदमी का जहाँ दिल चाहे और मस्तिष्क मार्ग दिखाये वहीं चले जाना चाहिए यदि भगवान् उसे न रोके। किन्तु मैंने सुना है कि तुमने बहुत पाप किये हैं और अब तुम शिकायत करते हो कि ईश्वर तुम्हें किधर ले जा रहा है। तुम्हें यह सब धैर्य और प्रेम के साथ सहन करना सीखना चाहिये।"

"हाँ, यह कहना बहुत सुगम है। किन्तु हमें इसकी अपेक्षा कहीं अधिक करना पड़ता है। जिन बातों का हमें पता नहीं उनके बारे में बात करना सुगम है। क्या तुमने कभी ऐसे दिन बिताये हैं कि तुम निरन्तर आश्चर्यचकित से एक माँ के अपने ही बच्चों को मारते देखते रहो······और तुम समझते रहो कि सम्भवतः तुम्हारे अपराध के कारण ही उस स्त्री की ऐसी स्थिति हो गई है ?"

"तेरा धन्यवाद हो ईश्वर" पादरी धीरे से बोला "मैंने ऐसी बात कभी नहीं देखी। मुझे बताओ यह कैसे हुआ।"

परहंसा कुछ क्षण बिना कुछ कहे बैठा रहा, फिर उठकर द्वार के पास गया और उसने बाहर अंधकार में झाँका। फिर बोला—"अमेरिका में इसका जी कभी नहीं लगा। तुम जानते हो कुछ लोग

अपने घर से बाहर जाना कभी पसन्द नहीं करते। परन्तु सबसे छोटे बच्चे के पैदा होने तक सब ठीक-ठाक चलता रहा। इसके जन्म के समय बैरेट को निश्चय हो गया कि वह मर जायेगी। उस समय इसे कष्ट भी बहुत भोगना पड़ा और हमने तो समझा कि हम उसे खो बैठे हैं। किन्तु जब बच्चा हो गया तो मुझे प्रसन्नता हुई और मैं सोचने लगा कि अब सब ठीक हो जायेगा। अतः मैंने बच्चे का नाम 'विक्टोरियस' रखा। बैरेट इसे सहन न कर सकी।"

"क्यों नहीं ?" पादरी ने पूछा—"यह तो कितना सुन्दर नाम है।"

"क्या सच आप ऐसा ही समझते हैं ?"

"निस्संदेह मैंने आज तक जितने भी नामकरण संस्कार किये हैं उन सब में यह सर्वश्रेष्ठ नाम है।"

यह सुनकर परहंसा को इतनी प्रसन्नता हुई कि वह एक क्षण के लिये कुछ भी न बोल सका। "तो यह अच्छा नाम है······ईश्वर के विरुद्ध नहीं ?"

"बिलकुल नहीं, क्या तुम्हें यह भी चिन्ता थी ?"

"क्या आप बैरेट से भी यह बात कह देंगे जो आपने मुझ से कही है ? जब से मैंने विक्टोरियस का यह नाम रखा था यह बात मेरे मन को कुरेद रही थी।"

"निस्संदेह। इसलिए वह इस नाम को पसन्द नहीं करती।"

"नहीं नहीं, उसे तो विश्वास है कि शैतान ने हम पर काबू पाने के लिए हमें यह विचार दिया है। वह तो यह नाम सुनना भी सहन नहीं कर सकती। इसी कारण आज जब आप उसका नामकरण कर रहे थे तो बैरेट को दौरा पड़ गया था।"

"कब से उसे ऐसे दौरे पड़ते हैं ?"

"जब से यहाँ टिड्डियाँ आने लगी हैं।" परहंसा ने पादरी को बताया कि कैसे उस दिन जब वह घर आया तो उसने देखा कि बैरेट

बड़े सन्दूक में छिपी बैठी थी। फिर उसने बताया कि कैसे बैरेट अपनी माँ को, जो मर चुकी है, स्वप्नों में देखने लगी, यद्यपि उन्हें कुछ महीनों तक अपने देश से कोई समाचार नहीं आया।

"वस्तुतः वह मरे हुए व्यक्ति को नहीं देख सकती"—पादरी ने कहा।

"पर उसने उसे देखा है और उससे बातें भी की हैं......और यह भी ठीक है कि वह मर चुकी है। वह माँ से इस प्रकार बातें करती है जैसे वह इसके पास ही बैठी हो।"

"क्या उसने कभी बच्चे को चोट पहुँचाई है?"

"कुछ समय से वह ऐसा करती है। उसे विश्वास हो गया है कि उसकी माँ इस बच्चे को अपने पास चाहती है। और एक दिन ......ओह इसका वर्णन करना कितना भयानक है! यदि उस दिन ठीक समय पर सोरीना न पहुँच जाती तो कह नहीं सकते कि क्या होता। अतः मैंने उसे कहा कि वह गर्मियों के लिए सोरीना को बच्चा अपने पास ले जाने दे। पहले तो वह नहीं मानी किन्तु आखिर सहमत हो गई। अब मुझे पता नहीं कि मैंने यह काम ठीक किया था या गलत। उसके बिना बैरेट बहुत अकेलापन अनुभव करती रही यहाँ तक कि एक रात वह उठी और बच्चे को लाने के लिए सोरीना के घर चली गई। मैं क्या कर सकता था?"

"भगवान् ने तुम्हारे ऊपर घोर विपत्ति डाल दी है, किन्तु वही इसे दूर भी करेगा ....यह तुम्हें नहीं भूलना चाहिए। किन्तु मुझे यह बताओ कि जब इसे दौरे नहीं पड़ते तो इसकी स्थिति कैसी होती है?"

"वह भली चंगी होती है और नित्यप्रति की तरह अपना सारा काम करती है। यदि आपको पता न हो तो यही समझेंगे कि वह बिल्कुल ठीक है। सर्दियों में उसकी हालत बहुत खराब होती है, किन्तु उन दिनों बर्फ गिरती है और हम सब घर पर ही होते हैं।

उन दिनों यहाँ का वातावरण एकाकी होता है और काफी उदासी रहती है।"

"अच्छा"—पादरी ने कहा—"मैं दोबारा उसका बच्चा उससे अलग नहीं करूँगा। तुम सावधानी से उसका ध्यान रखा करो। उससे पहले की तरह प्यार किया करो और उससे बातचीत किया करो। और मैं स्वयं आज रात यहीं रहूँगा और कल उससे बातचीत करने का प्रयत्न करूँगा। सम्भवतः भगवान् उसे समझने में मेरी सहायता करें।"

परहंसा रो पड़ा। उसे शान्ति का अनुभव हुआ और वह कुछ भी कह न सका।

"आओ" पादरी ने कहा—"इस अंधेरे से निकल कर अन्दर प्रकाश में चलें और भोजन कर लें। हमारी आत्माओं की तरह हमारे शरीर को भी भोजन चाहिए।

जब वे आंगन को पार कर रहे थे, ओल भागा-भागा अपने पिता के पास आया और बोला—"हंस हमारे घर के पास की पहाड़ी के ऊपर चला गया है। वह वहाँ रो रहा और माँ के डर से वहाँ से नहीं आ रहा।"

"लीजिये आप देखिये कि हमारे साथ कैसी बीत रही है"—परहंसा ने पादरी से कहा—"अब आप अन्दर चलें और मैं एक मिनट में उसे लेकर आता हूँ।"

वह अंधेरे में पहाड़ी पर चला गया और वहाँ उसके रोने की आवाज़ से उसे ढूंढ़ लिया। "क्या···क्या माँ ने···परमंड को मार दिया है?" बच्चे ने पूछा—"क्या वह अब फिर पागल हो गई है?"

"नहीं बच्चे, तुम्हारी माँ बिल्कुल ठीक है और उसने बढ़िया भोजन तैयार किया है तथा हम सब खाना खाने के लिये तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहे हैं। अब रोओ नहीं और घर चले चलो।"

खाने के मेज पर चीजें बहुत अच्छी तरह रखी हुई थीं और

वातावरण बड़ा सुखद था। सोरीना अब भी सहायता करने के लिये वहीं थी और बच्चों के साथ बातें कर रही थी तथा हँस रही थी। नन्हा परमंड सोने की तैयारी कर रहा था। बैरेट अंगीठी के पास खड़ी कुछ पोतड़े धो रही थी। उसने एक बार मुड़कर पादरी की ओर देखा और फिर बार-बार मुड़कर देखती रही। उसका चेहरा कुछ असाधारण-सा प्रतीत हो रहा था। आखिर उसने दूध का एक प्याला उसे दिया जबकि खाना अभी तैयार हो रहा था।

तभी परहंसा लड़कों सहित अन्दर पहुँचा और वे चारों खाना खाने बैठ गए और स्त्रियाँ खाना परोसने लगीं। किन्तु पादरी ने हंस की ओर देखा जिसका चेहरा रो-रोकर लाल हो गया था और जो खाना नहीं खाना चाहता था। पादरी ने एक प्याला दूध और माँगा और उसे पी लिया। फिर वह प्रतीक्षा करने लगा कि अन्य लोग भोजन समाप्त कर लें। जब वे भोजन कर चुके तो पादरी हाथ जोड़कर भगवान् की प्रार्थना करने लगा जो सदा उसके निकट रहता था।

जब पादरी धीरे-धीरे प्रार्थना करने लगा तो अन्य लोग भी मौन हो गए और हाथ जोड़कर ध्यानपूर्वक प्रार्थना को सुनने लगे। डूबते हुए सूर्य की स्वर्णिम किरणें कमरे में फैल रही थीं। बालक जो अब तक बिस्तर पर खेल रहे थे थोड़ी देर में चुप हो गए और आखिर पादरी की सुहृदयपूर्ण वाणी को सुनकर परमंड अपने रात्रि के वस्त्र पहने ही उसके पास आ गया और उससे गोद में लेने के लिये कहने लगा। बैरेट उसे रोकना चाहती थी किन्तु वह अपने स्थान से उठ ही न सकी। पादरी ने बुरा नहीं माना। बल्कि उसने बालक को उठाकर अपने घुटनों पर बैठा लिया और अपनी प्रार्थना कहता रहा। वह बिना रुके मधुर और कोमल वाणी में कह रहा था कि भगवान् उन सबकी ओर विशेष ध्यान दे। फिर वह गोद में बैठे बालक के बारे में कहने लगा—"भगवान् इसे विशेष पद प्रदान

करो जैसा तुमने कभी अपने चुने हुए प्रिय लोगों को दिया था और इसे सच्चा विक्टर (विजेता) बना दो। यह अपने पर भी विजय पा सके और लोगों पर भी। भगवान् तुम इस परिवार को शान्ति दो जो सदा सदा के लिये विद्यमान् रहे…आमीन।"

पादरी के प्रार्थना समाप्त करने के बाद वे सब देर तक मौन बैठे रहे। पुरुष आँखें बन्द किए हुए थे और स्त्रियों की आँखों से आँसू टपक रहे थे। तब पादरी स्वाभाविक ढंग से बालक के साथ खेलने लगा यहाँ तक कि दोनों ही सोने का समय होने तक खेल में मस्त रहे। तब पादरी किसी से भी बिना और कुछ कहे सोने के लिये चला गया।

अगले दिन प्रातः वह इतना प्रसन्न था कि उसे खाना खाते और बातें करते हुए देखने में ही एक विशेष आनन्द की अनुभूति होती थी। फिर परहंसा को स्मरण हो आया कि पादरी बैरेट से अकेले में बात करना चाहता था, अतः उसने लड़कों को बुलाया और वे सब खेत में चले गए। तब पादरी बैरेट के पास गया जो ज़मीन पर दृष्टि गड़ाये बैठी थी। ऐसी स्थिति में उससे बात करना कठिन था किन्तु किसी तरह उसने बात आरम्भ की।

"देखो, श्रीमती होम मैं तुमसे कुछ पूछना चाहता हूँ। अगले रविवार से दो सप्ताह बाद मैं वापिस आऊँगा और तब मेरा विचार तुम्हारे घर में एक आध्यात्मिक सभा करने का है।"

"यहाँ ? हमारे घर में ?"

"हाँ यहीं, जहाँ तुम नित्यप्रति रहती हो। क्या तुम नहीं चाहती कि तुम अपने पापों सहित भगवान् के पास जाओ और उस की दया की सुधा का पान करो ?"

"किन्तु यहाँ ? ओह नहीं, ऐसा नहीं हो सकेगा। यहाँ बहुत पाप भरा है यह घर शुद्ध नहीं।" तब उसके कपोल लाल हो गए और वह चुप हो गई तथा फिर फर्श की ओर देखने लगी।

"निस्संदेह यहाँ पाप है किन्तु भगवान स्वयं अपने लिये इसे शुद्ध करेगा। इसके बारे में मत सोचो। हमें योजना बनानी चाहिये कि कैसे इस मकान को भगवान् की सेवा के उपयुक्त बनाया जा सकता है।" और फिर पादरी इस प्रकार बातें करता रहा जैसे सब निश्चित हो गया हो और उसने बैरेट के मौन की ओर ध्यान नहीं दिया। फिर जब वह कहने लगा कि बड़े सन्दूक को कैसे प्रयोग किया जा सकता है तो उसने देखा कि बैरेट के मन में क्या बातें चक्कर लगा रही हैं।

"वह सन्दूक मेरे पिता का है···वह सुन्दर है···है न ?" उसके चेहरे पर फिर बाल सुलभ मुद्रा दृष्टिगोचर हुई।

बस पादरी को और कुछ नहीं कहना था और वह घर से बाहर दूर चला गया। वह किसी से भी, विशेषतः परहंसा से, मिलना नहीं चाहता था। अकस्मात् बैरेट का हृदय इतना प्रसन्न हो गया कि वह उस भजन की पंक्ति गाने लगी, जो उन सबने कल गाया था।

उन गर्मियों में बहुत से लोग उस बस्ती में से गुजरते रहे। वे बड़ी-बड़ी गाड़ियों में आते थे और दूर पश्चिम की ओर चले जाते थे। किन्तु कुछ लोग इसी बस्ती में बस गए और उन्होंने अपनी झोंपड़ियाँ बना लीं। सागनिंग लोगों ने अन्य लोगों को यहाँ ठहराने में विशेष सहायता दी और सारा क्षेत्र बड़ी शीघ्रता से बस रहा था। भले ही टिड्डियाँ फिर आई थीं किन्तु वे अधिक देर न रहीं और इस वर्ष कुछ गेहूँ तथा अन्य फसलें छोड़ गईं।

हर किसान प्रतिवर्ष थोड़ा-बहुत बचा लेता था और अधिकतर लोगों के पास अपनी आवश्यकता की वस्तु खरीद लेने के बाद कुछ पैसे बच जाते थे। मुर्गियाँ भी बढ़ रही थीं, पशु भी बढ़ रहे थे जिससे अधिक पैसा आता था। पास ही रेलवे लाइन बन गई थी। यह उस क्षेत्र में सबसे पहली रेलवे लाइन थी और स्यूएक्स नदी तक आती थी। इससे अधिक अच्छा क्या हो सकता था ? अतः अधिकाधिक

लोग वहाँ बसने लगे। पुराने बसने वालों में से बहुत से लकड़ी के बड़े-बड़े मकान बना रहे थे। उनमें हंस ओलसा भी था। प्रथम वर्ष के पश्चात् उसने पशुपालन आरम्भ कर दिया था और खूब समृद्ध हो गया था।

टानसेटन भी लकड़ी का मकान बनाने की बात कर रहा था किन्तु उसने इस सम्बन्ध में कभी कुछ किया नहीं। हैनरी सोलम ने पशुपालन के लिए एक बड़ी पशुशाला बनाली थी और वह अगले वर्ष विवाह कर लेने के बाद मकान बनाने की बात सोच रहा था। इस प्रकार धीरे-धीरे उन मैदानों में परिवर्तन आया और उनमें मानव-जीवन के लक्षण दृष्टिगोचर होने लगे। पौधे लगाये गए थे और वे तेज़ी से बढ़ रहे थे। आस-पास की निर्जन भूमि में बने कुछ नये मकान उन वृक्षों में छिप गए थे।

उस रविवार की आध्यात्मिक सभा सुन्दर रही। टिड्डियों के अंडे भूमि में दिखाई दे रहे थे किन्तु वे अभी नहीं आईं थीं। मंद मंथर पवन बह रही थी और कुछ पक्षी चहचहा रहे थे। बहुत से लोग जल्दी आ गए थे और परहंसा के आंगन में प्रसन्नता से परस्पर बातें कर रहे थे।

पादरी उस रात परहंसा के घर सोया था किन्तु वह सवेरे ही उठकर कमरा तैयार करने में लग गया था। सारे कमरे में यथा-सम्भव खूब सफाई कर दी गई थी। बैरेट मैदान में से बहुत से फूल एकत्र कर लाई थी और उन्हें जहाँ-तहाँ सब जगह रख दिया था। घर में जितने भी ग्लास और प्याले थे सब में फूल सजा दिये गए थे। किन्तु अभी बहुत से फूल बच गए थे और बड़ा विचित्र लगता था जैसे यह किसी नन्हें बच्चे का काम हो। चहुँ ओर फूल ही फूल देखकर पादरी का मन ऊब गया।

मेज़ सफेद कपड़े से ढका हुआ था और परहंसा ने कुछ कुर्सियाँ भी बना ली थीं जो कपड़े से ढकी हुई थीं। मोमबत्तियाँ और अन्य सब

चीज़ें जिनकी पादरी को आवश्यकता थी सफाई से मेज़ पर रखी हुई थीं और मेज़ वस्तुत: एक वेदी के समान प्रतीत हो रही थी। काम में व्यस्त पादरी मौन रहा। अब उसने चारों ओर देखा और बोला —"मैं आध्यात्मिक सभा के लिए वस्त्र पहनने झोंपड़ी में जा रहा हूँ और मैं चाहता हूँ कि जिस समय मैं वापिस आऊँ कोई मुझसे बात न करे।"

फिर वह मन ही मन प्रार्थना करता हुआ वस्त्र पहनने के लिए छोटी झोंपड़ी में चला गया। ऐसे समय में जब उस आत्मविश्वास की अत्यधिक आवश्यकता थी वह अपने आपको निर्बल और निःशक्त अनुभव कर रहा था। वह सोचने लगा भगवान् को मुझे बल देना होगा क्योंकि मैं स्वयं तो कुछ भी नहीं हूँ। आखिर वह बड़ी कठिनाई से उठा और झोंपड़ी से बाहर आया। घर लोगों से भर चुका था और सब मौन थे। परहंसा और बैरेट बिल्कुल सामने बैठे हुए थे। पादरी ने कहा सबसे पहले उनका भगवान् से सम्पर्क करवाया जायेगा और उसके बाद परहंसा पत्नी को बाहर ले जाये।

पादरी ने तुरन्त आध्यात्मिक चर्चा आरम्भ कर दी। वह भगवान् की विभूतियों का वर्णन करने लगा, साथ ही वह निरन्तर बैरेट के बारे में सोच रहा था कि उसे और अन्य बहुत से लोगों को भी इस निर्जन प्रदेश के एकाकीपन में जीवन बनाये रखने के लिए श्रद्धा और विश्वास में निहित प्रसन्नता की आवश्यकता है।

उसने बोलना तो आरम्भ कर दिया किन्तु उसे इच्छानुरूप शब्द नहीं सूझ रहे थे। उसकी बजाय और ही शब्द और सोचे हुए विषय से भिन्न बातें सूझ रही थीं। उसने अपने विचार संजोने के लिये धीरे-धीरे बोलना आरम्भ किया। इस प्रयत्न में उसका मुख लाल हो गया किन्तु अब भी ऐसा प्रतीत होता था कि मानो उसके माध्यम से कोई और ही बोल रहा है। वह जो कुछ भी कह रहा था उस पर उसका कोई नियंत्रण नहीं था। वह बाइबल में वर्णित लोगों

के बारे में कह रहा था कि उन्हें कैसे भगवान् की विभूतियों का पता लगा। किन्तु फिर यह सोचकर कि इन साधारण नार्वेजियन किसानों और नाविकों को बाइबल के लोगों का क्या पता, उसने यह विषय यहीं छोड़ दिया।

अकस्मात् विषय बदलकर वह एक बड़े नगर में रहनेवाली अपनी परिचित एक नार्वेजियन स्त्री की कहानी सुनाने लगा। उसने अपने सामने बच्चों सहित बैठी हुई कठिन श्रम करने वाली स्त्रियों की ओर देखा और माँ के प्यार के बारे में बताने लगा। फिर उसने माँ के प्यार की तुलना लोगों के प्रति भगवान् के प्यार से की और बताया कि यह प्यार कितना विचित्र है। फिर उसने कहा—"अब यदि लोग उस प्यार और विभूति को देखना चाहते हैं तो एक-एक करके मेज पर आयें और भगवान से सम्पर्क प्राप्त करें।"

लोग आगे आ गए और उसके सामने झुक गये। बहुतों की आँखों में आँसू थे। पादरी इतनी अधिक देर तक बोलता रहा था कि नियमित रस्म के लिए समय नहीं रहा था। अतः उसने सभा स्थगित करते हुए लोगों से कहा कि वे सीधे घर चले जायें और शेष समय मौन रहकर भगवान् का चिन्तन करें।

हंस ओलसा अपने लिए एक वास्तविक घर बना रहा था और वह काम करते हुए सारा दिन प्रसन्नता से गाया करता था। उसकी योजना बहुत बड़ा घर बनाने की थी जिसमें एक रसोईखाने का कमरा, निचली मंजिल में एक रहने का कमरा और दो सोने के कमरे और ऊपर की मंजिल में तीन कमरे हों। वह तो चाहता था कि निचली मंजिल में एक भी सोने का कमरा न हो किन्तु सोरीना ने इसके लिए अनुरोध किया था जबकि वह कभी भी ऐसा नहीं किया करती थी। अतः हंस ओलसा अतिरिक्त खर्च की कोई परवाह न करते हुए मान गया।

तब सोरीना ने उसे शुभ समाचार सुनाया था कि इतने वर्षों

के बाद उनके घर एक और बच्चा होने वाला है और इसीलिए वह चाहती है कि सोने का कमरा निचली मंजिल पर रहे। तब से हंस ओलसा उसकी हर इच्छा पूरी करने लगा। कुछ भी हो उसका भाग्य खुल रहा था। वह अधिकाधिक भूमि में खेती करने लगा था, उसकी पशुशाला में पशु भी काफी थे और नये बालक के लिए जो निश्चय ही लड़का होगा वह अब नया मकान भी बना रहा था।

बस एक ही बात थी जिससे वह उदास हो जाया करता था और वह थी परहंसा का कष्ट, जिसे देखकर वह सोचा करता—वह कितना बूढ़ा दिखाई देने लगा है। बैरेट की हालत कितनी बुरी है। क्या हम परहंसा के लड़के को अपने पास रख लें? समझ में नहीं आता कि यह ठीक रहेगा अथवा नहीं। हम तो इसके लिए तैयार हैं किन्तु परहंसा नहीं मान रहा। मुझे आश्चर्य होता है कि मेरे मित्र को वस्तुतः यह पता है अथवा नहीं कि बैरेट की स्थिति कितनी बुरी है। यदि इन गर्मियों में फिर टिड्डियों का आक्रमण हुआ तो न जाने वह क्या कर बैठेगी। किन्तु फिर भी क्या माता-पिता से बच्चे को अलग करना ठीक है? हंस ओलसा को रास्ता नहीं सूझ रहा था। किन्तु जब वह अपने मित्र के बारे में सोचता और फिर अपने प्रसन्नतापूर्ण जीवन को देखता तो उसका जी भर आता था।

कुछ दिन बाद बैरेट अपनी पुरानी पशुशाला में बैठी हुई थी, जिसे परहंसा ने बहुत पहले मिस्त्रीखाना बना दिया था। दिन बहुत सुन्दर था और वह प्रायः सिलाई करते-करते दृष्टि उठा कर देखने लगती थी। लड़के खेत में थे और परहंसा पास ही नई पशुशाला बना रहा था। बैरेट की आँखों में वैसे ही अस्पष्ट और स्वप्निल से भाव चित्रित हो रहे थे जिन्हें कभी पादरी ने देखा था।

आज उसका मन बहुत प्रसन्न था किन्तु शरीर बहुत थका हुआ था। जब से पादरी ने उसके सिर पर हाथ फेर कर उसे कहा

था "तुम्हारे सब पाप धुल गये हैं"—वह इसी प्रकार अत्यधिक थकावट किन्तु साथ मानसिक प्रफुल्लता अनुभव कर रही थी। वह जानती थी कि वस्तुतः उसके सारे पाप धुल गये हैं।

उसे स्मरण हो आया कि कैसे उस विचित्र पादरी ने उनसे वही भजन गवाये थे जो वे नार्वे के गिरजाघरों में गाया करते थे, यद्यपि यह गिरजाघर नहीं था बल्कि एक छोटी-सी झोंपड़ी थी। परन्तु ऐसा अनियमित काम करने पर भी उन पर कोई विपत्ति नहीं आई। तब वह पुनः अपनी माँ के बारे में सोचने लगी। उसे ऐसा लगा कि उसकी माँ शीघ्र ही उसके पास आयेगी किन्तु इस बार वह परमंड को इसलिये नहीं माँगेगी कि वह पादरी बनेगा। यह भी कितना अच्छा होगा ...कि परिवार में एक भगवान् का पुजारी भी होगा।

उसने मन ही मन कहा—"मैं माँ से कहूँगी कि नार्वे में तो यह सम्भव ही नहीं था। किन्तु यहाँ सभी कुछ सम्भव है। फिर उसे यह भी बताऊँगी कि यहाँ हमारे घर में ही गिरजाघर है। उसे विश्वास ही नहीं आयेगा किन्तु आखिर में उसे विश्वास दिला ही दूँगी। उसे यह भी कहूँगी कि कैसे पुराने सन्दूक को वेदी बना कर पादरी ने खड़े होकर हमें वचन दिया था कि हमारे सब पाप क्षमा कर दिये जायेंगे, हम सभी पापों से मुक्त हो जायेंगे।"

उसने सिलाई का काम नीचे रख दिया और हाथ पर हाथ रख कर बैठ गई। उसके चेहरे पर एक शून्य की-सी मुद्रा झलक रही थी। फिर उसे आँगन में पाँव की आहट सुनाई दी, कोई परहंसा से बात कर रहा था। वह हंस ओलसा था। वह बिना आहट किये नई पशुशाला के निकट चली गई और दीवार से कान लगा कर सुनने लगी। वे उसी के बारे में बातचीत कर रहे थे।

हंस ओलसा कह रहा था—"मैं परमंड को ले जाऊँगा और उसका पालन-पोषण करूँगा, क्योंकि यदि बैरेट को फिर दौरा पड़ गया तो न जाने वह क्या कर बैठे।" बैरेट ने पशुशाला के बाहर

झुक कर एक लकड़ी का टुकड़ा उठा लिया और उसे मज़बूती से पकड़ लिया। अब परहंसा कह रहा था।

"नहीं" वह धीरे से बोला—"वह माँ है, उसका बच्चा उसके पास ही रहना चाहिये। यदि बच्चे के घर में होते हुए वह अच्छी नहीं हो जाती तो उसके अलग हो जाने पर भी स्वस्थ नहीं होगी।"

बैरेट ने लकड़ी फेंक दी और सीधी खड़ी हो गई। उसका चेहरा लाल हो गया था और आँखें विस्फारित हो गईं। उसे लगा मानो गिरजाघर की घंटियाँ बज रही हैं।

अब फिर हंस ओलसा कह रहा था—"अच्छा यदि तुम ऐसा ही समझते हो तो ...."

"हाँ" परहंसा बोला—"यह इसी प्रकार होना चाहिये। मैंने इस पर बहुत विचार किया है। भगवान् ने बैरेट से अधिक अच्छी स्त्री का सृजन नहीं किया, यह मैं जानता हूँ। यदि कोई गलती हुई है तो वह मेरी है जो मैं उसे यहाँ ले आया हूँ। वह इस प्रकार के जीवन के लिए नहीं बनी। वह इतनी सुकोमल है कि यहाँ का कष्टप्रद जीवन उससे नहीं निभ सकता। जब से हम यहाँ आये हैं उसे बहुत कष्ट सहने पड़े हैं। किन्तु वह अपने बच्चे को अपने पास ही रखेगी।"

बैरेट से और अधिक सुना नहीं गया। वह वहाँ से इस प्रकार दूर चली गई जैसे किसी सुखद स्वप्न में विचरण कर रही हो। उसे यह भी दिखाई नहीं दे रहा था कि वह किधर जा रही है। आकाश में बादलों की टुकड़ियाँ घूम रही थीं। उसने ऊपर की ओर देखा और मन ही मन कहा—"यह भगवान् की विभूति है।" घर से बच्चे के रोने की आवाज़ सुनाई दी और अकस्मात् उसका स्वप्न टूट गया और वह अन्दर चली गई। बैरेट परमंड के बिस्तर पर गई और उसने उसे बार-बार छाती से लगा लिया तथा हँसने और उससे खेलने लगी। वह निर्निमेष नेत्रों से उसे देख रही थी और

निरन्तर उसे स्पर्श कर रही थी। बालक भी हँसने लगा और फिर स्वयं उसके आलिंगन में चला गया।

बालक से खेलते-खेलते बैरेट को थकावट अनुभव हुई और उसे भी नींद ने आ घेरा। उसे एक सुन्दर स्वप्न दिखाई दिया कि स्वच्छ नीले आकाश में चमकीली धूप फैली हुई है और उष्ण वायु चल रही है। किन्तु वह अभी अधिक देर न सोई थी कि फिर उसकी आँख खुल गई और उसने देखा कि परमंड अभी तक उसके पास बैठा हुआ है। उसने उसे उठा कर अपनी गोद में बैठा लिया। उसे सब कुछ विचित्र और नवीन प्रतीत हो रहा था।

परमंड बोला—"मुझे अब कुछ खाने को चाहिए।"

वह कुछ दूध लाने के लिए जाने लगी किन्तु कमरे के मध्य में ही रुक गई और उसने अपने चारों ओर देखा। उसे हर वस्तु सर्वथा नई प्रतीत हुई। क्या बालक के लिए प्याला नहीं लिया? और चमचा कहाँ रखा है? और रोटी······बालक को दूध के साथ रोटी भी तो चाहिये। फिर उसने घर में चारों ओर एक अनजान व्यक्ति की तरह देखा और तुरन्त उसे पता लग गया कि हर चीज़ कहाँ रखी हुई है और परमंड भोजन करके प्रसन्न हो गया।

अब बैरेट आश्चर्य करने लगी कि सब लोग कहाँ हैं। क्या थोड़ी ही देर पहले वह परहंसा को यहाँ छोड़ कर नहीं गई थी? वह फिर आँगन में आई और सुखद वायु में साँस लेती हुई चारों ओर देखने लगी। परहंसा वहीं······हंस ओलसा से बात कर रहा था, और हाँ बैरेट को तो पता ही था। हंस ओलसा जाने लगा और उसका पति उसके निकट आया। वह कितना बदला हुआ दिखाई दे रहा था। उसकी दाढ़ी और बाल सफेद हो गये थे।

"तुम्हें क्या हो गया है, परहंसा?" बैरेट ने पूछा।

परहंसा रुक गया और एक टक दृष्टि से उसकी ओर देखने लगा। वह निश्चेष्ट खड़ा था। उसे ऐसा लगा कि वह गिर पड़ेगा।

बैरेट कह रही थी—"क्या तुम बीमार हो, परहंसा ? यदि तुम्हारा जी अच्छा न हो तो तुम्हें काम नहीं करते रहना चाहिये। काम तो फिर भी हो सकता है।"

परहंसा ने बोलने का प्रयत्न किया किन्तु उसके मुंह से कोई शब्द न निकला। बैरेट और भी चिन्तित हो गई—"अब अन्दर आ जाओ और मैं तुम्हें कुछ दूध देती हूँ।" इतना कह वह तेज़ी से घर की ओर चली गई। परहंसा धीरे-धीरे उसके पीछे आ रहा था। वह सोचने लगा—"भगवान् दया करे, मैंने बहुत समय से उसे इस रूप में नहीं देखा है। परन्तु शायद यह सब अस्थायी है।"

बैरेट ने कुछ दूध अंगीठी पर रखा। उसे विश्वास था कि उसके पति को जुकाम हो गया है और गर्मियों के जुकाम से छुटकारा पाना कठिन होता है। अतः उसने दूध में थोड़ी मिर्ची डाल दी। उसने सोचा कि यदि परहंसा लेटा रहे और शरीर को गर्म रखे तो जल्दी स्वस्थ हो जायेगा। जब वह तेज़ी से लौट रही थी तो उसकी दृष्टि दीवार पर लटके हुए शीशे पर पड़ी। "तो परहंसा मुझे इस रूप में देखा करता है। वह तो सदा चाहा करता था कि मैं साफ-सुथरी बनी रहूँ और मैं इतनी बुरी दीख रही हूँ।" उसने अपना मुंह धोया और बालों में कंघी की। फिर उसने अपने सब से अच्छे वस्त्र पहने ·····और अब वह अधिक सुन्दर दिखाई दे रही थी।

परहंसा धीरे-धीरे ऐसे घर में प्रविष्ट हुआ जैसे किसी अपरिचित घर में घुस रहा हो। बैरेट ने गर्म दूध और काली मिर्च उसके सामने रख दी और उसे पी लेने के लिये कहा। परहंसा ने प्यार से परमंड को गोद में बैठा लिया और फिर सारा दूध पी गया। किन्तु अब भी वह कुछ बोल न सका। जब वह दूध पी रहा था, बैरेट ने उसे हँसते हुए कहा, "आज मुझे सब कितना विचित्र लग रहा है। मैं केवल क्षण भर के लिए सो गई थी और जब मैं जागी तो मुझे ऐसा लगा मानो एक दीर्घ काल से मैं कहीं दूर गई हुई थी।"

उसकी यह बात सुनते-सुनते परहंसा के गालों पर अश्रु धारा बहने लगी। वह बातें कर रही थी और परहंसा की पूर्व परिचित प्यारी बैरेट की तरह माधुर्य और प्रेम से भरी दृष्टि से उसकी ओर देख रही थी। जब उसने दूध पी लिया तो बैरेट ने उससे कहा—"अब जाकर सो जाओ और चादर को भली प्रकार लपेटे रखना।"

परहंसा दीवार की ओर मुंह कर के लेट गया और जब तक उसका रोना बन्द न हुआ वह उसी प्रकार लेटा रहा। वह सोचने लगा—"नहीं यह सम्भव नहीं" जब उसका मन स्वस्थ हुआ तो वह शीघ्रता से उठ खड़ा हुआ। "क्या तुम अभी उठ रहे हो?" बैरेट ने चिन्तित भाव से पूछा।

"हाँ तो यदि इन गर्मियों में हमें मकान तैयार करना है तो मुझे बहुत काम करना होगा। हम अधिक देर तक इस प्रकार का जीवन व्यतीत नहीं कर सकते।" वह पहले के यौवन सम्पन्न और प्रसन्न परहंसा की तरह बैरेट की ओर आया। "जाने से पूर्व मैं वह अच्छा पेय थोड़ा और पीना चाहता हूँ जो तुमने मुझे दिया है।" फिर उसने परमंड को उठाया और उसे बार-बार ऊपर छत तक उछालने लगा यहां तक कि बालक ने थक कर हंसना भी बन्द कर दिया।

बैरेट ने दूध तैयार किया और फिर वह उन्हें खेलते हुए देखने के लिए उनकी ओर घूमी—"मेरे, मेरे प्यारे, आज हम सब कितने विचित्र लग रहे हैं" उसने कहा।

भाग आठ

: १ :

बाद में उन विस्तृत मैदानों की उन दिनों की अनेक कहानियाँ कही गईं कि किस प्रकार उन लोगों को महामारी, भूख, आग, वर्षा, आँधी और बर्फ के प्रकोप का सामना करना पड़ा। एक बार सर्दियों में अक्तूबर के मध्य में बर्फ पड़नी आरम्भ हुई और अस्सी दिन तक निरन्तर अर्थात् अप्रैल के मध्य तक बर्फ पड़ती रही। लोगों ने घर से पशुशाला तक और मित्रों के घरों तक जाने के लिए सुरंगें खोदीं फिर बर्फ पिघलने लगी तो सारी भूमि में बाढ़ आ गई। उन सर्दियों में वसन्त ऋतु के आगमन तक अनेक लोग मर खप गये।

स्प्रिंग क्रीक के लोगों के पास न भोजन रहा और न लकड़ी। उनको इंधन की जगह घास जलानी पड़ी। बहुत से पशु बर्फ में खो गये और अनेक व्यक्ति भी गायब हो गये। जो लोग मर गये उन्हें वसन्त ऋतु के आने तक दफनाया भी न जा सका बल्कि शेष सर्दियाँ उन्हें बाहर बर्फ में ही पड़े रहने दिया गया। इस तरह अनेक लोग मर गये।

: २ :

हंस ओलसा ने घाटी के निकट अपनी भूमि में बाड़ लगा ली और पशुओं के अपने बड़े गल्ले के लिये उसे चरागाह के रूप में प्रयोग करने लगा। गर्मियों में उसे उनके लिए कुछ भी करना नहीं पड़ता था। सर्दियों में वह जितनी भी घास इकट्ठी कर सकता था कर लेता था और उसने चरागाह में ही पशुशाला भी बना ली थी। उसे विश्वास था कि वह उन्हें सर्दियों में वहाँ सुरक्षित रख सकता है। किन्तु फरवरी में उसने देखा कि सर्दियाँ आरम्भ हो गई हैं और उसे और अधिक व्यवस्था करनी होगी।

फरवरी में एक दिन इतनी तेज़ आँधी चलने लगी और इस ज़ोर की वर्फ गिरने लगी कि हंस ओलसा ने सोचा कि उसे चरागाह में देखना चाहिये कि पशु ठीक-ठाक हैं या नहीं। जब वह वहाँ पहुँचा तो उसने देखा कि उसे तो बहुत काम करना है क्योंकि आँधी से छप्पर का बहुत-सा भाग गिर गया था। उसे फिर से बल्लियों को गाड़ना था और जहाँ फूस नहीं था वहाँ फूस डालना था और फर्श पर भी और फूस डालनी थी। जब उसने काम समाप्त किया तो अंधेरा हो चुका था।

अब उसे फिर पशुओं को अन्दर ले जाना था और यह काम कठिन था क्योंकि घास के ढेरों के पास खड़े वे हवा से बचे हुए थे और वापिस पशुशाला में जाने के लिए, घास के ढेर को छोड़ना नहीं चाहते थे। हंस ओलसा को उन्हें एक-एक करके ले जाना पड़ा और इसमें बहुत समय लग गया। वर्फ उसे थपेड़े मार रही थी और आँधी उड़ा रही थी किन्तु जब तक सारे पशु पशुशाला में न पहुँच गये वह काम करता रहा। किन्तु अब घुप अंधेरा हो गया और वह परिश्रम के कारण पसीने से तर था। वह घर की ओर चल पड़ा किन्तु कुछ ही कदम चलने पर उसने अनुभव किया कि तूफान और अंधेरे में वह चल नहीं सकता।

साथ ही उसे अब सर्दी के कारण सारे शरीर में दर्द अनुभव होने लगा जिससे वह चल न सका। उसने सोचा कि उसे जाने की बजाय रात भर पशुओं के पास लेट कर अपने आपको गर्म रखना चाहिए और फिर प्रभात होने पर घर चले जाना चाहिए। वह दो पशुओं के बीच लेट गया जहाँ उसे गर्मी अनुभव हुई और वह तुरन्त सो गया।

किन्तु पशुशाला की प्रत्येक दरार में से आँधी और बर्फ आ रही थी। थोड़ी ही देर बाद वह चौंककर उठ बैठा। वह बड़ी कठिनाई से उठा और उसके उठते ही उस पर जमी हुई बर्फ का भारी

बोझ फर्श पर गिर पड़ा । उसके पाँव सर्वथा सुन्न हो गए थे । उसने यथासम्भव चलने का प्रयत्न किया किन्तु कभी सोये हुए पशुओं से ठोकर खा जाता और कभी आँधी के थपेड़ों से गिर पड़ता । उसका एक हाथ भी चेतनाहीन हो गया था । किन्तु वह जानता था कि ऐसी हालत में क्या करना चाहिए अतः वह बार-बार हाथ पर बर्फ रखने लगा और आखिर उसमें चेतना आ गई ।

फिर उसने पैरों को ठीक करना आरम्भ किया । पहले उसने बूट काटकर उतार फेंके, फिर जुर्राबें उतारीं और नंगे पाँव भरसक तेज़ी से चक्कर काटने लगा और फिर पाँव को बर्फ से रगड़ने के लिये बैठ गया । फिर उसने जुर्राबें और बूट पहन लिये और पशुशाला में पड़ी एक रस्सी से उन्हें बाँध लिया । अब वह समझ गया था कि वह रात भर यहाँ नहीं ठहर सकता अतः उसे घर जाने का प्रयत्न करना था और जब वह अंधेरे में निकल पड़ा तो उसने सोचा—"यहाँ ठहरना और बाहर बर्फ में जमना एक बराबर ही तो है ।"

उस रात का आघात उसके लिये मृत्यु के आघात के समान था । जब वह सुबह-सवेरे अपने घर के दरवाजे पर जाकर गिरा तो वह अपने कपड़े भी स्वयं न उतार सका । सोरीना सारी रात बैठी रही थी और उसे विश्वास हो चला था कि अब वह कभी हंस ओलसा को नहीं देख सकेगी । अभी तक उसने खिड़की में बत्ती जला रखी थी कि शायद वह लौट आये ।

ज्यों ही हंस ओलसा घर में पहुँचा सोरीना ने उसकी देखभाल शुरू कर दी । हंस ओलसा ने काली मिर्च मिले गर्म दूध के कई प्याले पिये और फिर सभी कम्बल ओढ़ कर बिस्तर पर लेट गया । फिर भी वह इतने ज़ोर से काँप रहा था कि बिस्तर भी उसके साथ हिल रहा था और वह निरन्तर खाँस रहा था । ऐसा लगता था कि वह खुश्क खाँसी उसके गले को ही फाड़ देगी । दो दिन और दो रात सोरीना उसके पास बैठी रही और वह कुछ स्वस्थ दिखाई देने लगा ।

आखिर तूफान कुछ रुका और सोफी अपनी स्किस* द्वारा परहंसा को यह समाचार देने गई। परहंसा उसी के साथ चला आया। सोरीना बहुत थकी और घबराई हुई दिखाई दे रही थी किन्तु ज्यों ही उसने परहंसा को देखा उसकी घबराहट दूर हो गई और वह परहंसा को हंस ओलसा के बिस्तर के पास ले गई। अभी हंस ओलसा की हालत अच्छी दिखाई नहीं देती थी।

बस्ती के आइरिश लोगों के घरों के पास एक छोटी-सी झोंपड़ी में एक बुढ़िया रहती थी और जब कोई भी बीमार होता था उसे ही बुलाया जाता था। वह विचित्र ढंग से रोगियों को स्वस्थ कर देती थी। ज्योंही परहंसा ने देखा कि उसका मित्र बीमार है उसने तुरन्त रोगी की देखभाल के लिए उस बुढ़िया को बुला भेजा।

बुढ़िया ने विशेष गर्म पट्टियाँ बनायीं और सोरीना को उन्हें बनाने का ढंग बताया। उसने कहा कि इन पट्टियों को बारह घंटे कम्बलों से ढक कर रखना होगा। फिर उसने उन पर क्रास का निशान बना दिया और किसी अपरिचित भाषा में कुछ मंत्र फूंक दिये। उसने उन्हें बताया कि वे उस क्रास के चिह्न का विशेष ध्यान रखें। तब वह यह कह कर चली गई कि वह शीघ्र ही लौट आएगी। परहंसा ने अपने काम के साथ-साथ हंस ओलसा का भी काम किया। उसने बैरेट को बताया कि हंस ओलसा पर क्या बीती है और बैरेट सोरीना के पास रहने के लिए चली गई। जब से बैरेट स्वस्थ हुई थी वह बहुत धार्मिक हो गई थी और वह रोगी के सिरहाने बैठी भजन गाती रहती थी तथा उसे गर्म रखने का ध्यान रखती थी। तब टानसेटन उनसे मिलने आया और उसने बस्ती भर की घटनाओं को अधिकाधिक उल्लासपूर्ण ढंग में बताकर हंस ओलसा को प्रसन्न करने का प्रयत्न किया। क्योंकि बैरेट बहुत धार्मिक विचारों की हो गई थी अतः उसकी टानसेटन से बिल्कुल नहीं निभती थी और जब

*बर्फ पर चलने के लिए लकड़ी के जूते।

भी टानसेटन अन्दर आता था वह भजन गाना बन्द कर देती थी।

जब आखिर टानसेटन चला गया तो बैरेट को कमरे की हवा गन्दी प्रतीत हुई। उसे यह बात स्पष्ट हो गई कि स्वच्छ जीवन पर किस तरह पाप छा जाता है। यहाँ एक व्यक्ति मरणासन्न पड़ा है और टानसेटन है कि उसे गन्दी और विचित्र प्रकार की कहानियाँ सूझ रही हैं। उसने अनुभव किया कि टानसेटन द्वारा दूषित किए गए वातावरण को शुद्ध करने के लिए कुछ करना चाहिए अतः उसने बड़ी कोमल और धीमी आवाज में एक और भजन गाना आरम्भ कर दिया।

वह रात भर बिस्तर के पास बैठी रोगी की देखरेख करती रही। बीमार थोड़ी देर के लिए सो गया किन्तु फिर जाग पड़ा और उसे खांसते-खांसते खून आ गया। बैरेट ने सोचा कि उसे हंस ओलसा से बहुत महत्त्वपूर्ण बातें करनी हैं और वह प्रातः उसके जागने तक उसकी प्रतीक्षा करती रही। तब उसने कहा—"तुम्हें अवश्य तैयार हो जाना चाहिए हंस ओलसा। तुम इस रोग को अधिक दिन सहन न कर सकोगे।"

वह बेचैन हो गया और उसने बैरेट की बात को टालने का प्रयत्न करते हुए कहा—"अनेक लोगों की खांसी दूर हो जाती है।"

"नहीं, तुम्हारे दिन पूरे हो गए हैं।" हंस ओलसा ने फिर आँखें बन्द कर लीं और बिना हिले-जुले लेटा रहा। बैरेट ने सोचा —"मैंने जो कहा है उसे पसन्द नहीं आया, किन्तु मुझे प्रसन्नता है कि मैंने उसे यह बात कह दी क्योंकि वह अब उठ नहीं सकेगा।"

थोड़ी देर पश्चात् हंस ओलसा ने कहा—"भगवान् ने तो अनेक पापियों पर पहले भी दया की है। मैं समझता हूँ कि थोड़ी-सी दया मुझ पर भी करेगा।"

अकस्मात् बैरेट की आत्मा सजग हो गई—"यदि तुम पश्चाताप करो तो भगवान् तुम्हें क्षमा कर देंगे।"

अब हंस ओलसा निरन्तर खाँसने लगा था। फिर वह लेट गया और उसे नींद आ गई। बैरेट ने सेंकने का कपड़ा बदल दिया और बैठी हुई उसे देखती रही और सोचती रही—"हम एक-दूसरे को क्या कह बैठे हैं। डकाटा प्रदेश में कितने कम लोग हैं जो स्वर्ग के अधिकारी हो सकेंगे। हंस ओलसा से स्वर्ग में न मिलना कितना विचित्र लगेगा। उसके माता तथा पिता वहाँ इसकी प्रतीक्षा कर रहे होंगे। मुझे उन से मिलकर बताना होगा कि यहाँ क्या घटनायें घटीं और क्यों हंस ओलसा कभी स्वर्ग नहीं पहुँच सकेगा। ओह बुराई की शक्ति अधिक होती है। मैं अपने घर में ही देखती हूँ। यहाँ यह मृत्युशैया पर पड़ा है और टानसेटन न जाने किस आनन्द की बातें उससे कहना चाहता है।

उसने आग में और लकड़ी लगा दी। अब हंस ओलसा जागा और उसने बैरेट से कहा—"बाहर मौसम कैसा है? क्या हम डाक्टर को बुला सकते हैं?"

"क्या, डाक्टर? दिन निकल आये तो देखेंगे। किन्तु हंस ओलसा, क्यों न पादरी को बुलाया जाये?"

"क्या पादरी?"

"हाँ इस समय तुम्हें उसी की सहायता की आवश्यकता है। तुम्हें भगवान् से सम्पर्क प्राप्त करना चाहिए, हंस ओलसा।"

"भगवान् का साक्षात्कार?" बीमार ने पूछा—"हाँ मैं भी यह समझता हूँ।"

"एक जीवित भगवान् के हाथों में चले जाना भी कितना भयानक है", बैरेट ने और भी अधिक उदास होकर कहा—"हमारे अन्दर सिवाय पाप के और है ही क्या। किन्तु जब भगवान् से सम्पर्क हो जाता है तो वह हमें कहता है कि हमारे पाप क्षमा कर दिये गये हैं और हमारे लिए स्वर्ग के द्वार खुल गये हैं।"

हंस ओलसा ने दीवार की ओर मुंह कर लिया और उसे जोर

की खाँसी आई। फिर उसने कहा—"मैं जीवन भर यह सोचता रहा हूँ कि अन्त में मुझे भगवान् के पाने का सौभाग्य मिल जायेगा।"

बॅरेट खुशी से चिल्लाई—"किन्तु तुम्हें उससे मिलने के लिए तैयार होना चाहिए। भगवान् को स्वर्ग में जानने से पहले उसे पृथ्वी पर जानना चाहिए। मैं तुम्हारे लिए प्रार्थना करूँगी।" वह बिस्तर के पास घुटनों के बल झुक गई और प्रार्थना करने लगी किन्तु अभी थोड़ी देर ही उसने प्रार्थना की थी कि और पड़ौसी उसे बुलाने आ गया। उसकी पत्नी के बच्चा हो रहा था और अन्य कोई नहीं था जिसे वह बुला सकता। बॅरेट को ऐसा प्रतीत हुआ कि यह शैतान का ही काम है जो उसे एक पश्चाताप करने वाले पापी से परे ले जा रहा है, किन्तु उसे जाना पड़ा।

उस मौसम में भी एक पड़ौसी ने दूसरे की सहायता की और हंस ओलसा का सारा काम हो गया। हंस ओलसा की अपनी स्थिति अधिक गम्भीर होती जा रही थी और खाँसी बढ़ गई थी। उसके मस्तिष्क को भी चैन नहीं था और उसने परहंसा से रात वहीं रहने के लिये कह दिया।

जब सोरीना सो गई, तो हंस ओलसा अपने परम मित्र से बातें करने लगा कि उसके सिधार जाने के पश्चात् क्या कुछ करना होगा। उसे कुछ पैसे देने हैं, किसी से कुछ लेना है। खेत के बारे में उसने कहा कि एक अच्छा प्रबन्धक रखा जा सकता है और सोरीना बच्चों के पास रहा करे। वह बीच-बीच में खाँस लेता था, आखिर उसने सारी बात कह दी।

किन्तु वह फिर बातें करने लगा और वर्फ तथा मौसम के बारे में पूछने लगा। परहंसा ने उसे बताया कि बाहर मौसम बहुत ही खराब है। कहीं भी जाना सम्भव नहीं है। जब हंस ओलसा ने यह सुना तो उसका चेहरा पीला पड़ गया और माथे पर पसीने की मोटी मोटी बूंदें आ गईं।

"तुम्हें क्या चाहिए ?" परहंसा ने पूछा।

"तो फिर पादरी के बुलाने के लिए जाना सम्भव नहीं ?"

"क्या तुम अनुभव करते हो कि उसे आना चाहिए ?"

"हाँ जीवित भगवान् के हाथों में जाना कितना भयावह विचार है ···· कितना भयावह······।" वह फिर खाँसने लगा और इतना खाँसता रहा कि परहंसा भी समझ गया कि उसका अन्त आ गया है। किन्तु उसकी खाँसी रुकी और वह तुरन्त सो गया और उसकी नींद अगले दिन प्रातः खुली। हंस ओलसा ने उसकी ओर देखा और फिर धीमी आवाज़ में कहा—"क्या अब भी कहीं जाना सम्भव नहीं ?"

"अब, अब" परहंसा ने कहा—"यह बात सोचो भी नहीं बल्कि अधिक सोओ और तुम ठीक हो जाओगे। मैं अभी थोड़ी देर में आऊँगा।"

हंस ओलसा ने ऐसा भाव प्रकट किया जैसे उसने सुना नहीं— "क्या तुम समझते हो कि यह नहीं हो सकता ?"

परहंसा जानता था कि अपने मित्र से क्या कहे—"तुम चित को शान्त करो। मैं देखूँगा कि इस सम्बन्ध में क्या किया जा सकता है······समझे ?"

"ओह परहंसा तुम्हारे समान बस तुम ही हुए हो।"

जब परहंसा घर लौटा तो थक कर चूर हो चुका था। बैरेट उसे खाना देने के लिए प्रतीक्षा कर रही थी। यद्यपि वह स्वस्थ हो गई थी किन्तु परहंसा अब भी उसे बच्चे जैसा ही समझता था। उसके लिये बैरेट के धार्मिक विचार भी बचपने के ही थे, किन्तु वह उससे कहता कुछ नहीं था क्योंकि कोई व्यक्ति छोटे बच्चे के साथ कैसे तर्क कर सकता है। किन्तु वे विचार उसे तंग अवश्य करते थे विशेषतः जब वह उसके लिये प्रार्थना करती थी तो उसे लगता था कि वह संसार का सबसे बड़ा पापी है, किन्तु उसने कभी कुछ कहा नहीं और

वे आपस में इतने खुले नहीं थे जितने कि कभी थे। अतः परहंसा ने खाना खाते हुए उसे जल्दी में बता दिया कि स्थिति कितनी बुरी है।

जब उसने भोजन कर लिया तो वह खिड़की के पास जाकर बाहर झाँकने लगा। "वह तो बार-बार यही कहता है कि पादरी को बुला दो। मेरी समझ में नहीं आता······।"

बैरेट प्रसन्नता भरे स्वर में बोली—"पर मेरी समझ में तो आता है। किसी न किसी को तुरन्त पादरी को बुला लाना चाहिए। तुम किसी को साथ ले जाओ। क्या तुम घोड़े पर जा सकते हो?"

"घोड़े पर······इस मौसम में?"

"किन्तु यदि कोई बचा सकता है तो हंस ओलसा को नरक में नहीं जाने देना चाहिए।"

"अच्छा" परहंसा ने कहा—"यदि वह नरक में ही जा रहा है तो मैं तुम्हें बता दूं उसे यहाँ के बहुत से साथी वहाँ मिल जायेंगे।"

बैरेट को ऐसा लगा कि इससे अधिक बुरी बात उसने कभी नहीं सुनी—"तुम नहीं समझ सकते कि कैसे कोई व्यक्ति स्वर्ग के बारे में सोचता है, क्या समझ सकते हो?"

"ओह, मैं तो कुछ भी नहीं समझ सकता"—परहंसा बोला—"मेरी समझ में यह भी नहीं आता कि कैसे एक आदमी ऐसे मौसम में मैदान को पार करके जेम्स नदी तक जा सकता है और फिर जीवित रह सकता है। हंस ओलसा तो इतना अच्छा है कि भगवान् उसे बिना पादरी की प्रार्थना के भी स्वीकार कर लेगा, यह मुझे विश्वास है।"

"तुम शैतान के बन्धन में हो" वह चिल्लाई।

"चुप रहो। क्या तुम मुझे मौत के मुंह में भेजना चाहती हो?"

"प्रयत्न तो किया जा सकता है, क्या नहीं? किसी को साथ

ले जाओ····· हैनरी अपनी स्लेज के साथ चला जाये। तुम यदि जा न सको तो लौट आना·· किन्तु तुम प्रयत्न अवश्य करो। यदि तुम प्रयत्न में असफल हो गये तो भगवान् तुम्हें क्षमा कर देंगे।"

इस पर परहंसा को इतना क्रोध आया कि वह कोई उत्तर न दे सका। वह सोच रहा था कि "अपने परिवार का जीवन-स्तर ऊँचा करने के लिए मैं निरन्तर कठिन श्रम करता रहता हूँ और फिर भी मुझे कहा जाता है कि मैं पापी हूँ और मेरी समझ में कुछ नहीं आता।" किन्तु फिर काम करते हुए और लड़कों से बातें करते हुए उसका उद्विग्न मन शान्त हो गया।

जब सोरीना अपनी स्किस पर परहंसा को यह कहने आई कि उसके मित्र ने उसे बुलाया है तो वह बिल्कुल थक चुका था। सोरीना भी चाहती थी कि वह जाये किन्तु पादरी की बजाय किसी डाक्टर को बुला कर लाये। हर कोई यही सोचता था कि परहंसा कुछ कर सकता है। किन्तु उसे विश्वास था कि यदि वह इस मौसम में बाहर गया तो एक नहीं बल्कि दो व्यक्तियों की मृत्यु होगी।

रात्रि के भोजन के समय उसने तथा बैरेट ने परस्पर कोई बात न की। भोजन कर लेने के बाद परहंसा नन्हें परमंड से खेलने लगा। बैरेट की समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करे। उसने अपना कोट पहना और अपनी स्किस लेने के लिए जाते हुए बोली—"किसी को तो यहाँ पुरुष की तरह काम करना होगा।" परहंसा को इतना क्रोध आया जैसे उसे पीट ही डालेगा। उसने तुरन्त कपड़े पहने और इससे पहले कि बैरेट को पता लगे वह बाहर चला गया।

परहंसा सीधा वहाँ नये बसने वाले लोगों के घर गया जो बहुत बढ़िया स्किस बनाते थे। और उसने अपनी लम्बी यात्रा के लिए उनसे दो स्किस उधार लीं। जब वह घर वापस आया तो उसने लड़कों से कहा कि वह लम्बी यात्रा पर जा रहा है और पता नहीं

कि कब लौटेगा। फिर पूछा—"क्या तुम सब काम सम्भाल लोगे ?" उन्होंने विश्वास दिलाया कि वे सम्भाल लेंगे।

बैरेट ने उसे खिड़की में से देखा था। उसने उसके लिए काफी तैयारी की ताकि जाने से पूर्व शरीर को कुछ गर्मी मिल जाये। वह उसे दिखाना चाहती थी कि उसने जो कुछ भी कहा था उसके लिए वह क्रुद्ध नहीं है। उसने परमंड से कहा कि वह बाहर जाकर पिता से कह दे कि कहवा तैयार है।

जब नन्हा बालक बाहर आया तो परहंसा क्षण भर उससे खेला और फिर उसे वापस गर्म घर में भेजते हुए बोला—"माँ से कहो मैं शीघ्र लौट आऊँगा।" किन्तु वह अन्दर नहीं आया। फिर वह घर की ओर मुड़ा नहीं और स्किस पहनकर तुरन्त यात्रा पर चल पड़ा।

बैरेट उसे खिड़की में से देख रही थी। सोचने लगी तो क्या वह अन्दर नहीं आ रहा। ओह वह ऐसे नहीं जा सकता। मैंने उसके लिए क्या कुछ तैयार कर रखा था। वह उसे बुलाने के लिए भागती हुई बाहर गई किन्तु वह पहले ही बहुत दूर जा चुका था। उसे आंधी का थपेड़ा लगा और आकाश से बर्फ के गाले हवा में चक्कर काटते हुए उस पर गिरे।

परहंसा का हृदय तो घर के बारे में सोच रहा था और अधिकतर नन्हें परमंड के बारे में किन्तु वह आंधी और बर्फबारी में आगे ही बढ़ता चला जा रहा था। उसे विश्वास था कि वह बालक किसी दिन महान् व्यक्ति बनेगा। अंधकार घना होने लगा। आंधी और अधिक तेज हो गई, बर्फ अधिक पड़ने लगी किन्तु वह बढ़ता ही चला गया......आगे......और आगे......ताकि फिर घर जल्दी लौट जाये।

: ३ :

उस वसन्त ऋतु में दो लड़के जेम्स नदी के निकट एक खेत में खेल रहे थे। वहाँ पहाड़ी की तलहटी में एक पुराना घास का ढेर

पड़ा हुआ था जिसे वहाँ बसने वाला एक निवासी इसलिए छोड़ गया था कि वह अच्छा नहीं था। जब लड़के घास के ढेर के निकट पहुँचे तो वे स्तम्भित रह गये। घास के ढेर की एक ओर आदमी ढेर के साथ पीठ लगाये बैठा था। यद्यपि यह मई मास का एक गर्म दिन था किन्तु उस आदमी ने ऐसे वस्त्र और लकड़ी के बूट पहने हुए थे जिनसे बर्फ पर फिसला जाता है और उसने स्किस का एक और जोड़ा पीठ से टाँग रखा था। लड़कों को ऐसा लगा मानो वह आदमी आराम कर रहा है और उन दिनों की प्रतीक्षा कर रहा है जब बर्फ पर फिसलने के खेल के लिये अच्छा मौसम होता है। उसके सर्दियों के कपड़े उसके शरीर पर खूब कसे हुए थे।

उसका चेहरा पीला और थका हुआ था और उसकी दृष्टि पश्चिम की ओर लगी हुई थी।